मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 54 | अंक : 5 | नवम्बर, 2013 | मूल्य : ₹10

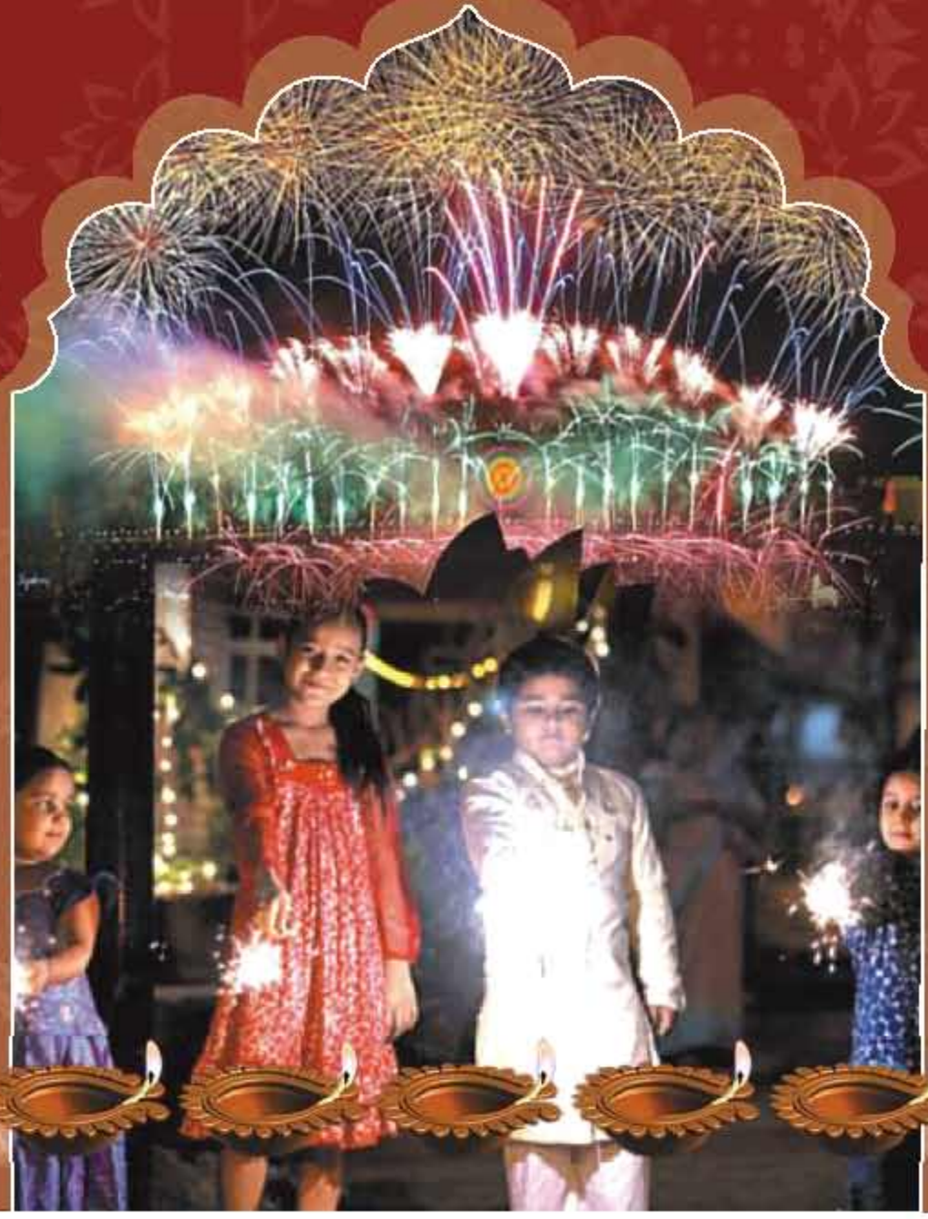

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह, 2013

दिनांक : 5 अक्टूबर, 2013 **स्थान : वेटेरनरी ऑडिटोरियम, बीकानेर**

दीप प्रज्वलन करते हुए राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर के माननीय कुलपति हनुमान प्रसाद व्यास और निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान डॉ. वीना प्रधान।

कर्मचारियों के सम्मान में प्रकाशित 'प्रशस्तियां' पुस्तिका का लोकार्पण करते हुए गरिमामय मंच।

सम्मान समारोह को सम्बोधन देते हुए मुख्य अतिथि माननीय कुलपति हनुमान प्रसाद व्यास, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर।
समारोह अध्यक्ष निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान डॉ. वीना प्रधान एवं विशिष्ट अतिथि अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान श्री पी.सी. नायर।

ऑडिटोरियम में उपस्थित शिक्षा अधिकारी, निदेशालय परिवार के सदस्य एवं सम्मानित कर्मचारीगण।

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 54 | अंक : 5 | कार्तिक–मार्ग शीर्ष २०७० | नवम्बर, 2013

प्रधान सम्पादक
डॉ. रीना प्रधान

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

सहायक
जांभ सिंह
मुकेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 60
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंकड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के नाम देय है।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर–334 011
दूरभाष : 0151–2529875
फैक्स : 0151–2201881
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –वरिष्ठ संपादक

इस अंक में

दिशाकल्प
- संकल्प शत-प्रतिशत मतदान का — 5
  आलेख
- अनुशासन की महिमा — 14
  संग्रामसिंह सोढ़ा
- ज्ञान के आगार हैं पुस्तकालय — 16
  राजेन्द्र जोशी
- मंजिल पाना मुश्किल नहीं — 18
  रीना राठौड़
- पुस्तकों की आवश्यकता — 19
  अतुल चतुर्वेदी
- दुखी उत्तम परीक्षा परिणाम के — 20
  राजेन्द्र श्रीपत पुरोहित
- विद्यालय और संस्था प्रधान — 22
  विनोद कुमार शर्मा
- शिक्षकत्व शिष्य के प्रति समर्पण में है — 29
  पी.डी. सिंह
- सफल जीवन के सात सरल नियम — 32
  ब्रिगेडियर करणसिंह चौहान
- चलो कुछ कर दिखायें रॉकिंग कैम्पेन को सफल बनायें / सम्पत लाल शर्मा 'सागर' — 35
- महिला शिक्षा के प्रति सोच — 36
  मदन लाल मीणा
- जिलोरायबा में बढ़ता साइबरटीव:एक चुनौती — 41
  सुभाष चन्द्र कस्वां
- शिक्षा में खेलों का महत्व/बैंकलाल नामा — 42
- हिन्दी वर्तनी की अशुद्धियां एवं कारण — 43
  डूंगर राम सुथार

बाल दिवस विशेष
- प्यार बच्चों पे लुटाएं तो कोई बात बने — 6
  कृष्णा कुमारी
- मेरे भगवान बालकों में हैं — 8
  महेश कुमार चतुर्वेदी
- अपने बच्चे को शिष्टता सिखाएं — 9
  रूपनारायण काबरा
- एक बच्चे की अभिलाषा — 10
- चढ़ों के पत्र बच्चों के नाम — 13
  ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस
- विद्यार्थियों के लिए भी है कानूनी अधिकार — 11
  विश्वनाथ भाटी

दीपावली विशेष
- दीपावली पर्व : अतीत से आज तक — 23
  नरेश शर्मा
- दीपक का सन्देश हमारे लिए — 24
  सत्यनारायण भटनागर

उपाध्यक्ष
- आदेश–परिपत्र — 25
- विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम — 28
- पंचांग — 29
- शाला प्रांगण से — 39
- चतुर्दिक समाचार — 48
- हमारे माननीय — 49

हमारे संस्थान
- सुनहरा अतीत रहा है सादुल स्पोर्ट्स स्कूल का — 30
  लक्ष्मीनारायण शर्मा

हमारी सांस्कृतिक धरोहर
- सांस्कृतिक वैभव एवं समृद्ध लोक संस्कृति का पर्याय : पाली जिला — 37
  भरत शर्मा 'भारत'

हम गाएं कर्मगीत
- दीपक जलाना धर्म है — 15
  गोपाल दास नीरज

उपहार
- राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह–2013 — 44
  संग्रसिंह इन्दा

पुस्तक समीक्षा — 46–47
- खुलते वातायन : पुष्पलता कश्यप
- शिक्षा का दिशाबोध : रूपनारायण काबरा
- भोर का उजास : डॉ. उषा किरण सोनी
- सुजनपथ : माधव नागदा
- शब्द साक्ष : मधु आचार्य 'आशावादी'
  समीक्षक : पृथ्वीराज रतनू

प्रतिध्वनि
- परहित सरिस धर्म नहीं भाई — 50

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355165

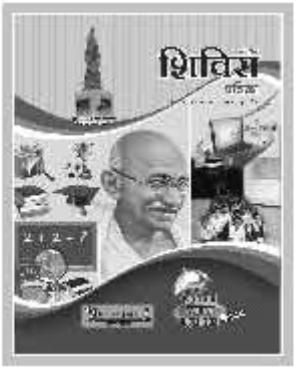

▼ **विचार**

The ballot is stronger than the bullet, Ballots are the rightful and peaceful successors to bullets.

-Abraham Lincoln

अनुवाद :

बुलेट (गोली) से बैलेट (मतपत्र) अधिक शक्तिशाली है। मतपत्र गोलियों के उचित और शांतिपूर्ण उत्तराधिकारी हैं।

-अब्राहम लिंकन

पाठकों की बात

मैं शिविरा पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। मुझे जब भी या जिस महीने की शिविरा प्राप्त नहीं हो पाती मैं किसी अन्य पाठक की शिविरा लेकर पढ़े बिना नहीं रहता। शिविरा शिक्षा जगत के लिए एक प्रेरणादायक परिष्कृत एवं सभी आवश्यक विभागीय रचनाओं विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र का लेखा जोखा है। –मदन लाल मीणा

अध्यापक, रा.उ.मा.वि., मेघवालों की ढाणी राजबेरा, तह. शिव, (बाड़मेर)

शिविरा का माह सितम्बर 2013 का अंक प्राप्त हुआ। निदेशक महोदया ने दिशाकल्प के माध्यम से शिक्षकों को शुभकामनाओं के साथ उन्हें चिंतन का संदेश भी दिया है। शिक्षक एक गरिमामय पद है। उसका कार्य सुशिक्षित नागरिक एवं संस्कारवान समाज और राष्ट्र की संरचना करना है। समाज और राष्ट्र ने एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी सौंपी है। अपने नौनिहालों का भविष्य शिक्षक के हाथों में दिया है। शिक्षक का दायित्व है कि वह इसे निष्ठा के साथ लें। पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक अपने कर्तव्य को पूर्ण कर्मठता के साथ निभावेंगे। –महेन्द्र कुमार शर्मा

प्रधानाचार्य,रा.उ.मा.वि. बाघसूरी (अजमेर)

शिविरा पत्रिका अक्टूबर, 2013 का अंक 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विशेषांक' के रूप में मिला। इससे पूर्व 'स्वाध्याय विशेषांक' एवं 'छात्रवृत्ति विशेषांक' अल्प समय में प्रकाशित कर कीर्तिमान कायम किया है। तीनों ही अंक संग्रहणीय है। शिविरा का हर अंक नए कलेवर के साथ नई चिंतनपरक वैचारिक सामग्री के साथ मिलता है। अंक का बेसब्री से इंतजार रहता है। अंक मिलते ही आद्योपांत पढ़ने का मोह छूटता नहीं। इस अंक में 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन' की व्यापक जानकारी मिली। बधाई! नए विशेषांक की जानकारी पूर्व में मिले तो अच्छा रहेगा। नया स्तम्भ 'शाला प्रांगण से' प्रारम्भ कर विद्यालयों की नई एवं अनुकरणीय गतिविधियों को सब तक पहुंचाने का सार्थक प्रयास भी मील का पत्थर साबित होगा। शिविरा पत्रिका नित नए आयाम एवं प्रगति की ओर बढ़े, यही शुभकामना है। –सुनील कुमार बम्बोरिया

व.अ., रा.मा.वि., सेमरवली (छोटी सादड़ी)

शिविरा पत्रिका अक्टूबर 2013 का 'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विशेषांक' व गाँधी जीवन दर्शन को समर्पित अंक मुखपृष्ठ की सुन्दरता व रंगों के संयोजन ने इसे बहुत ही आकर्षक व नयनाभिराम बना दिया। लेखकों के मानदेय की ऑनलाइन व्यवस्था व नए स्तम्भ के रूप में शाला प्रांगण से व आदेश परिपत्र में शिक्षा जगत के ई-मेल के पते का प्रकाशन व राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर के मधुरिमा का विवरण शिक्षा जगत को सशक्त बनाने वाला नवाचार प्रशंसनीय लगा। 'हौंसले टूटे नहीं' कविता में उत्कर्ष भावों की अभिव्यक्ति व ऊँचाई का व शब्द शिल्प सुन्दर लगा।

भवानी शंकर जी व्यास का आलेख 'महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन' और समाजबोध भाषा की शिल्पगत बुनावट व गहन बौद्धिक विचारों से लबरेज आलेख पठनीय लगा, महान व्यक्तित्व के धनी शास्त्री की जयंती पर पत्रिका में केवल एक छोटी कथा गागर में सागर भरती के माध्यम से जयंती पर याद करना अच्छा था पर इनके व्यक्तित्व के अनुरूप पत्रिका में स्थान नहीं मिलना अच्छा नहीं लगा। राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह 2013 में महामहिम श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा, राज्यपाल राजस्थान द्वारा दिया गया उद्बोधन प्रेरक लगा। सीसीई के सुदृढ़ीकरण में ईसीई की भूमिका में अनिल कुमार शर्मा के विचार तथा बच्चों ने कलक्टर का मन मोहा-आँखन देखी रिपोर्ट भी पठनीय थी। –सरदार सिंह चारण

रेल्वे स्टेशन कॉलोनी, जालोर

शिविरा अक्टूबर,13 का अंक का मुख पृष्ठ महात्मा गाँधी का हँसमुख चित्र एवं अंतिम पृष्ठ पर हमारी सांस्कृतिक धरोहर उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर बहुत आकर्षक एवं मनमोहक लगे। 'कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय में सीसीई' श्री चेतन कुमार पालीवाल का लेख बालिका विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है, सराहनीय है। डॉ. जमनालाल बामती का लेख अन्तर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस में लघुकथा में वृद्ध की सेवा आदर अनुकरणीय है। हम होंगे कामयाब तथा लोकराज आया है मेरे देश में बहुत अच्छी है। यह अंक पठनीय, ज्ञानवर्धक व सराहनीय अंक है। –मानसिंह कस्वां

प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. हरदिया (झुंझुनूं)

दिशाकल्प

संकल्प शत-प्रतिशत मतदान का

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

राजस्थान विधानसभा के चुनाव आगामी एक दिसम्बर 2013 को होने जा रहे हैं। प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में चुनावों का महत्वपूर्ण स्थान है। चुनावों में मतदान के जरिए मतदाता अपने प्रतिनिधि विधायकों का चुनाव करते हैं जिनके माध्यम से समग्र विधानसभा एवं मंत्रिमंडल का गठन होता है। इस प्रकार मतदाताओं की भूमिका से प्रारम्भ हुई प्रक्रिया की परिणति राज्य की शीर्ष शासन व्यवस्था के रूप में होती है जो आगामी 5 वर्षों तक राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का नियमन एवं नियन्त्रण करती है। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया में मत का महत्व सर्वोपरि होता है।

प्रजातांत्रिक व्यवस्था में मतदाताओं का कर्त्तव्य बनता है कि मत का महत्व समझ कर वे मतदान अवश्य करें। राजस्थान में 200 विधानसभा क्षेत्र हैं। इस प्रकार पहली दिसम्बर, 2013 को दो सौ विधानसभा सदस्यों का चुनाव करने का शुभ अवसर वयस्क मतदाताओं को मिल रहा है। प्रजातंत्र में चुनाव किसी तीर्थ से कम नहीं होते। अतः हमें मतदान करके लोकतंत्र रूपी तीर्थाटन का लाभ ग्रहण करना चाहिए। चुनाव राज्य व राष्ट्र का भविष्य लिखने वाले होते हैं। आइये, हम शत-प्रतिशत मतदान करके अपने मतदाता कर्त्तव्य को पूरा करते हुए लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत बनाएं।

मुझे खुशी है कि राजस्थान भारत स्काउट गाइड की गाइड विंग के तत्वावधान में मतदाता जागरूकता के लिए चलाई जा रही मुहिम में हमारे विभाग की संस्थाएँ- शिक्षक एवं शिक्षार्थी उत्साहपूर्वक सहयोग प्रदान कर रहे हैं। तहसील एवं जिला स्तर पर निकाली गई मतदाता जागरूकता रैलियों ने मतदान के लिए अद्भुत संदेश दिया है खासकर महिला मतदाताओं को। राजस्थान भारत स्काउट गाइड की इस मुहिम तथा विभाग की सक्रिय सहभागिता के लिए मैं दोनों को साधुवाद देती हूँ। मुझे विश्वास है कि उत्साह एवं अवदान की यह धारा चुनावों तक यों ही सतत प्रवाहित रहेगी जो अन्ततः अधिकाधिक मतदान का आधार बनेगी।

मेरी संस्था प्रधानों एवं गुरुजन से अपील है कि वे प्रार्थनासभा सहित विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों को मतदान का महत्व समझाकर उनके माध्यम से मतदान का संदेश गाँव-गाँव और ढाणी-ढाणी में बैठे एक-एक मतदाता तक पहुंचा कर पुण्य के भागी बनें। यह हमारा नागरिक कर्त्तव्य भी है।

इस माह में बाल दिवस है। बाल दिवस यानी बच्चों का दिवस। बच्चे राष्ट्र की अनमोल निधि होते हैं जिन को शिक्षित-दीक्षित कर सुयोग्य नागरिक बनाने का उत्तरदायित्व शिक्षकों का है। बच्चे कच्ची गीली मिट्टी के समान होते हैं। जैसे एक कुशल कुम्भकार गीली मिट्टी को आत्मीय सम्बलन देकर उससे सुन्दर बर्तन बना लेता है, ऐसे ही आदर्श गुरुजन छोटे-छोटे बच्चों को आत्मीय सम्बलन देकर उत्तम नागरिक बना लेते हैं जो भविष्य में राष्ट्र व समाज की अनमोल धरोहर सिद्ध होते हैं। इस माह में झिलमिलाते दीपों का उत्सव दीपावली भी है। दीपावली का त्यौहार आपके जीवन में खुशियां एवं उमंग का संचार करे। हमारे समाज में शिक्षा के दीप जलें और वे दीप निरक्षरता का तिमिर हर कर शिक्षा व साक्षरता का पथ प्रशस्त करें, यही कामना है।

आइये, आगामी विधानसभा चुनाव में स्वयं मतदान करने तथा अन्य को मतदान के लिए प्रेरित करने का संकल्प लेकर उन्नत राजस्थान के स्वप्न को साकार करें।

(डॉ. वीना प्रधान)

> "प्रजातंत्र में चुनाव किसी तीर्थ से कम नहीं होते। अतः हमें मतदान करके लोकतंत्र रूपी तीर्थाटन का लाभ ग्रहण करना चाहिए। चुनाव राज्य व राष्ट्र का भविष्य लिखने वाले होते हैं। आइये, हम शत-प्रतिशत मतदान करके अपने मतदाता कर्त्तव्य को पूरा करते हुए लोकतंत्र की बुनियाद को मजबूत बनाएं।"

बाल दिवस विशेष

प्यार बच्चों पे लुटाएं तो कोई बात बने

❒ कृष्णा कुमारी

पुरस्कार, शाबासी, प्रशंसा आदि का प्रयोग मनुष्य को उत्साहित करके, प्रेरित करने के लिये किया जाता है, वहीं दण्ड एवं सजा का प्रावधान व्यक्ति में सुधार लाने हेतु होता है। इन दोनों बातों में थोड़ा-बहुत साम्य होते हुए भी बहुत कुछ भिन्नता है। पुरस्कार, प्रशंसा, जहां सकारात्मक ऊर्जा से सराबोर है, वहीं दण्ड एवं सजा नकारात्मकता को उत्पन्न करते हैं। ध्यातव्य है कि नेगेटिव एनर्जी से कभी पॉजिटिव एनर्जी निर्मित नहीं होती है।

हमारे पास दोनों रास्ते होते हैं। मगर हम इनमें से नेगेटिव शब्दों का प्रयोग ही अधिक करते हैं, कम से कम बच्चों के मामले में तो। स्कूल हो या घर, बात-बात पर उन्हें सजा देना, डांटना, कोसना आम बात है। माता-पिता, शिक्षक या अन्य बड़े लोग बालकों को डराते-धमकाते ही नजर आते हैं। उनका मत है कि 'लातों के भूत बातों से नहीं मानते', या 'डर के मारे तो भूत भी भागते हैं' अथवा 'क्या करें? बच्चों को सही रास्ते पर लाने के लिए ये सब करना जरूरी है, वर्ना बच्चे बिगड़ जाएंगे। वाह! क्या खूब... क्या कहूं आगे...। मार से भूत भागते हैं या नहीं, ये तो किसी ने शायद ही देखा हो, मगर प्यार से बालक पास आते हैं एवं हर बात मान लेते हैं, यह मैंने खूब देखा है और रोजाना देखती हूँ।

''कहो प्यार से पास बैठा के 'कमसिन'
तुम्हारी वो हर बात को मान लेंगे''

आखिर बच्चे तो बच्चे की तरह ही रहेंगे, बड़े लोग जरा अपने गिरहबान में झांक कर देखें यानी अपने बचपन को याद करके देखें कि उन्होंने क्या-क्या गुल नहीं खिलाए थे। क्या उन्होंने शरारतें नहीं की थी? छोटी-छोटी मासूम चोरियां नहीं की? पढ़ाई से जी नहीं चुराया, आदेश की अनुपालना में कोताही नहीं बरती? और भी छुप-छुप कर क्या कुछ नहीं किया? जबकि आज देखा जाए तो बच्चों का बचपन तो टी.वी., इन्टररनेट, बस्ते के बोझ, होम-वर्क, आधुनिक जीवनशैली, खेल से दूरी, सह-शैक्षिक क्रियाओं की इतिश्री आदि ने छीन ही लिया है। बच्चों में तो बचपना, मासूमियत अब रही ही कहां है, जिस पर कुर्बान हुआ जा सकता है। शरारतें भी कम ही बची हैं। जो थोड़ी-बहुत बची हैं, उन्हें भी तो हम छीनते जा रहे हैं।

घर हो या स्कूल, बच्चों से बार-बार यही कहा जाता है, 'तुम किसी काम के नहीं हो, तुम निरे गधे हो, तुम्हारे दिमाग में भूसा या गोबर भरा हुआ है, तुम्हारा कुछ नहीं हो सकता, तुम पढ़ नहीं सकते, तुम किसी काम के नहीं हो, आदि-आदि।' अब यदि बालक को रात-दिन ऐसे ही नेगेटिव ऊर्जा मिलेगी तो...? बच्चा इससे कुण्ठित होगा और धीरे-धीरे बाल-अपराधी भी बन सकता है। यह सब करके आखिर हम बालक से चाहते क्या हैं?

बच्चा झूठ बोलता है, क्योंकि वह बड़ों से डरता है। वह बहाने भी बनाता है। यदि वह स्कूल या घर में सच बोलता है तो उसकी बात पर यकीन नहीं किया जाता है। आखिर बच्चा करे भी तो क्या? सजा, दण्ड उसे और ढीठ बना देते हैं। उसका कोमल मन आहत होकर रह जाता है। वैसे भी बड़े होने का अर्थ यह तो नहीं कि हम बच्चों पर अत्याचार करें, बेरहमी से उन्हें पीटे या कठोर दण्ड दें, आखिर यह हक हमें किसने दिया है। बड़े होने का अर्थ तो विनम्रता है, क्षमाशीलता है। महाकवि तुलसीदास ने लिखा है, 'क्षमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात', लेकिन बड़ों का अहंकार उन्हें ऐसा करने नहीं देता। बालक उनकी बात नहीं मानें तो वे तिलमिला उठते हैं। आखिर वे बड़े हैं, बच्चे की हिम्मत कैसे हुई कि उनकी बात की अवहेलना कर दी। ये बातें सब जानते हैं, मगर मानते कम ही हैं। अक्सर बड़े लोग अपनी बुद्धि, ज्ञान, विद्वता, अनुभव आदि से बच्चों को तौलना चाहते हैं, जो बच्चों के साथ सरासर अन्याय है। जब स्कूल में छात्रों को सबके सामने दण्ड दिया जाता है तो उसके मन पर क्या गुजरती होगी? वह कितना अपमानित महसूस करता होगा? कभी सोचा है बड़ों ने...? उनकी जगह वे स्वयं को रख कर देखें और फिर दण्ड से, भय से हम बच्चों को कुछ समय के लिए अपनी बात मानने को बाध्य कर सकते हैं, स्थाई रूप से नहीं। यही नहीं जब आपके बच्चों को इसी प्रकार स्कूल में शिक्षकों द्वारा दण्ड दिया जाता है तब आपको कितना दर्द होता है? कितनी गालियां देते हैं आप शिक्षकों को? तो फिर जैसा व्यवहार हम नहीं चाहते वैसा औरों के साथ क्यों? भय से प्रीत नहीं होती, प्रीत प्रीत से ही होगी। घर में, स्कूल में बालक को तनावयुक्त, भय युक्त वातावरण मिलता है तो उससे बचने के लिए वे अलग रास्ते ढूंढ़ते हैं, क्योंकि कोई भी उनकी बात सुनने को, उस पर विचार करने को तैयार नहीं होता है। आखिर बालक की कुछ तो परेशानी हो सकती है। कितने ही बच्चे हैं जो स्कूल तो जाते हैं, मगर वहां से बच कर इधर-उधर, कभी-कभी तो मंदिर में समय व्यतीत करके स्कूल समय के खत्म होने के वक्त घर लौट आते हैं। इस सबके जिम्मेवार कौन हैं? माता-पिता, शिक्षक...?

'घर ही लौटा न पहुंचा शाला में
बच्चा पिटने से डर गया होगा'

हम ने तो बालक को मात्र परीक्षा में अधिक अंक लाने की मशीन बना कर रख दिया है। एक दिन होम-वर्क नहीं करे तो घर में तूफान खड़ा हो जाता है। स्कूल में मेज पर खड़ा कर दिया जाता है। **मत भूलिए, बालक, बालक है, कोई मशीन नहीं। और ये भी सोचिए कि मशीन भी कभी-कभार आदेश के मुताबिक कार्य सम्पन्न नहीं करती है।**

दिनांक 1 मार्च 2012 की ही एक सत्य घटना आप को बताती हूँ। मेरी कक्षा की एक छात्रा दो महीने से स्कूल नहीं आ रही थी। मैंने अन्य बच्चों से कह कर, उसे व उस की माँ को बुलवाया। माँ ने भी शिकायतों के अम्बार लगा दिए। मैंने समझाया, मगर बात नहीं बनी।

छात्रा कल आने का बहाना कर के चली गई। फिर 2-4 दिनों के बाद बुलवाया तब भी नहीं आई, उसने कहलवाया कि 'मेडम को ही

मेरे पास भेज दो'। फिर 2-4 दिनों के बाद मैंने यह कह कर बुलवाया कि केवल वह मुझ से मिलने आ जाए, पढ़ने नहीं। आज उसके पिता उसे लेकर आए। छात्रा रो रही थी। शायद घर पर उसे डांटा या पीटा गया था। आज भी वो ही बात कि आज मैं नहीं रुकूंगी। कल स्कूल आ जाऊंगी। मैंने कहा कि पढ़ो मत, बस कुछ देर ठहर जाओ, खेल लो, लंच में खाना खाकर चली जाना। बहुत ही मुश्किल व प्रेम-प्रदर्शन के बाद वह रुकी। कुछ देर में सहज हुई, फिर स्वतः ही बोर्ड पर लिखे कार्य को करने लगी। कुछ देर बाद मैंने पूछा कि आखिर वह स्कूल क्यों नहीं आना चाहती? बोली कि अमुक सर मुझे बहुत पीटते हैं। एक बार तो प्रार्थना-सभा में सबके सामने उसके मुँह में गुटका भरा होने पर बहुत बुरी तरह थप्पड़ लगाए थे। तब वह बहुत रोई थी, कांप उठी थी। इसके बाद भी एक-दो बार पीटा बताया। मैंने उसे आश्वस्त किया कि अब उसे कोई हाथ भी नहीं लगाएगा। मैं सर से कह दूंगी। छात्रा को मुझ पर भरोसा हो गया। फिर वह पढ़ने भी लगी। पोषाहार भी खाया। फिर मैंने कहा, घर जाना है तो चली जाओ। तो उसने इंकार कर दिया और स्कूल में पढ़ती रही। जबकि वह एक क्षण स्कूल में ठहरने को तैयार नहीं थी। हां, उसे रोकना इतना आसान तो नहीं था, लेकिन बच्चे की समस्या को जानने के बाद उस का समाधान किया जाए तो इस तरह की अप्रिय घटनाओं से बचा जा सकता है और बच्चों को उचित राह पर भी लाया जा सकता है, क्योंकि मूलतः बच्चा बहुत मासूम और जिज्ञासु होता है। अन्ततः प्यार की जीत हुई।

मैं तो इतना ही कहना चाहती हूं कि बच्चों से प्यार से पेश आइए, तो हर बात मानेंगे, संस्कारित नागरिक बनेंगे। उनकी बात को नजरअंदाज नहीं करके उस पर तवज्जो दीजिए, उनका सम्मान कीजिए। उनकी मजबूरियों को, परेशानियों को सुनिए, उनके भागीदार बनिए, उन्हें हल करने का प्रयास कीजिए। आखिर बालक भी तो वही सब करना चाहता है, जो आप उसे करवाना चाहते हैं और फिर सम्मान देने से ही सम्मान मिलता है, केवल बड़े होने का मतलब सम्मान के योग्य होना नहीं होता है। बालक तो प्रकृति से ही स्वाभिमानी होता है। उस पर जोर-जुल्म करने से पहले इतना-सा सोच लें कि वह भी किसी का बेटा या बेटी है। उसे अपनी उम्र, बुद्धि, विद्वता से न तौल कर बालक को बालक ही जान कर उससे उचित व्यवहार करें। क्योंकि हमेशा बच्चा गलत नहीं होता। बालक को बालक ही रहने दें, उम्र से पहले उससे अपने जैसी विद्वता की उम्मीद रखना छोड़ दें तो बहुत-सी समस्याएं अपने-आप सुलझ जाएंगी। यह बात हम अभिभावकों को समझनी होगी।

'डांट-फटकार से कुछ बात नहीं बनती है,
प्यार बच्चों पे लुटाएं तो कोई बात बने।'

-सी-368, तलवण्डी, कोटा-324005
मो. 09829549947

बाल मनोविज्ञान

रोता बालक, जब पढ़ जाए

❒ वृद्धि चन्द गोठवाल

बात कुछ पुरानी है। जब मैं सन् 1961 में शिक्षक बना। मैंने देखा बालक पहली बार विद्यालय जाने के नाम पर रोते-चिल्लाते हैं। तब परिवार के सदस्य बच्चों को कोई न कोई प्रलोभन देकर मनाते हैं, जैसे-चॉकलेट, बिस्कुट, पैसा अथवा उसकी मनचाही वस्तु। इसके बावजूद भी विद्यालय जाने के लिए रोजमर्रा की आनाकानी और रोना एकाएक समाप्त नहीं हो जाता है। ऐसा आज भी यदा-कदा, यहाँ-वहाँ देखा जा सकता है। बालक स्वतः नियमित न हो जाए तब तक अभिभावक के लिए यह समस्या बनी रहती है। क्या इस समस्या का निदान शिक्षक के पास है? हाँ, यदि शिक्षक प्रयत्न करे एवं प्रेम से सहयोग करे तो कोई कारण नहीं कि बच्चों का यह दोष दूर न हो।

मैं एक दिन प्रातः विद्यालय के लिए जा रहा था। तब मुहल्ले में एक घर के दरवाजे के पास बालक के जोर-जोर से रोने की आवाज सुनाई दी। देखा तो उसके पिता कर्कश वाणी से झिड़क रहे थे। मुझसे बच्चे को घसीटना और फटकारना देखा न गया। अभिभावक से पूछ ही लिया, क्यों क्या हुआ? जवाब में माता और पिता एक साथ बोल पड़े। 'अरे! यह बड़ा मक्कार है, पढ़ने जाने के नाम पर मौत आ रही है, रोज यही तमाशा करता है, हम तो परेशान हो गए। मारते-पीटते हैं किन्तु इस नालायक पर कोई असर नहीं पड़ता। अब आप भी देखलो विद्यालय के लिए बिल्कुल तैयार नहीं।' मैंने इतना हीकहा-मारोमत, पढ़ जाएगा।

मैं शनैः-शनैः आगे बढ़ गया। मेरे पीछे-पीछे वे महाशय जोर-जबरदस्ती से बच्चे को आखिर विद्यालय में ले आए। बच्चे का रोना और भाग जाने की प्रवृत्ति बराबर बनी हुई थी। मुझे लगा उसका पिता बड़ा दुःखी था अतः सहानुभूति वश उनके पास जाकर शिष्टाचार की बातें समझाई। इस बीच एक शिक्षक मित्र पास में आ गए और बोले- 'आप क्यों माथा-पच्ची कर रहे हैं? इस बालक को मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इसका पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं है। मेरे गणित के कालांश में गायब हो जाता है। मैं भी इससे तंग आ गया। यह नहीं सुधरेगा। छोड़ो, आप क्यों परेशान होते हैं?' पिता की मुश्किल और शिक्षक की अजीबो-गरीब बातों ने मेरे मन को कचोट दिया, मैं चुप।

परिवार के अथक प्रयासों से बच्चा विद्यालय तो आने लगा किन्तु गणित के समय वह इधर-उधर छिप जाता मैंने उसकी मनःस्थिति को समझा। वह चुंगटे के भय का मारा डर कर विद्यालय से जी चुराता था। दबाव, फटकार और दण्ड की प्रक्रिया कामयाबी नहीं होती अतः कुछ प्रेमभरा व्यवहार बनाया तो मैं उसका हो गया और वह मेरा। प्रायः छोटी कक्षा में पीरियड लेने से शिक्षक बचते हैं, पर मैंने तत्कालीन प्रधानाध्यापक राजमलजी मेहता के सम्मुख गणित का यह कालांश लेने की रुचि जाहिर की।

ऐसा करना मेरा एक प्रयोग एवं प्रयास था। कालांश तो मिला पर मेरी परीक्षा ही थी कि क्या समस्याग्रस्त बच्चा मुझसे गणित में होशियार हो पाएगा? प्रयास मेरा था और रुचि बच्चे की जाग्रत हुई। मेरी आशा का दीपक प्रकाशमय होकर सत्रान्त तक तो उसने आगामी कक्षा में जाने की योग्यता हासिल कर ली। समस्या का अन्त हुआ कि रोता बच्चा पढ़ने लगा। रोते बालक को हँसाना और पढ़ाना शिक्षक के हाथ है। कितने शिक्षक मेरी बात से सहमत है? यह कहना सहज नहीं कोई करके तो देखें। -पूर्व व्याख्याता-हिन्दी

गौत्तम आश्रम के पास, कपासन (चित्तौड़गढ़)
मो. 9414732090

बाल दिवस

मेरे भगवान बालकों में हैं

❒ महेश कुमार चतुर्वेदी

जी हाँ ''मेरे भगवान बालकों में है।'' यह आप और हम अक्सर स्कूलों की दीवारों पर आदर्श वाक्य के रूप में पढ़ते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने लिखा है-''मनुष्य ही परमात्मा का साक्षात् मंदिर है। इसलिए साकार देवता की पूजा करें।''

कितना अच्छा लगता है इन वाक्यों को पढ़कर। जिसने भी यह कल्पना की होगी। सचमुच सारी सीमाओं को लांघकर बालक को भगवान का दर्जा देकर हकीकत में इस महान कार्य को अंजाम दिया है। वह धन्यवाद का पात्र है।

वैसे भी बालक भगवान की तरह निश्छल, निष्कपट एवं पवित्र होता है। जिस तरह भगवान अपने भक्तों के प्रिय होते है। वैसे ही बालक ईश्वर की वह अलौकिक रचना है जो सबको प्रिय होता है। भक्त अपने भगवान को प्रसन्न करने के लिए हर प्रकार का जतन करता है। जाप, नाम स्मरण, भजन-कीर्तन, पूजा-अर्चना, भावपूर्ण भक्ति, तप-साधना, भेंट आदि न जाने किन-किन माध्यमों से भक्त भगवान को पाना चाहता है। सच्चे भक्त का परम लक्ष्य भी यही होता है कि एक बार वह अपने प्रभु के दर्शन कर ले तो जन्म-जन्मातर के बन्धनों से मुक्त हो जाए और आत्मोद्धार हो जाए। किन्तु ऐसे भक्त कम और बिरले ही मिलते है जो अपने भगवान को पाने के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहते है। मीरा, तुलसी, नानक, रैदास, रसखान आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण है। ये भक्तिकाल के समय के उत्तम उदाहरण है जिन्होंने ईश्वर की सत्ता और इसकी महत्ता को प्रतिपादित किया है और उस तक पहुंचने में कामयाबी हासिल की है।

समय के बदलाव के साथ-साथ आदमी की मनोवृत्तियाँ और स्वभाव में भी बदलाव आया है। आदमी स्वार्थी, कपटी, ईर्ष्यालु होकर निरन्तर अपने व्यवहार और कर्मों से निम्न धरातल पर आकर पतितोन्मुख हो गया है।

गीता के 'कर्मेण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' के शाश्वत सत्य को ठुकरा कर इसके विपरीत कर्म में जुड़े बिना पहले फल की आकांक्षा करता है फिर कर्म करता है। ईश्वर की भक्ति से पहले आज का तथाकथित भक्त ढोंग और आडम्बर का सहारा लेकर ईश्वर से कई अनन्त इच्छाओं की अभिलाषा रखता हैं।

बदले में वह ईश्वर को थोड़ी सी धूप-अगरबत्ती, फूल-प्रसाद का चढ़ावा कर अपनी आत्म संतुष्टि का प्रदर्शन करता है और व्यक्ति जब ऐसा करता है तो संत और साधुजन यही कहते हैं कि वह धर्म से विमुख होता जा रहा है और जब कोई धर्म से विमुख होता है तो उसमें कई सारी विकृतियाँ आ जाती है। वह दुराचारी, दुश्चारित्रिक, व्यसनी एवं व्यभिचारी होकर कई अनैतिक कार्य करता हुआ अपने मूल उद्देश्य (ईश्वर प्राप्ति) से भटक जाता है। ऐसे में सामाजिक व्यवस्था में बिखराव होकर मनुष्य दुःख का भागीदार बनता है।

यह बात तो हुई ईश्वर से जुड़ी भगवान के सात्विक-असात्विक भाव से जुड़ने की किन्तु जब हम अपने बालक में भगवान का स्वरूप पाते हैं तो निश्चित रूप से हमें उनके साथ वैसी ही भूमिका निभानी चाहिए जैसी निश्छल भाव से भक्त-भगवान के साथ निभाता है।

बालक अबोध है। उसका हृदय कोमल है। वह निष्पापी है, निश्छल है। लोभ-लालच से कोसों दूर है। झूठ-फरेब क्या होता है वह नहीं जानता। वह पल में रूठता है और पल में हँसता है। ऐसा सुकोमल, सुंदर-मनोरम बालक मेरा भगवान है तो इससे अच्छी और क्या कल्पना हो सकती है।

हम अपने बालक रूपी भगवान के पुजारी है। पुजारी नित-प्रतिदिन अपने प्रभु को नहलाता है। उन्हें अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनाता है। इत्र फूलेल आदि सुगन्धित चीजों से उन्हें प्रसन्न करता है, भोग लगाता है, आरती उतारता है। उनका यशोगान करता हुआ उनकी स्तुति करता है। यदि एक पुजारी मंदिर में ये सारे शुभ-कर्म भगवान के लिए कर सकता है तो फिर क्यों नहीं हम अपने बालक रूपी भगवान को प्रसन्न करने में भूल करते है। उससे क्यों नहीं बतियाते है। क्यों नहीं उसके और उसके परिवार के बारे में उससे चर्चा करते है। वह अपने परिजनों-स्वजनों को छोड़ जिस काम के लिए शिक्षा ग्रहण करने हमारे पास आता है। हम क्यों नहीं उसकी पूर्ति में मनोयोगपूर्वक, सहर्ष आगे हो पुण्य कमाने का प्रयास करते है। उसके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार कर हम उसको अपने से भिन्न समझ उसके निकट जाने से कतराते है। इस तरह दिखावे के रूप में खानापूर्ति कर हम समझते है कि हो गई अपने भगवान की भक्ति। सचमुच में बालक को भगवान का दर्जा दिया हैं तो क्यों नहीं उसमें इतनी शक्ति-बल-चातुर्य और ज्ञान का विकास कर दें कि वह अपने आपको दुर्बल-कमजोर-असहाय और हीन न समझ अपने जीवन में आने वाली हर समस्या और कठिनाइयों का वह प्रबलता से मुकाबला कर सकें।

ऐसी सामर्थ्य और कुव्वत अगर हम अपने बालकों में भर दें तभी सही मायने में बालक रूपी भगवान की सच्ची आराधना और पूजा होगी और ऐसा मेधावी और प्रतिभावान बालक आगे चलकर स्वच्छ समाज का निर्माण कर मानव सेवा के पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

''मेरा भगवान बालकों में है'' यह लिखना और कहना तभी सार्थक होगा जब हम विद्यालय में आने वाले अपने बालक रूपी भगवान को सजाएं-संवारे और उसे ऐसा योग्य बनाएं कि हम गर्व से कह सके कि उस भगवान की कृति में हमारा अमूल्य योगदान है।

-प्रधानाध्यापक
(राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत शिक्षक)
रा.उ.प्रा.वि. पुराना छोटी सादड़ी (प्रतापगढ़)
मो. 9460607990

A man without a vote in this land is like a man without hand.
-Henry Ward Beecher

धरती पर बिना वोट का व्यक्ति बिना हाथ के समान है। **-हैनरी वार्ड बीचर**

बाल दिवस : 14 नवम्बर 2013

अपने बच्चे को शिष्टता सिखाएं

❒ रूपनारायण काबरा

सार्थक अनुशासन बच्चों को यह सिखाता है कि अमुक आचरण या व्यवहार गलत क्यों है और ठीक किस प्रकार किया जा सकता है। बच्चों को शिष्ट आचरण सिखाना कठिन नहीं है। मुख्य सिद्धान्त यही है कि जब भी अच्छा व्यवहार देखें तो उसकी प्रशंसा करें, मुस्कायें, सीने से लगायें या उसकी पीठ थपथपाकर शाबास कहें। इससे उसमें अपने आप ही विशिष्ट होने का अहसास जागेगा।

उदाहरण के तौर पर एक चार साल का लड़का और दो साल का उसका भाई माँ के साथ आये हैं। बड़ा बच्चा इधर उधर भागता नहीं, दुकान का सामान छेड़ता नहीं और अपने छोटे भाई का ध्यान रखता है उसको परेशान भी नहीं करता और इस अच्छे व्यवहार के बदले में उसको मिलती है माँ की उपेक्षा और वह अपनी खरीददारी में ही व्यस्त है। लेकिन यदि वह बड़ा बच्चा भागदौड़, उछलकूद करने लगे, छोटे बच्चे को परेशान करे, शरारत करे तो उस माँ का ध्यान तुरन्त आकर्षित होता हैं और वह उसे डांटने लगती है। इतनी देर के अच्छे व्यवहार की शाबासी नहीं मिली तो वह खीझ गया। प्रशंसा की तो बच्चे ही क्या बड़ों को भी आवश्यकता होती है। अच्छे कार्य की व्यवहार की तो तारीफ नहीं की जाये लेकिन गलत व्यवहार के लिये डांटा फटकारा जाये तो यह व्यवहार गलत होगा।

हर बच्चा चाहता है कि उसके माता-पिता उस पर सकारात्मक प्रंशसात्मक ध्यान दें यदि ऐसा नही होगा तो वह उदासीन माता-पिता को नकारात्मक व्यवहार से आकर्षित करने लगता है। कुछ नहीं पाने से तो खराब पाना अर्थात् डांट खाना ही उसे ठीक लगने लगता है सामान्यत:अभिभावकों का ध्यान बच्चों के दुर्व्यवहार पर ही जाता है और इससे बच्चों में दुर्व्यवहार की प्रवृत्ति प्रबल हो उठती है, क्योंकि इसी से बच्चे अपने माता-पिता का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाते हैं, और यह चाह प्राय: हर बच्चे की होती है। बच्चों को शिष्ट बनाने के कुछ सहायक सूत्र इस प्रकार हो सकते हैं :-

1. अपने बच्चों के अंतरंग बनिए- उससे केवल डांट-फटकार ही नहीं करें, जिसमें केवल आदेश, निर्देश व आरोप की ही गंध आती हो और जो अनुशासन के नाम पर केवल रौब जमाने के लिये ही हो।

सबसे अच्छा तरीका है बच्चों को कहानी सुनाना, अपने बचपन की बातें सुनाना अर्थात कुछ भी रोचकदार हो चाहे गाना हो, बजाना हो या उनके साथ खेलना हो। इससे बच्चे आपको अपने निकट ही पाते हैं। आपके बचपन की बातें तो उन्हें बहुत रोचक लगती हैं। वे यह जानकर खुश होते हैं कि उनके माता-पिता भी बचपन में नासमझ थे। यह जानकर परस्पर एक तादात्म्य स्थापित होता है, वे खुलकर हंस सकते हैं और बच्चे अपनी बातें अभिभावकों से सहज होकर कर लेते हैं। बच्चों को म्यूजियम, पार्क, सागर किनारे, मेले में अवश्य ले जायें। इससे बच्चे आनंदित होते हैं।

अपने बच्चे को सिखाइये कि वह आप पर विश्वास रख सकता है। बच्चों के साथ ईमानदारी का व्यवहार करें। जैसे बच्चे को सुई लगवाने से चींटी काटने जैसा दर्द बतायें लेकिन वह दर्द ततैया काटने जैसा हो तो बच्चे भविष्य में महत्वपूर्ण मसले पर भी आपका विश्वास नहीं करेंगे। आप उसके प्रति जो वादा करें उसे पूरा अवश्य करें।

2. सद्व्यवहार को सराहें/पुरस्कृत करें- बच्चे के आचरण के लक्ष्य सरल हों। सतर्क रहें कि आप उसके किस व्यवहार को प्रोत्साहित करना चाहते हैं और किसको नहीं। बच्चा घर के काम में मदद करे तो उसके इस आचरण को देखकर मुस्कराइये, प्रशंसा कीजिये। याद रखिये किसी बच्चे को पैसे देकर पुरस्कृत करते हैं तो कोई बच्चा तो केवल आपके प्रशंसात्मक व्यवहार से ही प्रसन्न और प्रेरित हो जाता है और किसी को कोई खेल पसन्द हो तो वही दे दीजिये। पुरस्कार का प्रभाव तुरन्त दिये जाने में ही होता है। प्रारम्भ में पुरस्कारों की पुनरावृत्ति शीघ्र हो लेकिन बाद में जरूरत ही नहीं पड़ेगी क्योंकि बच्चे को अच्छे काम में आनन्द आने लगेगा।

3. बच्चे के साथ लेन-देन करें- कार्य विशेष में सफल होने पर बच्चे को प्रेरणा मिलती है और अच्छा करने की। एक बात याद रखिये कि किसी काम को अच्छा करने पर पैसे या पुरस्कार देते हैं पर ध्यान रखिये कि कहीं आदत पैसे लेकर ही काम करने की न बन जाये। आपका पुरस्कार उसकी प्रशंसा है न कि काम कराये जाने का प्रलोभन। प्रलोभन नकारात्मक होता है और पुरस्कार सफलता की प्रशंसा होती है। उद्देश्य तो, अच्छी आदत डालने का है न कि पैसे देकर काम कराने का। अच्छे काम या व्यवहार में बच्चे को आनन्द आने लगे, स्वतः ही वैसा करने लगे इसी में आपके प्रशिक्षण की सम्पूर्ति हैं।

4. आनन्द की रोक में सावधानी रखें- बच्चा बहुत देर से टीवी देखे ही जा रहा है तो उसे 5 मिनट में अपने कमरे में जाने को कहिये यह मत कहिये वहाँ जाकर क्या करना है, आपके कहने से वह पढ़ेगा नहीं। हां, कुछ देर में स्वयं ही अपनी पढ़ाई का काम करने लग जायगा। टीवी के संबंध में निर्देश टीवी से उठाते वक्त नहीं बल्कि वैसे ही नार्मल टाइम में, जब वह तनाव में न हो तब समझाकर कहिये इसका असर होगा, बात समझ में आयेगी लेकिन यदि टीवी देखते हुये को डांटकर उठा दिया और उपदेश देने लगे तो वह अपने अपमान और विद्रोह में ग्रस्त कुछ नहीं सुनेगा।

5. मत खड़ी कीजिये समस्या-कभी मत भूलिये बच्चे आखिर बच्चे होते हैं, उनसे अपने स्तर के व्यवहार की अपेक्षा मत करिये। यदि आपके बच्चे ज्यादा देर तक एक साथ मिल जुल नहीं रह पाते झगड़ने लगते हैं तो उन्हें साथ रहने को मजबूर न करें। कमरा एक ही हो तो बीच में कपड़ा लगाकर पार्टीशन कर दें। बच्चा अपनी स्वतंत्रता भी चाहता है, अवश्य दीजिये। उसकी अलमारी व साज-सामान अलग-अलग दे देवें। यात्रा पर भी ले जायें।

जीवन की एकरसता को तोड़ने के लिये पर्यटन प्रोग्राम बनायें। जाने से पूर्व बच्चों से चर्चा करें, तैयारी में उनके विचार लें, क्या ले चलें इत्यादि की। टेप रिकार्डर व कैमरा खिलौने, रैकेट्स बॉल इत्यादि ले जायें, खाने पीने की भी सामग्री लें। सब में उनकी राय लें। नक्शा दिखायें, देखे जाने वाले स्थानों की चर्चा करें। बच्चों में इससे उत्कंठा, नियन्त्रण, कल्पना एवं आत्मसम्मान का भाव जगेगा।

6. बच्चों के साथ संवाद की सहज स्थिति बनाएं– बच्चों से कहें कि वे मन के अच्छे व बुरे जो भी भाव हों उन्हें बिना झिझक कह दें ताकि आपको बच्चों के बदलते व्यवहार का कारण समझ में आ जाये। मन में दबे भावों को जानकर आप बदलते व्यवहार की समस्या को सुलझा सकेंगे और उनके नकारात्मक संवेगों को बाहर निकालने की शिक्षा दी जा सकती है। इसके लिये सावधानी से सुनिये, समझने की कोशिश कीजिये कि बच्चे की भावना क्या है, उसने सही सही समझा है, इसे सुनिश्चित कीजिये। बच्चे को महसूस होना चाहिये कि आपने उसकी समस्या को समझ लिया है, बच्चा यदि कहे "मैं बुद्धू हूं, मुझे पढ़ाई से नफरत है" तो उसके शब्दों को अर्थांतर कीजिये। आप कहिये "हां, मैं भी हैरान था कि तुम इतने सारे शब्द कैसे समझ पाओगे, कैसे याद कर पाओगे।" ऐसा कहने पर बच्चा महसूस करता है कि आप उसकी दिक्कत समझ रहे है और अब वह आपके सुझावों को गंभीरता से लेने लगता है।

जब माता-पिता अपने बच्चे की क्षमता की ओर ध्यान देते हैं, उसके बुरे व्यवहार की ओर नहीं, तब बच्चे की प्रतिक्रिया सकारात्मक होती है और जब बच्चे के व्यवहार में सुधार होता है तब बच्चा उन्हें और भी अच्छा लगने लगता है और इसके बाद ही तो एक आश्चर्यजनक उपयोगी चक्र की शुरूआत होती है।

-ए-438, किशोर कुटीर,
वैशाली नगर, जयपुर-302021
मो. 08233360830

आपका मतदान, लोकतंत्र की शान।
□
लोकतंत्र इससे–वोट करें गर्व से।

एक बच्चे की अभिलाषा

आप जो जानते हैं उसे मुझ पर मत थोपिये,
मैं अज्ञात को खुद ही खोजना, तलाशना चाहता हूं
और चाहता हूं कि अपनी खोज का स्रोत मैं स्वयं बनूं
जो ज्ञात है वह मुझे आजाद करे-
न कि अपना दास बनाये।
संभव है, आपके सच का संसार मेरी सीमा बन जाए
और आपका विवेक मेरे लिये निषेध
मुझे शिक्षा मत दीजिए
इसके बजाय हम दोनों साथ आगे बढ़ें
मेरी समृद्धि वहां आरंभ हो जहां आपकी समृद्धि का अंत है।
मुझे समझाइये ताकि मैं आपके कंधे पर खड़ा हो सकूं।
मेरे सामने अपने आपको प्रकट कीजिये
जिससे मैं आपसे भिन्न कुछ बन सकूं।
आपका मानना है-
हर व्यक्ति प्रेम और सृजन कर सकता है
इसीलिए मैं आपसे अपनी मान्यता के अनुरूप
जीने की मांग करता हूं।
अगर आप सिर्फ अपनी ही बात सुनते रहेंगे
तो आप समझ नहीं पायेंगे कि मैं कौन हूं।
मुझे नसीहत न दीजिये।
मैं जो हूं, वही मुझे बना रहने दीजिए।
यह आपकी हार होगी कि-
मैं आपकी नकल बन कर रह जाऊं।।

-अम्बर्तीमातुराना अनौपचारिका से साभार

राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस

विद्यार्थियों के लिए भी है कानूनी अधिकार

❒ विश्वनाथ भाटी

नितिन को अंदेशा हुआ कि उसकी उत्तर-पुस्तिका के मूल्यांकन में उसके साथ न्याय नहीं हुआ है। वह मन मसोस कर बैठा था। उसे जानकारी नहीं थी कि आजकल उत्तर-पुस्तिका खुलवाई और देखी भी जा सकती है। जब विपिन ने उसे इस बात की जानकारी दी तो उसकी आँखों में चमक आ गई। बात उत्तर-पुस्तिका दिखाने की हो, जबरन बालश्रम करवाने की हो, रैगिंग की समस्या हो या फिर कोई और कानूनी अड़चन हो, उससे संबंधित विधिक जागरुकता की आवश्यकता महसूस की जाती है। विधि संबंधी विषयों को समझ से परे या पचड़ा मानकर महत्वपूर्ण कानूनी ज्ञान से किनारा कर लेना ठीक नहीं है। विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ ही विधिक चेतना प्रदान करके एक जागरुक नागरिक तैयार करना आज की प्राथमिकता बन गई है। विधिक चेतना के सन्दर्भ में प्रतिवर्ष 9 नवम्बर को राष्ट्रीय विधिक सेवा दिवस मनाया जाना भी तय हुआ है। विद्यार्थियों में विधिक जागरुकता के लिए निम्नांकित बिन्दुओं पर विचार किया जाना प्रासंगिक होगा-

शिक्षा का अधिकार : बच्चों के बौद्धिक और मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। एक सुशिक्षित बालक ही एक अच्छा नागरिक बन सकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बालकों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है। संविधान के अनुच्छेद 21क में 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इसके लिए संसद द्वारा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिनियम 2009 पारित किया गया है जो 1 अप्रैल 2010 से जम्मू-कश्मीर राज्य को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया है। इससे 6 से 14 वर्ष तक के बालक-बालिकाओं को कक्षा 1 से 8 तक की प्रारम्भिक शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य प्राप्त करने का अधिकार मिल गया है। ऐसे बालक-बालिकाओं से किसी प्रकार की कोई फीस या प्रभार वसूल नहीं किया जायेगा। प्रवेश से इंकार करने या किसी प्रकार का शारीरिक अथवा मानसिक उत्पीडन किया जाना भी बाधित किया गया है। गैर सहायता प्राप्त विद्यालय भी कक्षा में दुर्बल और असुविधाग्रस्त समूह के बालकों की संख्या के कम से कम पच्चीस प्रतिशत बालक-बालिकाओं के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करेंगे। अधिनियम की धारा 21 के अन्तर्गत माता-पिता या संरक्षक पर यह कर्तव्य अधिरोपित किया गया है वे आसपास के विद्यालयों में अपने बच्चों को प्रवेश दिलायें।

बाल विवाह निवारण कानून : बाल विवाह करना हमारे देश की, विशेषतः राजस्थान की एक लम्बे समय से चली आ रही कुप्रथा है। छोटे-छोटे बालकों का विवाह कर दिया जाना एक आम बात है। छोटी अवस्था में बच्चों का विवाह कर देने से उनके शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस कुप्रथा के निवारण के लिए सन् 1929 में बाल विवाह निषेध अधिनियम पारित किया गया था, लेकिन इसके कालातीत हो जाने के कारण उसे निरस्त करके सन् 2006 में बाल विवाह निषेध अधिनियम पारित किया गया है। यह अधिनियम सम्पूर्ण भारत पर लागू है।

इस अधिनियम की धारा 2(क) में 'बालक' शब्द को परिभाषित करते हुए बताया गया है कि बालक वह है जिसने, यदि वह पुरुष है तो 21 वर्ष और यदि स्त्री है तो 18 वर्ष पूर्ण नहीं किये है। इस अधिनियम की धारा 3(1) के अन्तर्गत बाल विवाह को ऐसे पक्षकार के विकल्प पर शून्यकरणीय माना गया है जो विवाह के समय बालक या अर्थात् ऐसा व्यक्ति चाहे तो बाल विवाह को शून्य घोषित करा सकता है। अधिनियम की धारा 9, 10 व 11 में बाल विवाह के लिए दण्ड का प्रावधान किया गया है। इसके अनुसार-

(क) यदि 18 वर्ष से अधिक आयु का पुरुष बाल विवाह करेगा तो उसे दो वर्ष तक की अवधि के कारावास अथवा एक लाख रुपये तक के जुर्माने अथवा दोनों से दण्डित किया जा सकेगा।

(ख) बाल विवाह का संचालन, निर्देशन अथवा सम्पन्न कराने वाले व्यक्ति को दो वर्ष तक की अवधि के कारावास अथवा एक लाख रुपये तक के जुर्माने अथवा दोनों से दण्डित किया जा सकेगा। इसके अनुसार अब माता-पिता, संरक्षक, बाल विवाह कराने वाले पण्डित, दुष्प्रेरक आदि सभी दण्ड के भागीदार बना दिये गए हैं। लेकिन किसी स्त्री अर्थात् महिला को बाल विवाह के अपराध में कारावास के दण्ड से दण्डित नहीं किया जा सकेगा। इस अधिनियम की धारा 13 के अनुसार किसी बाल विवाह को रोकने के लिए बाल विवाह निषेध अधिकारी, परिवाद अथवा अन्यथा सूचना मिलने पर प्रथम वर्ग न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वारा व्यादेश (स्टे ऑर्डर) जारी किया जा सकेगा। उल्लेखनीय है कि धारा 6 के अनुसार बाल विवाह में जन्मी संतान को औरस या धर्मज माना जाएगा। अधिनियम की धारा 15 के अनुसार बाल विवाह संज्ञेय एवं गैर जमानती अपराध माना जाएगा अर्थात् पुलिस अधिकारी बिना वारण्ट के गिरफ्तार कर सकेगा। धारा 16 के अन्तर्गत राज्य सरकार द्वारा आवश्यकतानुसार बाल विवाह निषेध अधिकारियों की नियुक्ति की जा सकेगी।

रैगिंग विरोधी कानून : शिक्षण संस्थाओं में नये आने वाले विद्यार्थियों के साथ पुराने विद्यार्थी अच्छा व्यवहार नहीं करते। उन नव आगन्तुकों के साथ किया जाने वाला ऐसा कृत्य या व्यवहार जो आमतौर पर वह नहीं करता और जिसे करने से उसे शारीरिक, मानसिक, आर्थिक हानि हो अथवा शर्मिन्दगी हो, रैगिंग कहलाता है। यह एक ऐसी बुराई है, जो उस नव आगन्तुक के मन में खटास भर देती है। कभी-कभी तो इससे बहुत ही खतरनाक परिणाम सामने आते हैं। जहां नये आने वाले अपने ही छोटे भाई-बहिन का स्वागत किया जाना चाहिए था वहीं उसे चिढ़ाना, मजाक उड़ाना, अपमानित करना, मादक और नशीले पदार्थों के सेवन के लिए दबाव डालना, भद्दे और अश्लील प्रश्न पूछना, यौन उत्पीड़न करना, सीनियर छात्रों के काम

करना, घृणित कार्य करने के लिए बाध्य करना आदि दूषित आचरण हमारी कमजोर मानसिता का ही परिचय देते हैं। इनके चलते नव आगन्तुक विद्यार्थियों को विभिन्न शारीरिक-मानसिक कष्टों से गुजरना पड़ता है। सामूहिक हिंसा, आत्महत्या, मृत्यु, पढ़ाई छोड़ कर चले जाना आदि दुष्परिणाम सामने आते हैं।

रैगिंग के संबंध में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भी कॉलेज/स्कूल प्रबन्धन की जिम्मेदारी ठहराए जाने की आवश्यकता समझी है। ऐसे मामलों में कॉलेज/स्कूल प्रशासन द्वारा दोषी छात्र के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराई जानी चाहिए तथा ऐसे प्रत्येक मामले की जानकारी उनके द्वारा जिला स्तर पर गठित 'एन्टी रैगिंग कमेटी' व संबंधित विश्वविद्यालय को दी जानी चाहिए। रैगिंग का अपराध करने वाले दोषी छात्र को जुर्माने, कारावास या दण्ड से दण्डित किया जा सकता है। रैगिंग छात्रों की छात्रों द्वारा की जाने वाली समस्या है, अतः इसका उपाय भी छात्रों द्वारा ही किया जाना चाहिए। छात्र समुदाय को छात्र संगठनों व अन्य मंचों के माध्यम से इस अमानवीय कृत्य के विरुद्ध अपनी चेतना जाग्रत करके आवाज उठानी चाहिए।

मोटर वाहन दुर्घटना संबंधी प्रावधान : मोटर वाहन के अंतर्गत बस, कार, जीप, ट्रक, ट्रेक्टर, स्कूटर, मोटर साइकिल, मोपेड आदि वाहन सम्मिलित किये जाते हैं। ऐसे किसी वाहन से चालक की गलती के कारण यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाए, चोट लगे या सम्पत्ति का नुकसान हो जाए तो वह व्यक्ति या उसके उत्तराधिकारी वाहन के मालिक / चालक / पंजीकरण करने वाली बीमा कम्पनी से मुआवजा प्राप्त करने का अधिकार रखता है। दुर्घटना के समय ऐसे वाहनों के नम्बर अवश्य नोट कर लेने चाहिए तथा संभव हो सके तो वाहन चालक, वाहन मालिक के नाम, उनके पते आदि भी लिख लेने चाहिए। चोटग्रस्त का इलाज कराने की व्यवस्था तुरन्त करनी चाहिए तथा निकटतम थाने पर घटना की रिपोर्ट दर्ज करा देनी चाहिए। मृत्यु, चोट आदि के लिए मुआवजा प्राप्त करने के लिए स्वयं या उत्तराधिकारी दुर्घटना के स्थान पर या अपने निवास स्थान पर प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं। यदि दुर्घटना करने वाले वाहन के नम्बर न भी ज्ञात हो सके तो भी मुआवजा सरकार द्वारा दिलाया जाता है, इसके लिए एफ.आई.आर. व जांच पत्रावली की नकल प्राप्त करके संबंधित तहसीलदार/ उपखण्ड मजिस्ट्रेट के कार्यालय में प्रार्थना-पत्र पर मात्र दस रुपये की कोर्ट फीस लगती है, चाहे क्लेम लाखों रुपये का हो।

धूम्रपान निषेध : धूम्रपान हानिकारक है। न केवल धूम्रपान करने वालों के लिए अपितु उनके साथ रहने वालों के लिए भी नुकसानदायक है। संविधान द्वारा धूम्रपान निषेध है। सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान करने पर दो सौ रुपयों तक जुर्माना किया जा सकता है। 18 वर्ष से कम आयु वाले व्यक्ति को बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, आदि बेचना अथवा देना अपराध है। शैक्षणिक संस्थानों के 100 गज की दूरी में इन उत्पादों को बेचना निषिद्ध है। इसके उल्लंघन पर 200 रुपयों तक का जुर्माना लगाया जा सकता है।

इस कानून के तहत सार्वजनिक स्थान के प्रभारी, प्रबन्धक, पर्यवेक्षक को यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे स्थानों पर धूम्रपान न हो। नियम 5 के अनुसार उसे जुर्माना लगाया जाने तथा वसूल करने हेतु अधिकृत किया गया है। 18 जुलाई, 2012 से संपूर्ण राजस्थान में केन्द्रीय खाद्य सुरक्षा कानून के तहत जर्दा तथा जर्दा मिले पान मसाला आदि उत्पादों के निर्माण, भण्डारण और बेचान पर पाबन्दी लगा दी है। इसके उल्लंघन पर 25000 रुपये से लेकर दस लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकेगा। गुटखे पर केरल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश एवं बिहार के बाद पाबंदी लगाने वाला राजस्थान छठा राज्य है।

शोषण के विरुद्ध अधिकार : संविधान के अनुच्छेद 23 व 24 में यह कहा गया है कि किसी भी बालक का न तो शोषण किया जायेगा और न ही उनसे बेगार ली जा सकती है, बन्धुआ मजदूर नहीं बनाया जा सकता है। उनका अनैतिक व्यापार अर्थात् यौन-शोषण भी नहीं किया जा सकता। कारखाना अधिनियम के अनुच्छेद 24 में यह स्पष्ट किया गया है कि 14 वर्ष से कम आयु के बालकों को कारखानों, खानों व अन्य जोखिम भरे कामों में नियोजित नहीं किया जायेगा।

किशोर न्याय का अधिकार : कई बार बालकों (18 वर्ष से कम) से अपराध हो जाते हैं, लेकिन उन्हें अपराधी नहीं कहा जाता है। इसके लिए एक विशेष कानून किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम-2000 बनाया गया है। इस अधिनियम के अन्तर्गत बालकों को अपराधी नहीं कह कर अपचारी अथवा विधि विरुद्ध किशोर की संज्ञा दी गई है। सामान्यतः ऐसे बालकों को कारावास या दण्ड नहीं दिया जाता और उन्हें सुधार-गृहों में भेज दिया जाता है।

भरण-पोषण का अधिकार : प्रत्येक बालक को अपने माता-पिता से भरण-पोषण का अधिकार है। दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 की धारा 125 में यह कहा गया है कि प्रत्येक माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वह अपने बालकों का भरण-पोषण करें। जब तक बालक आजीविका कमाने लायक न हो जाए तब तक माता-पिता उसकी परवरिश करने के लिए उत्तरदायी है। यदि कोई बालक विकलांग, मन्दबुद्धि या बालिका अविवाहित है, तब भी माता-पिता का दायित्व है कि उसका भरण-पोषण करें।

इनके साथ-साथ ही भारतीय संविधान के द्वारा नागरिकों के लिए मूल अधिकारों की व्यवस्था की गई है। इनके अन्तर्गत नागरिकों को समता का अधिकार, धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर विभेद-प्रतिषेध का अधिकार, छूआछूत न किये जाने का अधिकार आदि दिए गए हैं। हमें इन अधिकारों की जानकारी अन्य सम्बन्धित को देते हुए उनकी प्राप्ति सुनिश्चित करने हेतु प्रयास करना चाहिए।

हमारा कर्तव्य है कि हम संविधान द्वारा प्रदत्त इन अधिकारों की जानकारी रखें तथा दूसरों की भावनाओं का आदर करते हुए इनका उपयोग करना सीखें। ऐसा भी न करें कि अधिकारों की आड़ में हम अपने कर्तव्यों को ही भुला बैठें। विद्यालय-महाविद्यालय स्तर पर पढ़ने वाले बालक-बालिकाएं संविधान के इन कानूनों की सामान्य जानकारी का उपयोग करते हुए जहां अपने जीवन को सुखमय बना सकते हैं, वहीं देश के लिए एक श्रेष्ठ नागरिक बनने की दिशा में भी एक कदम बढ़ा सकते हैं।

(लेखक योग्य शिक्षक होने के साथ ही प्रबुद्ध चिन्तक एवं समीक्षक हैं।)
-प्राध्यापक, रा.उ.मा.वि. तारानगर (चूरू)
मो. 9413888209

सपने, सपने और सपने

❑ डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

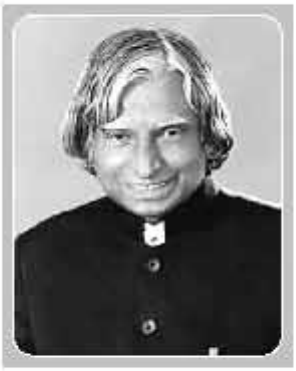

डॉ. अबुल पाकिर जैनुलाबदीन
अब्दुल कलाम
प्रसिद्ध वैज्ञानिक, प्रक्षेपास्त्र
(मिसाइल) के विशेषज्ञ।
देश में होने वाले रक्षा
अनुसंधान और विकास
के सूत्रधार।
सन् 1997 में
'भारत रत्न' से सम्मानित।
भारतीय गणतंत्र के
11वें राष्ट्रपति (2002-2007)

बड़ों के पत्र बच्चों के नाम

मेरे प्यारे बच्चो,

तुम्हारे दादा-दादी और माता-पिता ने बताया होगा कि भारत को आजादी कैसे मिली? 'हमें आजादी चाहिए।' इस भावना का बीज 1857 में बोया गया था। लम्बे वर्ष तक भारत के नेताओं और जनता ने इसे पाने के लिए कठिन परिश्रम और संघर्ष किया और आखिरकार ब्रिटिश राज से आजादी पा ली।

1947 में आजादी के उषाकाल में हमारे पास विज्ञान प्रौद्योगिकी, इतिहास, राजनीति और उद्योग में सर्वश्रेष्ठ नेता थे। जब मैं लड़का था, एक घटना ने मुझे प्रभावित किया था। इसे मैं आपको बताना चाहता हूँ। 15 अगस्त, 1947 को हाई स्कूल के मेरे अध्यापक श्री इय्यादोराई सोलोमन मुझे पंडित जवाहरलाल नेहरू का भाषण सुनवाने ले गए थे। आधी रात को उनका भाषण सुनकर हम रोमांचित हो उठे थे। हमारा लक्ष्य मिल गया था।

अगले दिन 16 अगस्त, 1947 को मुझे एक महान अनुभव हुआ। ऐसा अनुभव जिसे मैं विश्वविद्यालय शिक्षा का सबसे अच्छा अनुभव मान सकता हूं। तमिल अखबार के मुखपृष्ठ पर दो समाचार छपे थे। एक था, भारत के स्वाधीन होने और पंडित जी के भाषण के बारे में, दूसरा और सबसे प्रमुख समाचार जो मेरी स्मृति में सदा के लिए अंकित हो गया। वह था, महात्मा गांधी नंगे पैर घूम-घामकर, दंगा पीड़ित लोगों के दुख-दर्द बांट रहे थे।

वैसे तो राष्ट्रपिता होने के नाते 15 अगस्त, 1947 को महात्मा गांधी को सबसे पहले लाल किले पर तिरंगा फहराना चाहिए था, लेकिन उस समय वह लाल किले पर मौजूद नहीं थे। वह थे नोआखाली में। महात्मा गांधी अच्छाई, उच्च विचार और मनुष्य मात्र की भलाई की भावना के प्रतीक थे।

बच्चो, तुम्हारे सामने ऊँचा लक्ष्य है। छोटी बात सोचना अपराध है। मैं चाहता हूं तुम सपने देखो। सपने और सपने। सपने विचारों में बदलते हैं और विचार हमारे कार्यों के रूप में सामने आता है। तुम्हारा सपना ही हमारे देश को एक विकासशील राष्ट्र से विकसित देश के रूप में बदलेगा।

(ए.पी.जे. अब्दुल कलाम)

सफलता मंत्र

अनुशासन की महिमा

❒ संग्रामसिंह सोढ़ा

हमें अपने जीवन को सफल बनाना है तो अनुशासित, संयमित एवं नियंत्रित होकर एक सुव्यवस्थित ढांचे के अनुरूप चलना होगा क्योंकि हमारे जीवन में अनुशासन का बड़ा महत्व है। हमारा जीवन बिना मोरी वाला बन जाएगा।

अनुशासन के द्वारा सफलता के शिखर पर पहुँचा जा सकता है। सफलता की इस प्रथम सीढ़ी पर चढ़ने के लिए हमें सदा समय का सदुपयोग करते हुए जीवन की डगर को एक सार्थक मोड़ देना होगा। अनुशासित होकर हम अद्‌भुत आत्म-विश्वास एवं साहस के बल सही मायने में एक शाश्वत प्रतिभा द्वारा अपने जीवन को ऊंचाइयों के शिखर पर ले जा सकते हैं। अनुशासन वह है जो हमारे जीवन को नये आयामों के साथ आदर्श बना सकता है। जरूरत है इसे जीवन में उतारने की। अपने व्यवहार में लाने की।

अनुशासन शब्द अनु उपसर्ग के साथ शास् धातु व ल्युट प्रत्यय लगाकर बना है, इसका तात्पर्य हम नियंत्रण, नियमों का पालन तथा पीछे चलना, इन रूपों में ले सकते हैं। प्रसिद्ध विद्वान टी.पी. नन ने ठीक ही परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'अनुशासन वह शक्ति है जिसके द्वारा दुष्प्रवृत्तियों को रोक कर अव्यवस्था के स्थान पर व्यवस्था और कुशलता आती है। कुत्सित स्वकर्मों से चित्त को पूर्ण रूपेण हटा लेना ही अनुशासन है, क्योंकि मन रूपी देवता सभी सिद्धियों का दाता है।' यह सत्य है कि अनुशासन के द्वारा ही गुरु शिष्य को ईश्वर के दर्शन कराते हैं-'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े...।' सच्चा अनुशासन वही है जिससे व्यक्ति अपनी नैसर्गिक शक्तियों का उपयोग करना सीखें। अर्थात् अर्जित ज्ञानधन के द्वारा सोचने-समझने की शक्ति को आत्मसात कर सके। यही है जीवन में अनुशासन की सम्यक सार्थकता।

बालक जाने-अनजाने में परिवार, पड़ौस व वातावरण से अनुशासन की बातें सीख पाता है, जिसका उसे पता भी नहीं होता है परन्तु विद्यालय वह स्थान है जहाँ पर बालक औपचारिक रूप से अनुशासन की पहली सीढ़ी पर कदम रखता है। वहीं से बालक का समय पर विद्यालय जाना, गुरुजनों की इज्जत करना, समय पर दिया गया गृह कार्य करना, कक्षा में हमेशा अपनी पंक्ति में बैठना, जूते सही जगह पर उतारना। शिक्षक के कक्षा में पहुँचने पर अपने स्थान पर खड़े होकर अभिवादन करना। शाला में आए अतिथि का सम्मान करना आदि कई अनुशासन की बातें सीखता है।

बालकों में औपचारिक अनुशासन सिखाने में शिक्षक की बड़ी भूमिका मानी जाती है। जो अपने विद्यार्थियों में व्यावहारिक ज्ञान की बातें भी सिखाता है। शिक्षक ही उसे विद्यालय में विभिन्न सहगामी क्रियाकलापों द्वारा अनुशासन के गुर सिखाता है। बालक भी विद्यालय में खेल-खेलों द्वारा अनुशासन में रहने को सीख जाता है जिसे वह अपने दैनिक जीवन में उपयोग कर व्यवहार में अपनाने लग जाता है। अनुशासन की वजह से उसके जीवन में एक नया बदलाव आना स्वाभाविक है। अतः गुरु-शिष्य की सार्थक परम्परा ही अनुशासन के सृजन एवं पालन में सहायक सिद्ध होती है।

वैसे भी अनुशासन व्यक्ति के जीवन का प्रमुख हिस्सा है। जब कोई व्यक्ति अनुशासन को अपने जीवन में अपनाने लग जाता है तो वह दूसरों के लिए एक उदाहरण माना जाता है या यों कहें कि 'निज पर शासन फिर अनुशासन।' यहाँ विचार उभरता है कि अगर शिक्षक धन का लोलुप वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, यदि ट्यूशन प्रेमी हुआ तो बालकों में संतोष की प्रवृत्ति से युक्त अनुशासन का जागरण करने में असक्षम होगा, क्योंकि बालक भी जानते हैं-'परोपदेशे पाण्डित्यं सर्वाषां सुकरं नृणाम।'

हमारे चरित्र निर्माण में अनुशासन जैसे गुण की भूमिका सर्वोपरि मानी जाती है। या यों कहें कि सच्चरित्र के विकास के लिए अनुशासन की आवश्यकता जरूरी है। जीवन में अनुशासन, विनम्रता, ईमानदारी और परोपकार, इन चार के बिना सच्चरित्रता की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इन चार में भी अनुशासन का स्थान सर्वोच्च है। जिस मनुष्य में अनुशासन का सम्पुट नहीं है, वह चरित्रवान नहीं कहला सकता। नियम की शृंखला में बंधे जीवन को ही अनुशासनबद्ध जीवन की संज्ञा दी जाती है।

अनुशासन से मनुष्य देवत्व की ओर बढ़ता है। प्रकृति का कण-कण स्वयंमेव अनुशासित है। वायु, जल, सूर्य, चन्द्र आदि सभी नियमपूर्वक अनुशासनबद्ध चल रहे हैं। सृष्टि के सभी कार्य व्यवस्थित हैं। यदि प्रकृति क्षण भर के लिए अनुशासन विमुख हो जाए तो विश्व में विध्वंसकारी शक्तियों का ताडंव शुरू होने में देरी नहीं लगेगी। अतएव जीवन को सुन्दर, सर्वांगीण गुण सम्पन्न बनाने के लिए विद्यार्थी जीवन से ही अनुशासन की कसावट आवश्यक है। अनुशासनहीन विद्यार्थी जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो सकता। अनुशासन मनुष्यों में सद्‌भाव का प्रेरक विनय और शील का सृष्टा, साधना का सखा और स्वेच्छाचारिता का शत्रु होता है। हम जितने अधिक अनुशासित होंगे, उतने ही अधिक सफल होंगे। उसी प्रकार बिना आत्म संयम या अनुशासन के हम चरित्र निर्माण में सफल नहीं हो सकते। सभी महापुरुषों का जीवन प्रारम्भ से ही आत्म संयम की भित्ति पर अवस्थित रहा है जिसके बलबूते पर महानता की मंजिल पाने में कामयाब हुए।

जहां तक विद्यालयी अनुशासन भय से मुक्त हो तो अधिक प्रासंगिक रहेगा। इसके लिए स्वयं अनुशासित रहे, साथ में उनमें प्रारम्भ से ही स्वानुशासन की भावना विकसित करने की पहल होनी चाहिए। कई बार दण्डयुक्त भय वाला अनुशासन बच्चों पर दुष्प्रभाव को जन्म देता है। विद्यालय का वातारण भी उन्हीं की भावना के अनुसार ढालना पड़ेगा। अध्यापक के आदेश व्यावहारिक और स्वानुशासन के भाव जागृत करने वाले हों, तभी अनुशासन स्थायी रह सकेगा। अति कठोर अनुशासन से बचें ताकि

बच्चों में उलझन और विद्रोह के बीज अंकुरित न हो पाए। वैसे भी बालक मन व तन से कोमल होता है। अतः उनकी कोमलता को अनुशासन की कठोर रस्सियों में जकड़ कर बांधना, उसकी स्वभाविक चंचलता के साथ खिलवाड़ ही कहा जाएगा।

आमतौर पर अनुशासन बनाये रखने के नाम पर दण्ड भय का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। भय की वजह से बालक काफी देर तक चुपचाप सहमे से बैठे रहते हैं और शिक्षक को परेशान नहीं करते हैं। बालक बिना समझे शिक्षक की बात को स्वीकार कर लेते हैं जिससे भय की स्थिति में सीखने में आनंद व स्वतंत्र चिंतन के विकास की संभावनाएं कम हो जाती हैं। अति अनुशासन द्वारा पैदा भय का माहौल बालकों की जिज्ञासाओं, स्वभाविक रुझानों, सृजनशीलता, कल्पनाशीलता के विकास की संभावनाओं पर कुठाराघात कर उन्हें सत्ता के प्रति आज्ञाकारी बनाने के लिए प्रेरित करना है। समस्याग्रस्त बच्चों के लिए अति अनुशासन का प्रभाव उनकी प्रवृत्ति को संवेदनहीन बना देता है। वैसे भी अधिक अनुशासन और ज्यादा टोका-टोकी या बेहद हिदायतें बच्चे को पहले से प्रतिरोधी और उद्दण्ड बनाती है। इससे उनमें हीन भावना जन्म लेती है। कई बार ऐसे व्यवहार से बच्चा या तो मौन, शांत या निर्विकार हो स्वयं को हीन समझ अपना आत्मविश्वास खो बैठता है या प्रतिरोध स्वरूप अहंकारी, उद्दण्ड या अनुशासनहीन बन जाता है। ऐसी स्थिति में हमें बालमन की जिज्ञासा को समझते हुए उचित समय पर सही दिशा में मोड़ देने हेतु सकारात्मक सोच के सहारे प्रतिकूल मनोविज्ञान को अपनाकर सही मार्ग पर ला सकते हैं।

अनुशासन की समस्या विद्यार्थियों तक सीमित नहीं है। आज देश में भ्रष्टाचार और महंगाई की समस्या भी प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त अनुशासनहीनता के कारण पसर रही है। आज हमें बच्चों में पनपती कदाचारी एवं हीन प्रवृत्तियों के स्थान पर मानवता के श्रेष्ठ गुण नैतिकता के उदात्त भाव, लोकतांत्रिक आचार, उदार धार्मिक प्रवृति एवं वैचारिक उच्चता और जीवन में सरलता के गुण प्रतिष्ठित करने के लिए दृढ़ संकल्प लेना होगा, तभी जाकर हम अनुशासन द्वारा सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने में कामयाब होंगे।

सारांश में यह कहा जा सकता है कि हमारे जीवन में नैतिक गुणों का स्थान बहुत ऊँचा है। इन मानवीय मूल्यों के आधार पर मानव सफलता के सपनों को साकार कर सकता है। जिस प्रकार नारी के लिए मात्र पुरुष का शिष्टतापूर्ण उचित अनुशासन उसके घर को प्रगति की ओर ले जा सकता है। उसी प्रकार शिक्षक का भी शिष्ट व्यवहार एवं संयमित अनुशासन बच्चे के लिए उसे सफलता के शिखर की ओर ले जाता है। ऐसे में शिक्षकों का दायित्व बनता है कि वे अपने सान्निध्य में बालकों को अनुशासित रखकर समर्पित भाव से शिक्षा की सार्थकता हेतु जागरुक करे। उन्हें संबल देकर विद्या पूर्ण बनाएं।

अतः यह सर्वविदित है कि मानव के लिए 'अनुशासन सफलता की कुंजी है, जो उसे महानता की ओर अग्रेसित करता है, उद्भाषित करता है, सामर्थ्यवान एवं कारगर बनाता है।'

(लेखक हिन्दी व राजस्थानी के विद्वान है)
-सोढ़ाण लोक साहित्य सदन
चक सचियापुरा, पो. बज्जू (बीकानेर)-334305

इस माह का गीत

दीपक जलाना धर्म है

❑ गोपाल दास नीरज

जिन मुश्किलों में मुस्कुराना हो मना
उन मुश्किलों में मुस्कुराना धर्म है।

जिस वक्त जीना गैर मुमकिन सा लगे
उस वक्त जीना फर्ज है इन्सान का
लाजिम लहर के साथ है तब खेलना
जब हो समुन्दर पे नशा तूफान का
जिस वायु का दीपक बुझाना ध्येय हो
उस वायु में दीपक जलाना धर्म है

हो नहीं मंजिल कहीं जिस राह की
उस राह चलना चाहिए इंसान को
जिस दर्द से सारी उमर रोते कटे
वह दर्द पाना है जरूरी प्यार को
जिस चाह का हस्ती मिटाना नाम है
उस चाह पर हस्ती मिटाना धर्म है

आदत पड़ी हो भूल जाने की जिसे
हर दम उसी का नाम हो हर सांस पर
उसकी खबर में ही सफर सारा कटे
जो हर नजर से हर तरफ हो बेखबर
जिस आँख का आँखें चुराना काम हो
उस आँख से आँखें मिलाना धर्म है

जब हाथ से टूटे न अपनी हथकड़ी
तब मांग लो ताकत स्वयं जंजीर से
जिस दम न थमती हो नयन सावन झड़ी
उस दम हँसी ले लो किसी तस्वीर से
जब गीत गाना, गुनगुनाना जुर्म हो
तब गीत गाना गुनगुनाना धर्म है।

पुस्तकालय

ज्ञान के आगार हैं पुस्तकालय

❒ राजेन्द्र जोशी

विकास से तात्पर्य किसी प्रकार का भौतिक, औद्योगिक, आर्थिक विकास नहीं यह विकास तो मानव से सुमानव बनने का सफर है, जिसमें वह अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक संस्कारों एवं जीवन मूल्यों का निरन्तर परिमार्जन कर श्रेष्ठता को प्राप्त करे। यह चरम स्थिति उसे शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है। शिक्षा एवं मानव विकास एक दूसरे के पर्याय है। मानव विकास शिक्षा के बिना संभव नहीं है। यहां शिक्षा से हमारा तात्पर्य प्रमाण पत्र एवं उपाधियों से नहीं है वरन् उस शिक्षा से है जिसे व्यक्ति अपने जीवनमें धारण कर धर्म के वैदिक स्वरूप आधारित जीवन लक्ष्यों को प्राप्त कर अपने जीवन सफर की पूर्णता तक पहुंचे। यह उसे या श्रेष्ठ गुरु या पुस्तकों से ही प्राप्त हो सकता है। गुरु प्रत्येक व्यक्ति, आयु भेद, व्यक्ति की वैयक्तिक आवश्यकता प्रतिभा के अनुरूप मिलना कठिन है, मगर पुस्तकें इन समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुरूप पुस्तकें पुस्तकालय में उपलब्ध हो सकती है। इस अर्थ में पुस्तकालयों का महत्व अमूल्य हो जाता है।

पुस्तकालय जनचेतना के जागृत स्वरूप हैं। वे ऐसे माध्यम हैं जो जनसाधारण की अधिकाधिक ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा को जागृत करते हैं तथा उसकी पूर्ति भी करते हैं। पुस्तकालय वह मन्दिर है जहां पुस्तक रूपी देव अपने साधक के लिये सहज स्पर्श मात्र पर ही उपलब्ध है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ. रंगनाथन के अनुसार पुस्तकालयों के कार्य शैक्षणिक, सूचनात्मक, सृजनात्मक, राजनैतिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक एवं पुराविद है जो व्यक्ति की सहज बौद्धिक जिज्ञासा की पूर्ति सूचना के माध्यम से करता है। स्वस्थ जनमत का निर्माण करता है। आर्थिक कार्यों के अन्तर्गत विकसित तकनीक व उत्पादन की नवीन विधियों के संबंध में जानकारी प्रदानकरता है। सांस्कृतिक सूचना के द्वारा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृति, सभ्यता, कला व ज्ञान के अपरिमित भण्डार से परिचित कराता है। पुराविद कार्यों के अन्तर्गत प्राचीन साहित्य, ज्ञान, कला एवं सभ्यता एवं संस्कृति से संबंधित साहित्य, चित्र व चलचित्र उपलब्ध कराता है।

हमारे देश में पुस्तकालयों की परम्परा वैदिक काल से ही है। जब ऋषि-मुनियों ने अपने ज्ञान को ताड़ पत्रों पर अंकित किया। हमारे पूर्वजों ने उसे सहेजा तथा धरोहर के रूप में अगली पीढ़ियों को पुस्तकालय के रूप में सौंपा। राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में पुस्तकालयों की परम्परा हमें सदैव प्रभावित करती रही है। क्योंकि यहां पर शासन के अतिरिक्त गैर शासकीय क्षेत्र में पुस्तकालय एवं वाचनालय खोले गए हैं। भारत में बीसवीं शताब्दी में पुस्तकालय आन्दोलन तथा पुस्तकालय अधिनियम का सिंहावलोकन हुआ है। स्वतंत्रता से पूर्व बड़ौदा, आन्ध्रप्रदेश, पंजाब, मद्रास, बंगाल एवं बम्बई में पुस्तकालय आन्दोलन हुए थे परन्तु उस वक्त राजस्थान के क्षेत्र में कोई विशेष जानकारी नहीं मिलती। स्वतंत्रता के बाद के पुस्तकालय आन्दोलन में जन पुस्तकालय, शैक्षणिक-पुस्तकालय, विशिष्ट पुस्तकालय, विज्ञान साहित्य, डॉ. एस.आर. रंगनाथन एवं अन्य नेता एवं पुस्तकालय अधिनियम के माध्यम से कार्य प्रारंभ हुआ और उस समय राजस्थान में भी कई जगह पुस्तकालय आन्दोलन देखने को मिला। सन् 1983-84 में राज्य के लगभग सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शैक्षणिक पुस्तकालय स्थापित हो चुके थे। हालांकि इन सबका अपना स्तर था। उस समय हमारे प्रदेश में जन पुस्तकालय भी अनेक स्थानों पर प्रारंभ हो चुके थे परन्तु जन पुस्तकालयों की तुलना में इन पुस्तकालयों की स्थिति बहुत अच्छी थी। सन् 1956 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन हुआ और तभी से विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पुस्तकालयों को अनुदान दिया जाता रहा है परन्तु प्रदेश के अधिकतर ये पुस्तकालय केवल शैक्षणिक पुस्तकालयों के रूप में ही कार्य कर रहे हैं इनका लाभ सार्वजनिक रूप से जन-जन को प्राप्त नहीं हो रहा जबकि बड़े अनुदान के बावजूद इनको सार्वजनिक पुस्तकालयों के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।

राजस्थान में सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा का प्रचलन राजा-रजवाड़ों के समय से रहा है। रियासत काल के समय से उदयपुर, जयपुर, जोधपुर, खेतड़ी, भरतपुर, कोटा एवं बीकानेर आदि प्रमुख रियासतों में सार्वजनिक पुस्तकालयों की परम्परा थी। राजस्थान गठन के बाद राज्य सरकार ने इनका अधिग्रहण कर इनके विस्तार एवं विकास का जिम्मा लिया। प्रारंभ में माध्यमिक शिक्षा विभाग के अधीन 44 पूर्णकालिक सार्वजनिक पुस्तकालय कार्यरत थे किन्तु इनके विकास की धीमी गति को देखते हुए राज्य सरकार ने माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर के अधीन संपादित पूर्ण कालीन सार्वजनिक पुस्तकालयों के विकास का दायित्व भाषा विभाग को सौंपते हुए 31 जनवरी, 2001 को राज्यादेश जारी कर विभाग का नाम परिवर्तित करते हुए भाषा एवं पुस्तकालय विभाग कर दिया है।

विभाग ने सीमित साधनों एवं स्टाफ के बावजूद हिन्दीकरण की गति को निर्बाध बनाये रखते हुए राज्य में संचालित पूर्वकालीन सार्वजनिक पुस्तकालयों के सुदृढ़ीकरणएवं विकास का दायित्व भी निभा रहा है तथा पूर्व में संचालित 44 पुस्तकालयों से इनका गुणात्मक एवं संख्यात्मक विकास करते हुए पंचायत समिति स्तर तक सार्वजनिक पुस्तकालय प्रारंभ कराये गये तथा वर्तमान में विभाग के अधीन 276 पुस्तकालय संचालित है एवं गैरसरकारी 20 एवं पूर्वकालीन सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या 50 है तथा इनमें 18 लाख पुस्तकें मौजूद हैं। इन पुस्तकालयों में वर्तमान में पंजीकृत पाठकों की संख्या 9500 है।

हालांकि कुल पुस्तकों की संख्या को ध्यान में रखते हुए पंजीकृत (रजिस्टर्ड) पाठकों

की संख्या 9500 कम है इसे बढ़ाने के प्रयास होने चाहिए।

पुस्तकालयों का विवरण–

1. राज्य केन्द्रीय पुस्तकालय, जयपुर – 01
2. मण्डल स्तरीय सार्वजनिक पुस्तकालय –07
   (प्रत्येक संभाग मुख्यालय पर जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा, अजमेर,भरतपुर एवं बीकानेर)
3. जिला स्तरीय सार्वजनिक पुस्तकालय–33
4. तहसील मुख्यालय पर स्थित सार्वजनिक पुस्तकालय – 09
   उपर्युक्त सभी 50 सार्वजनिक पुस्तकालय पूर्वकालिक कार्यरत हैं।
5. पंचायत समिति सार्वजनिक पुस्तकालय –228

राजस्थान में पंचायत समिति मुख्यालयों पर स्थित 228 सीनियर माध्यमिक विद्यालयों में विद्यालय समय पश्चात दो घण्टे के लिए अंशकालीन सार्वजनिक पुस्तकालयों का मुख्य कार्य आमजन को सार्वजनिक पुस्तकालय सेवा के माध्यम से अभिरुचि एवं सम सामयिक एवं आधुनिक विषयों पर उपलब्ध पुस्तकें/ साहित्य निःशुल्क उपलब्ध करना है।

सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए वित्तीय प्रबन्धनः–

1. आयोजना भिन्न एवं आयोजना मद।
2. लेवी राशि–माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर तथा राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल, जयपुर द्वारा बिक्री की जाने वाली पुस्तकों के मूल्य की 3 प्रतिशत राशि लेवी राशि प्राप्त होती है। इसी राशि से वर्तमान में सार्वजनिक पुस्तकालयों का सर्वांगीण विकास किया जा रहा है। लेवी राशि प्रतिवर्ष प्राप्त हो रही है।
3. 11वें वित्त आयोग से प्राप्त राशि
4. राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान कोलकत्ता की मैचिंग एवं नॉन मैचिंग योजनाओं के अन्तर्गत सहायता प्राप्त।

पश्चिमी देशों में प्रजातन्त्र औद्योगिक क्रान्ति, समाज शिक्षा एवं सर्वतोमुखी शिक्षा का परिणाम था, परन्तु भारत के प्रजातन्त्र की नींव बहुत बड़े निरक्षर समुदाय पर रखी गई थी जो सार्वजनिक ग्रन्थालय की उपयोगिता को न समझ सकते थे और न ही सराह सकते थे। अतः प्रजातंत्र का समाजीकरण सार्वजनिक ग्रन्थालय द्वारा पोषित सर्वतोमुखी शिक्षा के माध्यम से होना ही राष्ट्र हित में है। देश में शिक्षा का प्रतिशत पिछले 5–6 दशकों में अवश्य बढ़ गया है परन्तु जिस तीव्र गति से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उसके कारण निरक्षरों की संख्या में भी असीमित वृद्धि हो गई है। प्रजातन्त्र में बहुमत की आकांक्षाऐं सर्वोपरि होती है। अतः उस देश में जहां शैक्षणिक पिछड़ापन है एवं अधिकांश जन समुदाय निरक्षरता के अन्धकार में लिप्त है वहां सार्वजनिक ग्रन्थालयों के विकास की मांग का प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए साक्षरता का अभाव सार्वजनिक ग्रन्थलायों के विकास में बाधक है।

पहले साक्षरता का प्रसार अथवा पहले सार्वजनिक ग्रन्थालय अर्थात् पहले साक्षरता का प्रसार हो तत्पश्चात् सार्वजनिक ग्रन्थालय स्थापित हो अथवा साक्षरता के प्रसार एवं स्थायित्व हेतु पहले सार्वजनिक ग्रन्थालय स्थापित किये जायें। यह दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। देश में शत प्रतिशत या 80 प्रतिशत साक्षरता तक का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ग्रन्थालयों के विकास को रोकना बुद्धिमानी का काम नहीं होगा। इसलिए अविलम्ब ही सभी राज्यों में पुस्तकालय अधिनियम पारित किये जाने चाहिए जिससे उन्हें विकास, व्यवस्था एवं प्रसार के लिए आवश्यक वैधानिक संरक्षण प्राप्त हो सकेगा। इसके अतिरिक्त बालकों, व्यस्कों, नवसाक्षरों आदि के लिए उपयुक्त साहित्य की रचना हेतु सरकार द्वारा लेखकों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। सभी वर्गों एवं वयों के व्यक्तियों के लिए उपयुक्त साहित्य सृजन को प्रोत्साहित करने हेतु केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों, यू.जी.सी., आई.सी.एस.आर, विश्वविद्यालयों आदि को योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाने चाहिए। जिससे अच्छी एवं सस्ती पुस्तकें समाज के सभी व्यक्तियों को प्राप्त हो सके। सामाजिक जीवन के पारम्परिक तरीकों में भी परिवर्तन आवश्यक है जिससे प्रत्येक व्यक्ति का जीवन चुनौतियों से परिपूर्ण हो और उसे जीवन में आगे बढ़ने के लिए निरन्तर शिक्षा एवं सूचना प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक ग्रन्थालयों को उपयोग करना आवश्यक जान पड़े। इनमें सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थालय अधिनियम है जिसके पारित होने पर सार्वजनिक ग्रन्थालयों की स्थापना, विकास एवं प्रसार होने पर शेष अन्य बातें स्वयंमेव आगे से आगे पूर्ण होती जाएगी।

राजस्थान में गत वर्षों पूर्व प्रत्येक गांव में महात्मा गांधी सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालयों की स्थापना राजस्थान सरकार ने की थी इनकी संख्या 9000 से भी अधिक थी, यह एक अच्छा प्रयास था परन्तु इसको केवल सतत शिक्षा कार्यक्रम से ही जोड़ा गया इस पर राज्य सरकार ने किसी भी प्रकार के संसाधन उपलब्ध नहीं करवाये और तो और प्रदेश में जब सतत शिक्षा कार्यक्रम भारत सरकार ने बन्द कर दिया तो यह पुस्तकालय भी बन्द हो चुके थे।

प्रदेश में जहां तक सरकारी पुस्तकालयों के संबंध में स्पष्ट है कि महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में स्थापित पुस्तकालयों को सीमित रखा गया है इनका उपयोग वर्तमानमें केवल दो–दो शैक्षणिक पुस्तकों के आवंटन तक ही हो रहा है जबकि अनेक बार सरकारें यह घोषणा भी करती है कि इन पुस्तकालयों को जन पुस्तकालय–सार्वजनिक पुसतकालय बनाये जाएगे। शिक्षण संस्थाओं के समय के उपरान्त आम अवाम इसका उपयोग कर सकेंगे परन्तु ऐसा व्यवहारिक रूप में नहीं होने से उनकी स्थिति में कोई खास परिवर्तन नहीं आ रहा है।

पुस्तकालयों की वर्तमान दशा में हालांकि कुछ सार्वजनिक सरकारी पुस्तकालयों की दशा बहुत उजली दिखती है जो कि मील का पत्थर साबित हो रही है जैसे बीकानेर का मण्डल पुस्तकालय एवं जयपुर का पुस्तकालय। गैर सरकारी पुस्तकालयों के आंदोलन को भी फिर से सोचने की जरूरत है क्योंकि गैर सरकारी पुस्तकालय केवल वाचनालय के रूप में ही काम आ रहे हैं। पोकरण (जैसलमेर) के निकट भादरिया माताजी मंदिर के निकट स्थित भादरिया महाराज पुस्तकालय भी पुस्तक संग्रह, एवं भवन की दृष्टि से अद्वितीय है जहां एक साथ हजारों पाठक पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं। दी किंग एम्परर जॉर्ज पंचम सिल्वर जुबली पुस्तकालय राज्य का एक श्रेष्ठ पुस्तकालय था जिसका समुचित विस्तार किया गया। फलतः 1942–43 तक इसमें उपलब्ध पुस्तकों की

संख्या एवं आने वाली विविध पत्रिकाओं की संख्या क्रमशः8,391 तथा 98 तक पहुंच गई थी। राज्य के अन्य 14 निजी पुस्तकालयों को उनकी महत्ता के अनुरूप एक निश्चित राशि का प्रति माह अनुदान दिया जाता था। बीकानेर के अनूप संस्कृत पुस्तकालय मूल पाण्डूलिपियों के बहूमूल्य भण्डार के रूप में अपनी अलग पहचान रखता है।

अतः पुस्तकालयों की दशा सुधारने व उसे नई अरूणिमा युक्त दिशा की ओर अग्रसर करने के लिए यह आवश्यक है कि जन आन्दोलन के रूप में पाठकों को इलेक्ट्रोनिक माध्यमों के प्रति अत्यधिक झुकाव को कम कर पुस्तकों की ओर आकर्षित कर उन्हें पुस्तकालय से जोड़ा जाये, ताकि वर्तमान तीव्र एवं भौतिकवादी जीवन में बढ़ते तनाव लक्ष्यहीन युवा जीवन की व्यर्थता को ढ़ोते हुए प्रौढ़ों को पुनः एक उद्देश्य युक्त, ऊर्जायुक्त ज्ञान से परिपूर्ण जीवन मूल्यों, संस्कारों से समृद्ध जीवन जीने का मार्ग, मोक्ष का मार्ग, कर्त्तव्यों की पूर्णता का जीवन मिले। पुस्तकालयों में ज्ञान बिखरा पड़ा है, बस उसकी ओर महज बांह फैलाने की जरूरत है, पुस्तकालयों की देहरी तक जाने की जरूरत है, आखिर यह तो हमें ही करना पड़ेगा।

-तपसी भवन, नत्थूसर बास, बीकानेर
मो. 9829032181

सूचना

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (CCRT) द्वारा माह दिसम्बर, 2013 में नई दिल्ली, उदयपुर एवं हैदराबाद में आयोज्य प्रशिक्षण शिविर में राज्य से अधिकतम 20-20 शिक्षकों का मनोनयन किया जाना है। इच्छुक पात्र शिक्षक **15 नवम्बर, 2013** तक अपने आवेदन पत्र संस्था प्रधान से अग्रेषित करवा कर वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका, बीकानेर को डाक अथवा ई-मेल opsaraswat58@gmail.com पर भिजवाएं।

-नोडल अधिकारी (CCRT)

मंजिल पाना मुश्किल नहीं

❒ नीना राठौड़

हर विद्यार्थी, हर युवा ही नहीं लगभग सभी लोग जीवन में ऊँची से ऊँची मंजिल का स्वप्न देखते हैं। सपने लेना बुरी बात नहीं, आकांक्षा को महत्वाकांक्षा बनने दो, अपने सपने को अपना अरमान बनने दो। सपनों के सम्बन्ध में तो यही कहना चाहूंगी कि :

सपने आँखों में मत बसाओ,
ये आंसुओं में बह जायेंगे,
सपनों को तो दिल में बसाइए,
हर धड़कन के साथ याद आयेंगे।

सकारात्मक बनिए : अपने लक्ष्य के साथ अपना दृष्टिकोण सकारात्मक रखो। सकारात्मक विचार आपको आगे बढ़ने की सतत प्रेरणा देते हैं, आपकी आस्था और आशा को बनाये रखते हैं और आगे बढ़ने का हौंसला देते रहते हैं। नकारात्मक विचारों को अपने मन-मस्तिष्क में स्थान न दें। नकारात्मक व्यक्तियों से भी यथासंभव दूर ही रहें अन्यथा वे अपने नकारात्मक अनुभवों से आपको अपने लक्ष्य से विचलित कर देंगे। वे आपकी कमियों का जिक्र करेंगे, दूसरों की बुराइयाँ करेंगे। आप में निराशा का बीज अंकुरित कर सकते हैं। हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण वालों से ही संपर्क रखो, वे आपका हर पल हौंसला बढ़ाते रहेंगे, निराशा को पास भी नहीं फटकने देंगे। आपके भीतर निरंतर सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होगी जो आपके आगे बढ़ने में सहायक होगी।

मंजिल आसान कैसे हो : यदि आप हर राह पर बिना किसी रुकावट के सफलता चाहते हो तो अपने लक्ष्य को सोच समझकर अपनी सामर्थ्य और क्षमता के अनुरूप तय करो और फिर योजनाबद्ध तरीके से एकाग्र मन मस्तिष्क से पूरी रुचि और धैर्य के साथ सहज गति से आगे बढ़ते चलो। प्रारंभ से ही लापरवाही नहीं दिखायें। अपने प्रयास में नियमित रहें। कड़ी मेहनत के बावजूद भी किसी कारण से असफलता भी मिल सकती है। निराश न होकर असफलता का कारण ढूंढ कर भूल सुधारें और नए जोश से आगे बढ़े। किसी ने कहा भी है, ''असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो, क्या कमी रह गई देखो और विचार करो, जब तक न सफल हो नींद चैन की त्यागो तुम, संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम, कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती'। यह भी याद रखिये कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता। अपनी मंजिल के बारे में स्पष्ट और सतर्क होना चाहिये। हर कदम पर आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है।

एकाग्रता : एकाग्रता से तात्पर्य है पूरी लगन और पूरा ध्यान। हाँ, यह सच है कि बिना रुचि के किसी भी काम के प्रति एकाग्र होना सहज नहीं। इसलिए अपना लक्ष्य-निर्धारण से पूर्व यह निश्चित कर लें कि यह कार्य आपकी आत्मिक रुचि और उपयोग का है। आप सही सक्षम गाइड अर्थात् पथ-प्रदर्शक एवं परामर्शदाता की सलाह लें, अन्य की बातों पर ध्यान न दें और निरुत्साहित नहीं हों।

समय व्यर्थ न गंवाएं : बड़े सपने वाले, बड़े लक्ष्य वाले महत्वाकांक्षी लोग समय का मूल्य समझते हैं। युवाओं को ये शब्द याद रखने चाहिए-''दे रही सीटी समय की रेल ना रुक पायेगी, यश सफलता सम्पदा घर बैठे नहीं मिल पायेगी। उठो, अपनी शक्ति का जौहर दिखाओ विश्व को, अन्यथा चढ़ती जवानी शर्म से झुक जायेगी।''

समय-प्रबन्धन पर भी ध्यान देना है इससे सभी काम समय पर होते चले जायेंगे। कार्य की वरीयता को ध्यान में रखते हुए सभी कामों में पूरे समन्वय के साथ चलें तो निश्चित ही आप अपने विशिष्ट लक्ष्य को जरूर प्राप्त कर लेंगे।

प्रेरणास्रोत शब्द : प्रेरित प्रोत्साहित बने रहने के लिए इन शब्दों को याद रखें-''अनंत शक्ति संपूरित मानव, जो भी चाहे कर सकता है,बढना चाहे बढ़ सकता है, चढ़ना चाहे चढ सकता है। दूरी नहीं रोक पाती है, कठिनाई खुद हट जाती है, बिना थके, बिना रुके जो बढ़ता जाये, तो मंजिल स्वयं चली आती है।।''

दृढ संकल्प के सामने सभी मुश्किलें समर्पण कर देती हैं। अतः अगर 'इरादों में हकीकत और हौसलों में जलजला हो' तो चलो, बढ़ते चलो मंजिल आपकी ही है।

-प्राचार्या, टैगोर विद्या भवन,
एम.एस.एस. कॉलोनी, शास्त्री नगर, जयपुर
मो. 9549299991

पुस्तकों की आवश्यकता

❒ अतुल चतुर्वेदी

युवा, ऊर्जावान एवं सदैव नवाचारोन्मुख भरतपुर के जिला कलक्टर श्री नीरज के. पवन ने गत दिनों एक आदेश प्रसारित किया। अपनी श्रेष्ठ प्रशासनिक शैली के कारण प्रायः मीडिया में चर्चित रहने वाले जिला कलक्टर महोदय के इस आदेश को मीडिया में पर्याप्त कवरेज नहीं दी गयी जबकि इसकी चर्चा तो व्यापक रूप में की जानी चाहिए थी। क्योंकि उनका आदेश न केवल उनकी उन्नत सोच का प्रतिबिम्ब है बल्कि इस आदेश से सामाजिक उन्नति एवं विकास की आशा भी की जा सकती है।

जिला कलक्टर ने आदेश दिया है कि 'शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों में आने वाले मुख्य अतिथि आदि को तस्वीरों, मूर्तियों के स्थान पर शिक्षाविदों तथा साहित्यकारों की पुस्तकें भेंट की जाएँ।' वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस आदेश की प्रासंगिकता और उपयोगिता सर्वाधिक है क्योंकि हम इस समय सामाजिक परिवर्तन के उस युग में है जहाँ कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि इलैक्ट्रोनिक मीडिया प्रिंट मीडिया से अधिक प्रभावी बन गया है।

यद्यपि पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का अपना विशिष्ट महत्व है और यह कभी भी न्यून नहीं हो सकता तथापि अगर इसी प्रकार पुस्तकों के अध्ययन की प्रेरणा प्रशासनिक अधिकारियों तथा प्रबुद्धजनों द्वारा दी जाती रहे तो पुस्तकों का और पुस्तक प्रणयन करने वाले रचनाधर्मी रचनाकारों का सम्मान और उत्साह निश्चय ही बढ़ता रहेगा और श्रेष्ठ साहित्य सृजन अनवरत रूप से होता रहेगा।

प्राचीनकाल से लेकर अर्वाचीन युग तक पुस्तकों का महत्व निर्विवाद रहा है। एक आख्यान की प्रायः चर्चा होती है कि एक बार एक गुरु अपने तीन शिष्यों के साथ पुस्तकों का ढेर लेकर नाव से यात्रा कर रहे थे। अचानक नाव में नीचे छेद से थोड़ा-थोड़ा पानी आने लगा तो एक-एक करके तीनों शिष्य पानी में डूब गये लेकिन उन्होंने पुस्तकों को नष्ट नहीं होने दिया। उनके गुरुजी सारी पुस्तकें लेकर सुरक्षित नदी पार कर गए। वे सभी शिष्य पुस्तकों के महत्व से भलीभांति परिचित थे। अतः अपना बलिदान देकर भी उन्होंने पुस्तकों की रक्षा की। पुस्तकों के प्रति इतना प्रेम और समर्पण वर्तमान समय में कम ही दिखायी दे रहा है।

वर्तमान युग में बच्चे ही नहीं अपितु माता-पिता भी प्रायः टेलीवीजन, कम्प्यूटर और लेपटॉप के सामने बैठे नजर आते हैं। समाचार चैनलों से समाचार सुने जाते हैं और इन्टरनेट द्वारा परोसी जाने वाली जानकारियों को 'सेव' किया जाता है। एक नहीं अनेक समाचार चैनल हैं। इन चैनलों पर समाचारों की समीक्षा तो उत्तम तरीके से की जाती है और जानकारी भी व्यापक रूप से दी जाती है। परन्तु यह पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के समान व्यक्ति के बौद्धिक विकास में सहायक नहीं है।

पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तक पढ़ते समय व्यक्ति धीमे-धीमे अध्ययन करता है। ऐसा करने से उसकी बौद्धिक क्षुधा की निवृति ही नहीं होती अपितु उसकी चिन्तन शक्ति का भी विकास होता है जो विभिन्न टीवी चैनलों द्वारा धड़ाधड़ प्रस्तुत की जा रही सूचनाओं, समाचारों एवं जानकारियों से संभव नहीं होता। टीवी पर रामचरितमानस सुनना और स्वयं अध्ययन करने में कितना अन्तर है, इसे अध्ययन करके ही जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त अभिव्यक्ति कौशल का विकास भी पुस्तकों तथा पत्र-पत्रिकाओं के अध्ययन से ही संभव होता है। महान रचनाकारों की रचनाओं का आनन्द उनकी लिखित पुस्तकों को पढ़कर ही लिया जा सकता है क्योंकि प्रसिद्ध विद्वान रस्किन ने लिखा है-''आदर्श काव्य ग्रन्थ शब्दशः नहीं वरन अक्षरशः पठनीय होते हैं।''

''मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूँगा।'' किसी विद्वान का उक्त कथन पुस्तकों को महत्व प्रकट करने में पर्याप्त समर्थ है। श्रेष्ठ पुस्तक साथ हो तो व्यक्ति सब भूल जाता है। महान् कवि रवीन्द्रनाथ टेगौर के एक बार एक फोड़ा हो गया। डॉक्टरों ने छोटा सा ऑपरेशन करने से पूर्व उन्हें बेहोश करना चाहा तो टेगौर ने मना कर दिया। उन्होंने कहा, ''मुझे मेरी 'गीतांजलि' दे दो। मैं पढ़ना शुरू कर दूं फिर आप ऑपरेशन कर लेना। मुझे कोई कष्ट नहीं होगा।'' ऐसा ही हुआ, महाकवि ने पुस्तक पढ़ना प्रारम्भ किया और ऑपरेशन पूरा होने तक उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई। यह श्रेष्ठ पुस्तकों का महत्व है। लार्ड वेकन ने सही ही लिखा-Some Books are to be tasted, others to be swallowed and few to be chewed and digested अर्थात् कुछ पुस्तकें मात्र चखने के लिए होती है। कुछ निगलने के लिए होती हैं। लेकिन कुछ पुस्तकों को चबाचबा कर पचाया जाता है। श्रेष्ठ पुस्तकों को गहराई से पढ़ना आवश्यक होता है।

आज छात्र ही नहीं शिक्षक भी अध्ययन से दूर होते जा रहे हैं। कविवर कालिदास ने लिखा 'लब्धास्यदोस्मीति विवादभीरोस्तितिक्षमाणस्य परेण निन्दाम्। यस्यागमः केवल जीविकायै तं ज्ञानपण्यं वणिजं वदन्ति।। जो शिक्षक नौकरी प्राप्त करने के बाद शास्त्रार्थ से दूर भागता है। दूसरों के निन्दा करने पर भी चुप रहता है। केवल पेट भरने के लिए पढ़ाता है, ऐसा शिक्षक तो ज्ञान बेचने वाला व्यापारी है वह शिक्षक की उपाधि के लायक नहीं है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि न केवल छात्रों को अपितु शिक्षक समाज को भी पुस्तकों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया जाए ताकि शिक्षक की गरिमा बनी रहे। शिक्षक के लिए निरन्तर स्वाध्याय में निरत रहना आवश्यक है। पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान स्थायी तथा उपयोगी होता है। 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः' शास्त्रीय कथन स्वाध्याय के महत्व को निरूपित करता है और सत्य ही है-'Self study is the best study.'

-प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि. जाटौली रथवान, भरतपुर
मो. 9460683595

वोट हमारा है अधिकार,
कभी ना करें इसे बेकार।

❑

18 वर्ष की उम्र कर ली पार,
मिला वोट का अब अधिकार।

सफलता के सोपान

नुस्खे उत्तम परीक्षा परिणाम के

❒ गजेन्द्र श्रीपत पुरोहित

पाठ्यक्रम अनुसार शिक्षण कराते समय मुख्य ध्येय यही रहता है कि अर्द्धवार्षिक, वार्षिक परीक्षा तक निर्धारित पाठ्यक्रम निर्धारित समय में येन-केन-प्रकारेण पूर्ण कर दिया जाए, ताकि परीक्षा के दौरान प्रश्न-पत्र हल करते समय छात्र यह समस्या नहीं रख सकें कि कुछ पाठों का शिक्षण नहीं कराने से उनके प्रश्न छूट गए एवं परीक्षा परिणाम पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

विद्यालयों में शिक्षकों की कमी रहने, अन्य कई गतिविधियां कराने के कारण पर्याप्त शिक्षण कालांश नहीं मिलने पर पाठ्यक्रम पूर्ण कराना भी संस्था प्रधान के लिए चुनौतीपूर्ण हो जाता है। ऐसी स्थिति में शीघ्रता से पाठ्यक्रम पूर्ण कराने में ही बुद्धिमता समझी जाती है।

अनिवार्य एवं निःशुल्क बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के लागू हो जाने से किसी छात्र को आठवीं कक्षा तक अनुतीर्ण करने का प्रावधान नहीं है। ऐसी स्थिति में कई छात्र-छात्राओं का शिक्षण स्तर संतोषप्रद नहीं होने पर भी उन्हें कक्षा 9वीं में प्रवेश देना पड़ता है। इससे कक्षा 10 में बोर्ड परीक्षा तक उनके शैक्षिक स्तर में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाता। अंग्रेजी, गणित, विज्ञान जैसे विषयों में कई छात्रों के अनुत्तीर्ण हो जाने से विद्यालय परीक्षा परिणाम में गिरावट चिन्ता का विषय बनता जा रहा है।

अपेक्षा यही की जाती है कि एक पाठ की विषय-वस्तु कक्षा के सभी छात्रों को समझ में आने के बाद ही अगले पाठ का शिक्षण कराया जाए, लेकिन व्यवहार में ऐसा नहीं हो पाता। कक्षा में ऐसे छात्र जिनका शैक्षिक स्तर संतोषप्रद नहीं होता, उनकी शिक्षण में रुचि नहीं बन पाती। अध्यापकों द्वारा पाठ्यक्रम पूर्ण कराने के ध्येय से बालकेन्द्रित शिक्षा के लिए छात्रों से अधिकाधिक प्रश्नोत्तर पूछने के स्थान पर अध्यापक कथन से, बिना सहायक सामग्री के शिक्षण कराने से कमजोर छात्रों की शिक्षण में रुचि व सहभागिता नहीं बन पाती। कमजोर छात्र शंका समाधान हेतु अध्यापक से प्रश्न नहीं पूछते। इससे पाठ्यक्रम पूर्ण हो जाने के बाद भी अंग्रेजी, गणित, विज्ञान जैसे विषयों का स्तर शोचनीय ही रहता है। यदि विद्यालय में विषयाध्यापकों एवं प्रधानाध्यापक के पद रिक्त नहीं है तो कई प्रकार की समस्याओं के होते हुए भी सकारात्मक सोच के साथ प्रधानाध्यापक-अध्यापक छात्र हित में मनोयोग से पूरे प्रयास करें, तो माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का परीक्षा परिणाम संख्यात्मक व गुणात्मक दृष्टि से सुधारा जा सकता है। जहाँ विषयाध्यापकों की कुछ कमी हों, वहाँ प्रधानाध्यापक को अपने ज्ञान के आधार पर या बी.ए.एम.ए. के विषयों की जानकारी के आधार पर शिक्षण कराना चाहिये। विभाग के निर्देशानुसार प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य को दो शिक्षण कालांश लेने चाहिए।

मेरे द्वारा कक्षा 12वीं में इतिहास, राजनीति विज्ञान में व्याख्याता के पद रिक्त रहने पर शिक्षण कराते समय जो प्रयास करके सुखद अनुभव प्राप्त किये उनका उल्लेख करना समीचीन समझता हूँ। यदि इनको शिक्षण के समय दिल से सत्रपर्यन्त अपनाया जाये तो कक्षा 10 व 12 के परीक्षा परिणाम में सुखद सुधार लाया जा सकता है।

1. संस्थाप्रधान सत्रारम्भ के साथ स्टाफ बैठक रखकर सभी विषयाध्यापकों को अपने-अपने विषयों के परीक्षा परिणाम के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु प्रेरित करें। प्रयास यह रहे कि गत वर्ष के परीक्षा परिणाम से अधिक का लक्ष्य निर्धारित करें। यदि किसी विषय का परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा है तो गुणात्मक दृष्टि से अच्छा रखने का लक्ष्य रखा जाये। पूर्व में यदि परीक्षा-परिणाम 30 प्रतिशत से कम रहा है तो 60-70 प्रतिशत परीक्षा परिणाम रखने का लक्ष्य रखा जाये ताकि 50-60 प्रतिशत के करीब परीक्षा-परिणाम आ सकें।

2. विषयाध्यापक भी सत्रारम्भ में या प्रवेश कार्य पूर्ण हो जाने के बाद कक्षा 10 व 12 के छात्रों को अपने विषय के परीक्षा परिणाम के लक्ष्य निर्धारित करने हेतु प्रेरित करें। विषयाध्यापक अपनी डायरी में या फाइल में निम्न प्रारूप में यह सूचना रख सकता है-

1-छात्र का नाम, 2-पिता का नाम 3-पता, 4-गत कक्षा (9-11) परीक्षा परिणाम, 5-निर्धारित लक्ष्य (कक्षा 10-12) 6-छात्र के हस्ताक्षर, 7-अभिभावक के हस्ताक्षर व मोबाईल नंबर, 8-छात्र के प्राप्तॉक प्रथम, द्वितीय व तृतीय परख व अर्द्धवार्षिक परीक्षा, 9-कक्षा में छात्र का स्थान, 10-छात्र के निर्धारित लक्ष्य से प्राप्तांक कम/अधिक, 11-बोर्ड परीक्षा के प्राप्तांक, 12-विशेष विवरण में छात्र के प्राप्तांक निर्धारित लक्ष्य से कम-बराबर अधिक।

छात्रों का लक्ष्य निर्धारित करते समय उनकी घरेलू परिस्थिति/शिक्षण का वातावरण सुविधा आदि का भी ध्यान रखा जाना चाहिए। छात्रों को गत कक्षा में (विषयानुसार) प्राप्तांकों से 20-30 प्रतिशत अंक ज्यादा लाने का लक्ष्य निर्धारित करने हेतु प्रेरित करना चाहिए। छात्रों को स्वैच्छा से सोचने हेतु 2-4 दिन का समय दे देना चाहिए। इससे छात्र सत्रारम्भ के साथ ही विषयगत शिक्षण के प्रति गंभीर हो सकेंगे। ऐसा अनुभव में आया है कि कमजोर छात्र सत्र-पर्यन्त बिना लक्ष्य के विद्यालय में आते है एवं शिक्षण के प्रति पूर्ण रुचि नहीं रखते। परीक्षा के कुछ दिन पूर्व ही पासबुक आदि के सहारे अनुतीर्ण नहीं होने के ध्येय से तैयारी करते है। नकल के सहारे पास होने की भी कोशिश करते है।

3. संस्थाप्रधान भी सभी विषयाध्यापकों द्वारा छात्रों से निर्धारित किये गये लक्ष्यों के आधार पर कक्षा के परीक्षा-परिणाम का लक्ष्य निर्धारित कर निम्न प्रारूप में कक्षावार सूचना रख सकता है-

1. छात्र का नाम 2. पिता का नाम व पता 3. कक्षा 10 व 12 में छात्र द्वारा निर्धारित लक्ष्य 4. छात्र के हस्ताक्षर 5. छात्र के अर्द्धवार्षिक परीक्षा तक के प्राप्तांक 6. निर्धारित लक्ष्य की स्थिति कम-बराबर-अधिक 7. वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांक के आधार पर लक्ष्य से कम-बराबर-अधिक।

प्रधानाध्यापक को समय-समय पर निर्धारित लक्ष्य से कम अंक लाने वालों को प्रेरित करना चाहिये एवं निर्धारित लक्ष्य से अधिक अंक लाने वाले छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए। अभिभावक बैठक में विषयाध्यापकों को प्रति छात्र की स्थिति पर प्रकाश डालना चाहिए। यदि छात्र लक्ष्य से दूर है तो मिलकर प्रयास करने चाहिए।

विषयाध्यापक शिक्षण कराते समय निम्नलिखित क्रिया-कलाप करें तो छात्रों की सहभागिता बढ़ाकर छात्रों को निर्धारित लक्ष्य तक अंक प्राप्त करने में समर्थ बनाया जा सकता है-

1. विषयाध्यापक कमजोर छात्रों को जो ऊँचा सुनते हों, जिन्हे श्यामपट्ट कार्य पढ़ने में कठिनाई आती हो तो उन्हें कक्षा में आगे बैठाने की व्यवस्था आवश्यक रूप से करें।
2. अध्यापक कथन के साथ प्रश्नोत्तर विधि का प्रयोग करें।
3. यथा संभव सहायक सामग्री का प्रयोग शिक्षण में करें।
4. कमजोर छात्र अनुपस्थित रहता है तो उसकी वास्तविक स्थिति का पता लगाकर छात्र को अधिकाधिक उपस्थिति देने हेतु प्यार से प्रेरित करें।
5. श्यामपट्ट का सार्थक उपयोग करें एवं कमजोर छात्रों को श्यामपट्ट पर प्रश्न हल करने, उत्तर लिखने का अवसर अवश्य दें।
6. कालांश समाप्त होने से 5-7 मिनिट पूर्व पढ़ाये गये पाठ्यवस्तु से संबंधित प्रश्न होशियार छात्रों को पूछने के साथ-साथ कमजोर छात्रों से पूछें। कमजोर छात्र उत्तर बताने की स्थिति में नहीं हो तो कक्षा में अन्य होशियार छात्र से प्रश्नोत्तर पूछकर शीघ्र ही कमजोर छात्र से पुनः प्रश्नोत्तर पूछा जाए। होशियार व कमजोर छात्र द्वारा प्रश्न का उत्तर सही बताने पर अच्छा, सही, बहुत अच्छा, वेरी गुड जैसे शब्दों से पुनर्बलन आवश्यक रूप से करें। इससे मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर छात्र होशियार छात्र के उत्तर को ध्यान से सुनेंगे एवं अपनी बारी आने पर सही उत्तर बताने हेतु उत्साह से हाथ खड़े करेंगे। अध्यापक द्वारा शिक्षण कराते समय रुचि रखते हुए सुनेंगे, देखेंगे।
7. अगले दिन शिक्षण कराने से पूर्व 5-7 मिनिट कल पढ़ाये गये विषय-वस्तु से संबंधित 5-7 प्रश्नोत्तर आगे बिठाये गये छात्रों से पूछे जाने चाहिए। यदि वे बताने में सफल नहीं होते है तो होशियार छात्रों को अवसर देना चाहिए। प्रति कालांश शुरू के 5-7 मिनिट व अंत के 5-7 मिनिट आवृति, पुनरावृति के प्रश्नोत्तर में लग जाने से शिक्षण कार्य 20-25 मिनिट ही हो पायेगा। थोड़े शिक्षण कार्य में कक्षा के सभी छात्रों का अधिगम संभव हो पायेगा। ज्यादा शिक्षण कराने के स्थान पर इस तरह सभी छात्रों का अधिगम संभव हो पायेगा। ज्यादा शिक्षण कराने के स्थान पर इस तरह सभी छात्रों का अधिगम स्तर उन्नत करने का प्रयास सन्तुष्टि का सुखद अनुभव कराता है। ऐसा देखने में आया है कि जो छात्र शिक्षण में पिछड़े हुए थे, प्रतिदिन कालांश शुरू होने से पूर्व कक्षा में विषयाध्यापक के आने से पूर्व कल पढ़ाये गये पाठ के अंश को खोलकर पढ़ने में रुचि रखते हैं। होशियार छात्र अगले दिन पढ़ाये जाने वाले पाठ को पूर्व में पढ़ने में भी रुचि रखते थे।

शुरू के दो-तीन माह पाठ्यक्रम की धीमी गति पर बेचैनी-सी महसूस होती है। पाठ्यक्रम शीघ्र पूर्ण कराने की मानसिकता भी होती है। पाठ्यक्रम पूर्ण नहीं हो पाने की स्थिति में छात्र हित में कुछ विषयाध्यापक विद्यालय समय में एक-आधा घंटा पूर्व 1-2 माह अतिरिक्त समय देकर शिक्षण कराये तो पाठ्यक्रम पूर्ण कराया जा सकता है। अर्द्धवार्षिक परीक्षा से 20-30 दिन पूर्व प्रार्थना-सभा कार्यक्रम में कुछ विषयाध्यापक बारी-बारी से अतिरिक्त समय देकर पाठ्यक्रम पूर्ण कराने का प्रयास कर सकता है। कुछ अध्यापकों के अवकाश पर रहने पर कालांश व्यवस्था में अपने पीरियड लगवाने में रुचि लेकर पाठ्यक्रम पूर्ण करने का प्रयास कर सकता है। कक्षा 10 में एस.यू.पी.डब्ल्यू. कला, स्वास्थ्य शिक्षा के विषयों में भी शिक्षण कराके पाठ्यक्रम पूर्ण कराने का प्रयास किया जा सकता है।

जब छात्रों में शिक्षण में रुचि हो जाती है, छात्र तैयारी के साथ आते हैं, तो पुनरावृत्ति के प्रश्नों को पूछने के समय में कमी लायी जा सकती है। जहाँ चाह वहाँ राह निकल ही आती है। छात्र हित में अतिरिक्त समय व श्रम देने की लगन हो तो ही इस तरह शिक्षण कराया जा सकता है।

विषयाध्यापक सावधिक टेस्टों, अर्द्धवार्षिक परीक्षा की उत्तरपुस्तिकाओं को दिखाने से पूर्व प्रश्न-पत्र छात्रों से हल करवाने का प्रयास करें। जो छात्र कमजोर हो, उनसे उत्तर पूछे जाए। गलत उत्तर बताने पर किसी छात्र को डाँटने, फटकारने, अपमानित करने या हतोत्साहित करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। उन्हें प्रेम से समझाकर दिल जीतना चाहिये। कमजोर छात्र द्वारा आंशिक सही उत्तर देने पर भी प्रोत्साहित करना चाहिये। गृह कार्य में मौलिक प्रश्न दिये जाने चाहिये। टेस्टों-गृह कार्य में सही उत्तर देने वाले छात्रों के प्रति व्यवहार मित्रवत होना चाहिए। मार्गदर्शक बनकर उन्हें प्रेरित भी करना चाहिए। हितेषी बनकर उनका पुनर्बलन करना चाहिये। पिता समान कल्याणकारी भाव रखते हुए शिक्षण कराने से कमजोर छात्र शिक्षण में पूर्ण मन से रुचि रखते हुए अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करके सुखद भविष्य निर्माण हेतु प्रयत्नशील बन सकेंगें।

-जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बैसलमेर
मो. 9829719413

वाक्पीठ संगोष्ठी

विद्यालय और संस्था प्रधान

❒ विनोद कुमार शर्मा

विद्यालय में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका संस्था प्रधान की होती है। विद्यालय के समस्त कार्य उसी के नेतृत्व में संचालित होते हैं। संस्था प्रधान के व्यक्तित्व की छाप परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि, प्रत्येक क्रियाकलाप पर दिखाई पड़ती है। संस्था प्रधान की विद्यालय में केन्द्रीय स्थिति होती है तथा वह शिक्षकों, शिक्षार्थियों, अभिभावकों आदि के सहयोग एवं स्वयं के व्यक्तित्व, कार्यनिष्ठा एवं कार्यक्षमता के द्वारा विद्यालय को सही एवं उचित दिशा की ओर ले जा सकता है। संस्था प्रधान विद्यालय का नेता है अतःवह जिस प्रकार का आचरण करता है, सम्पूर्ण विद्यालय परिवार उसका अनुसरण करता है।

संस्था प्रधान एक अध्यापक होने के साथ-साथ अच्छा संगठनकर्ता संयोजक, पर्यवेक्षक, निर्देशक, मित्र, दार्शनिक एवं परामर्शदाता होता है। संस्था प्रधान विद्यालय का हृदय होता है, जिस प्रकार हृदय के सुचारू रूप से कार्य न करने पर शरीर भी काम का नहीं रहता है, उसी प्रकार संस्था प्रधान यदि विद्यालय के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का उचित प्रकार से निर्वहन नहीं करेगा तो विद्यालय भी अवनति की ओर चलता चला जाएगा। विचारक रायबर्न का मानना है कि जिस प्रकार जहाज में कैप्टन का मुख्य स्थान होता है, उसी प्रकार विद्यालय में संस्था प्रधान का स्थान मुख्य होता है। संस्था प्रधान समन्वय स्थापित करने का साधन है और समूची संस्था के संतुलित विकास को निश्चित बनाता है।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी इस संबंध में माना है कि समाज में विद्यालय की ख्याति तथा स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि प्रधानाध्यापक का विद्यालय के अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा उनके माता-पिता तथा सामान्य जनता पर कितना प्रभाव है। हम विद्यालय में संस्था प्रधान के कार्यों एवं दायित्वों का वर्गीकरण इस प्रकार कर सकते हैं-

(1) योजना- विद्यालय में संस्था प्रधान का प्रथम एवं मुख्य कार्य योजना बनाना है। सत्र के आरम्भ में संस्था प्रधान को विद्यालय में सम्पूर्ण सत्र में किए जाने वाले कार्यों के संबंध में योजना बना लेनी चाहिए। विद्यालय में सम्पूर्ण सत्र में कई प्रकार के कार्य किए जाते हैं- शिक्षण कार्य, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ जिनमें खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, स्काउटिंग, एन.सी.सी. आदि सम्मिलित हैं। छात्रों का प्रवेश,समय-सारिणी तैयार करना मूल्यांकन आदि का सहयोग भी लेना चाहिए।

(2) निरीक्षण- संस्था प्रधान संपूर्ण विद्यालय की शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं अन्य गतिविधियों का निरीक्षण करता है तथा स्वयं की बनाई योजनाओं की सफलता एवं असफलता का मूल्यांकन कर उनमें परिवर्तन करता है।

निरीक्षण का मतलब दूसरों में दोष निकालना या दूसरों की आलोचना करना नहीं है अपितु इस बात का निरीक्षण करना होता है कि विद्यालय की सभी क्रियाएँ उचित रूप से समयबद्ध तथा योजनानुसार चल रही है अथवा नहीं।

(3) शिक्षण- संस्था प्रधान का प्रशासनिक एवं कार्यालयी कार्यों के अलावा शिक्षण कार्य करना भी एक मुख्य कर्त्तव्य है। शिक्षण द्वारा वह अधिक से अधिक छात्रों से भी संपर्क में रह सकता है। उसका स्वयं का शिक्षण कार्य इस प्रकार का हो जिससे अध्यापक उसका अनुकरण कर सकें।

(4) विद्यार्थी और संस्था प्रधान- संस्था प्रधान को प्रतिदिन प्रार्थना सभा में जाना चाहिए तथा विद्यार्थियों से बातचीत करनी चाहिए। उनकी समस्याएँ सुननी चाहिए तथा उन पर सोच समझ कर एवं सहानुभूतिपूर्ण विचार कर अपना निर्णय देना चाहिए।

(5) अध्यापक और संस्था प्रधान- संस्था प्रधान को शिक्षकों के प्रति मानवीय, सहानुभूतिपूर्ण प्रजातांत्रिक ढंग से व्यवहार करना चाहिए। अध्यापकों के साथ पक्षपातपूर्ण रवैया न अपनायें अध्यापकों की यदि किसी प्रकार की कोई समस्या हो तो उसका निराकरण करें।

(6) अभिभावक और संस्था प्रधान- संस्था प्रधान को अभिभावकों के साथ बराबर सम्पर्क रखना चाहिए। इस हेतु शिक्षक-अभिभावक संघ की स्थापना करनी चाहिए और इस संघ की निरन्तर बैठक आयोजित करते रहना चाहिए जिससे अभिभावकों के साथ सौहार्द्रपूर्ण संबंध बनते हैं और वे विद्यालय को उन्नत बनाने की दिशा में अपना हरसंभव योगदान करते हैं।

(7) अधिकारी और संस्था प्रधान- माध्यमिक शिक्षा आयोग ने संस्था प्रधान का एक प्रमुख कर्तव्य बताते हुए कहा है-शिक्षा विभाग के अधिकारियों के निर्देशों का पालन करना ही उसका काम है। अतः संस्था प्रधान का कर्तव्य है कि वह शिक्षा विभाग एवं उसके अधिकारियों द्वारा दिए गए निर्देशों की अनुपालना गंभीरता से करे। उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उचित एवं सन्तोषप्रद उत्तर दें। उनके साथ संपर्क बनाकर रखे तथा विद्यालय में उनके निरीक्षण के लिए आने पर उन्हें समुचित सहयोग प्रदान करें। विद्यालय के विशेष कार्यक्रमों में उन्हें आमंत्रित करें। इन सभी कार्यों से अधिकारियों के साथ सौहार्दपूर्ण एवं सुदृढ़ संबंध होंगे और अधिकारीगण विद्यालय विकास में अपना अधिकतम सहयोग प्रदान करेंगे।

सारतः कह सकते हैं कि संस्था प्रधान विद्यालय की केन्द्रीय धुरी होता है। विद्यालय के सम्पूर्ण कार्यों के लिए वही सबसे अधिक जिम्मेदार व्यक्ति होता है। अतः विद्यालय को सुचारू ढंग से चलाने हेतु उसे निष्ठापूर्वक कार्य करना चाहिए।

-प्रधानाचार्य
रा.उ.मा.वि., होल्याकाबास (सीकर)

वोट मैं अपना देकर आई,
चुनकर है सरकार बनाई।।

दीपोत्सव

दीपावली पर्व : अतीत से आज तक

❒ नरेश शर्मा

ज्योतिपर्व दीपावली न केवल भारत बल्कि विश्व के विभिन्न देशों में प्रकाश पर्व के रूप में मनाई जाती है। पंचपर्वों की शृंखला के रूप में यह पर्व भारतीय संस्कृति में अनोखा महत्व रखता है। यह सम्पूर्ण भारत की एकता का प्रमाण है। ज्योतिपर्व को मनाने के रूप-ढंग चाहे भिन्न हो सकते हैं लेकिन इसका महत्व आज भी सर्वत्र व्याप्त है। जिस रूप में आज हम दीपावली पर्व मनाते है वह अपने प्रारम्भिक चरण में किस रूप में मनाई जाती थी, इसकी विकास यात्रा बड़ी रोचक है। हजारों वर्ष पूर्व अतीत से ही यह पर्व जनमानस के दिलों की खुशी, उमंग और हर्ष की अभिव्यक्ति का प्रतीक बना हुआ है। इस पर्व की शुरूआत कैसे हुई इसका प्रामाणिक वृतांत तो उपलब्ध नहीं है लेकिन विभिन्न ग्रन्थों में उपलब्ध प्रसंगों से अनुमान लगाए जा सकते हैं। यह भी निश्चित है कि जिस रूप में आज हम दीपोत्सव का पर्व मनाते हैं वह अतीत में ठीक वैसा नहीं था। समय के साथ-साथ इसके नाम, रूप-ढंग में बदलाव आते गए हैं जिन्हें जानना बड़ा रोचक है।

ऐसी मान्यता है कि दीपावली पर्व अतीत रूप में 'ऋतु उत्सव' के रूप में मनाया जाता था। कारण यह ऋतु परिवर्तन का काल होता है, गर्मी और वर्षा से निजात पाकर लोग शिशिर ऋतु का नाच-गान करते हुए स्वागत करते थे। तब संभवतः इसने पर्व का रूप धारण कर लिया। ऋतु परिवर्तन के साथ-साथ इस पर्व से नई फसलों के स्वागत की परम्परा भी जुड़ गई। कृषि प्रधान भारतवासियों के लिए भरे पूरे खेत-खलिहान खुशी-समृद्धि का महत्वपूर्ण कारण होते थे जिससे चहुंओर खुशी-हर्षोल्लास का माहौल व्याप्त हो जाना स्वाभाविक था। इस रूप में यह पर्व कृषि उत्सव के पर्व के रूप में भी मनाया जाने लगा। इस अवसर पर लोग एक दूसरे को नई फसल के दाने भेंट करते। कालान्तर में यह परम्परा खील बताशें से जुड़ गई। जो आज भी विद्यमान है।

इस पर्व में एक परिवर्तन तब आया जब यह पर्व 'नव वर्ष' के प्रारम्भ से जुड़ गया। नये साल के आगमन की खुशियां इस पर्व में चार चांद लगाने लगी और धीरे-धीरे इसने उत्सव का रूप धारण कर लिया।

इस पर्व के दीपोत्सव रूप परिवर्तन के स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं है। दीपावली को ज्योतिपर्व के रूप में मनाने की परम्परा कब और कैसे विकसित हुई स्पष्ट नहीं है। लेकिन सर्वविदित है कि आदिम युग से ही मनुष्यों ने प्रकाश का महत्व समझ लिया था। सृष्टि के आधाररूप प्रकाश को इसीलिए देवत्व के रूप में पूज्य माना गया है। वैदिक ऋचाएँ इस तथ्य की पुष्टि करती है। अंधकार को अज्ञान और बुराई का प्रतीक मानते हुए ऋषि मुनियों ने प्रकाश को ज्ञान का प्रतीक स्वीकार किया। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की वैदिक उक्ति यही संदेश देती है कि हमें अपने अन्तर्मन के अन्धकार को जो अनेक बुराइयों के रूप में प्रस्तुत होता है, को प्रकाशमान करें, ज्ञान के चक्षु खोल कर यथार्थ रूप में मानव योनि में जन्म की सार्थकता को सिद्ध करें।

पाषाणकाल के उत्तरकालीन युग अर्थात् नव पाषाणकाल तक मनुष्य ने पत्थर से ऊष्मा-अग्नि उत्पन्न करने की कला सीख ली थी। कालान्तर में इस खोज ने मानव जीवन की दिशा और दशा ही पलट कर रख दी। धीरे-धीरे दीपक मानव मन की खुशियों के इजहार के प्रतीक बन गए। खुशी, मंगल, पूजा-उपासना और शुभ अवसरों पर दीपक जलाने की परम्परा विकसित होती चली गई।

प्रकाश और दीपकों का सम्बन्ध कालान्तर में ऋतु उत्सव-कृषि उत्सव अथवा नव वर्ष के पर्व से जुड़ गया। उत्सव-समारोह की सफलता, खुशियों की प्रभावी अभिव्यक्ति और सुरक्षा के कारण अमावस के गहन अंधकार से मुक्ति। उक्त पर्व पर दीपक जलाने का रिवाज शुरू हुआ होगा।

दीपक जलाने की प्रथा को लेकर एक अन्य कारण और नजर आता है। अतीत में यह प्रथा थी कि श्राद्ध पक्ष से कार्तिक मास की अमावस्या तक हमारे देश में ऊँचे-ऊँचे बांसों पर दीपक लटका कर जलाए जाते थे। इसके पीछे यह विश्वास था कि श्राद्ध पक्ष में विचरण करने आए पितर कार्तिक शुक्ल अमावस्या तक भूलोक में ही विचरण करते हैं। अतः उनके लिए प्रकाश की व्यवस्था करना श्रद्धा की बात थी। लगता है कालान्तर में कार्तिक कृष्ण अमावस्या तक दीपक जलाने की परम्परा सीमित हो गई।

दीपावली पर लक्ष्मी-गणेश का पूजन अनिवार्य है। यह परम्परा कालान्तर में विकसित हुई है। लक्ष्मी वैदिक देवता है। वैदिक साहित्य में लक्ष्मीपूजन का उल्लेख है। लक्ष्मी को धन सम्पदा की देवी माना जाता है। ऋग्वेद के 'श्री सूक्त' में लक्ष्मीजी की महिमा का वर्णन है। लेकिन महालक्ष्मी के पूजन से सम्बद्ध नियम-विधि पौराणिककाल में निर्धारित हुई है। विभिन्न पुराणों में लक्ष्मीजी से सम्बंधित अनेक उपाख्यान मिलते हैं। स्कन्दपुराण में लक्ष्मी पूजा के लिए चैत्र भाद्रपद और पौष मास को उत्तम माना गया है। इसी पुराण में उल्लेखित है कि गंगा के शाप से लक्ष्मी को मनुष्य योनि में राजा धर्मध्वज के यहां जनम लेना पड़ा। तत्पश्चात् तुलसी के रूप में रूपान्तरित होकर वे समुद्र में निमग्न हो गई। समुद्रमंथन के समय लक्ष्मीजी का अवतरण हुआ तथा भगवान विष्णु ने उनका वरण किया। मार्कण्डेय पुराण में लक्ष्मीजी को ब्रह्मा-विष्णु-महेश द्वारा पूज्य दर्शाया गया है। देवताओं से पूज्य लक्ष्मी कालान्तर में मनु, नाग और मनुष्य द्वारा पूजी गई। मनुष्यों द्वारा लक्ष्मी पूजन का प्रारम्भ शिशिर ऋतु के प्रारम्भ में महारात्रि को किया। इस अवसर पर सर्वत्र दीप प्रज्ज्वलित कर महालक्ष्मी का स्वागत किया गया।

लगता है कि प्राचीन युगीन ये पर्व कालान्तर में सामूहिक रूप से दीपावली से जुड़ गए और तभी से दीपोत्सव-दीपावली का रूप निर्धारित होने लगा। 11वीं सदी में तुर्क आक्रमणकारी महमूद गजनवी के साथ आए

अलबरूनी ने अपने ग्रन्थ 'किताब-उल-हिन्द' में दीपावली पर्व का उल्लेख किया है। 11वीं सदी से 15वीं सदी के बीच रचे गए अनेक ग्रन्थों में प्रायः दीपावली का उल्लेख मिलता है। इस पर्व का कार्तिक मास शुक्ल प्रतिपदा के आसपास उत्सव के रूप में मनाने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। सम्राट हर्षवर्धन द्वारा रचित 'नागानन्द' में भी दीपावली को कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को मनाने का वर्णन है। जबकि संहिताओं जैसे नारद संहिता में दीपोत्सव के लिए चतुर्दशी, अमावस्या और प्रतिपदा का उल्लेख मिलता है। 17वीं सदी तक दीपावली का पर्व अमावस्या को दीपोत्सव और लक्ष्मी पूजन के रूप में मनाया जाने लगा। समय परिवर्तन के साथ-साथ दीपावली पर्वपुंज के रूप में पंचपर्वों की एक शृंखला बन गई। जिसमें यम पूजा, नरक चतुर्दशी (रूप चौदस), गोवर्धन और भाईदूज के त्योहार भी जुड़ गए। यह दीपावली का आधुनिक रूप है।

प्रकाश पर्व दीपावली में अनेक नाम मिलते हैं। नीलमत पुराण में इसे 'सुखरात्रि' कहा गया है। इस पुराण के अनुसार इस दिन देवता अभय प्राप्त करके सुख से सोये थे। अतः उस दिन से सुख रात्रि का पर्व प्रारम्भ हुआ। प्राचीन ग्रन्थों में दीपावली का एक नाम 'यक्ष रात्रि' भी उल्लेखित है। माना जाता है कि इसका आयोजन यक्ष जाति के लोग उत्सव के रूप में करते थे। माना जाता है कि लक्ष्मी जी के साथ गणेश पूजन की परम्परा यक्ष की परम्परा के ही उदाहरण है। दीपावली को दीपोत्सव, दीपमालिका, प्रकाश पर्व, ज्योतिपर्व, आलोकपर्व भी कहा गया है।

वर्तमान में दीपावली पर्व में आधुनिकता की छाप आ गई है। दिखावा और शानोशौकत के चलते दीपावली का मूल संदेश अपने 'अन्तर्मन के अन्धकार पर विजय और ज्ञान रूपी प्रकाश के प्रस्फुटन' को हम भुलाते जा रहे हैं। आने वाली पीढ़ी को यह संदेश समझना ही होगा। यह परम कल्याण और सबके लिए मंगल का त्योहार है।

-बी-111, अशोक विहार, कर्मचारी कॉलोनी,
अलवर-301001
मो. 9829730611

राजस्थान की यह पहचान,
शत-प्रतिशत जहाँ मतदान।

दीपावली

दीपक का सन्देश हमारे लिए

❒ सत्यनारायण भटनागर

मैं अपने बेटे के निवास पर पहुँचता हूँ। मेरी पोती को पता चलता है। वह दौड़कर मेरे पास आती है। प्रसन्नता फूट रही है नन्ही के अंग अंग से। वह मुझसे चिपटती है। मैं उसे गोद में उठा लेता हूँ। वह खुश है। उसके दादाजी आए है। वह एक पर्ची मुझे देती है। मैं पढ़ता हूँ उसमें लिखा है-'दादाजी सादर प्रणाम। आप बहुत अच्छे हैं।' मैं पढ़ता हूँ। उससे पूछता हूँ-'किसने लिखवाया है?' वह बताती है-'उसकी माँ ने लिखवाया है' यह सुन मेरे मन में प्रश्न उठता हैं-'क्या प्रेम को भी बोल कर प्रकट करना पड़ता है? क्या मौन से प्रेम नहीं झरता? क्या प्रेम के लिए भी विज्ञापन करना पड़ता है? आजकल तो लगता है ऐसा ही है। आजकल पति पत्नी से कहता है-'आय लव यू' तब उसे विश्वास जमता है। यही पत्नी कहती है तब पति को विश्वास होता है। बेटे-बेटी माँ से कहते है। सब सम्बन्धों को बताना पड़ता है। इस सब के बाद भी तनाव से तलाक तक की यात्रा होती ही है।

मुझें याद नहीं है। मेरी माँ ने शब्दों में कभी प्रेम की घोषणा की हो। मैंने भी कभी प्रेम शब्दों में व्यक्त नहीं किया पर हम दोनों जानते रहे कि अन्तरतम की गहराई तक हम प्रेम करते रहे। प्रेम तो दीपक की तरह निरन्तर जलता रहता है। जब तक दीपक में स्नेह रूपी तेल रहता है, वह बुझता नहीं है। हवा के जोरदार थपेड़े वह सह लेता है चुपचाप। वह हिलता डुलता है। संघर्ष कर लेता है, पर बुझता नहीं है। वह कहानी बन जाता है दीए और तूफान की। जब तक जलता है प्रकाश देता रहता। वह खुद जलता है पर आग नहीं लगाता। प्रेम का दीपक दूसरे दीपकों को भी अपनी ज्योति दे देता है ताकि वे भी प्रकाश देने में उसके सहयोगी बने। अपनी ज्योति दे देने से दीपक में कोई कमी नहीं आती। यह प्रेम का तत्व है। बेहिसाब प्रेम चाहिए, प्रेम में कोई कमी नहीं आएगी। प्रेम में है प्रेरणा का तत्व। प्रेम अपने जैसों को प्रेम बांट कर सन्देश देता है-जलो, सबको प्रकाशित करने के लिये। दीपक अपने लिए प्रकाशित नहीं होता। सबके लिए प्रकाशित होता है।

प्रेम तो स्वयं विज्ञापन है, वह केवल मौन की भाषा जानता है। उसे मौन रह कर ही प्रकट किया जाता है। उसके लिए गीत गाकर घोषणा नहीं करना पड़ती। प्रेम और रोशनी को छुपाया नहीं जा सकता। प्रेम रोशनी की तरह है। दीपक काली अन्धेरी रात में सूरज का प्रतिनिधित्व करता है। अन्धेरे को ललकारता है पर उससे घृणा नहीं करता। वह जानता है अन्धेरे को मिटाना नहीं है। अन्धकार मिटाना है। इसलिए दीपक अपने नीचे अन्धेरे को स्थान दे देता है। दीपक प्रेम का प्रतीक है। उसके पास घृणा और द्वेष के लिए स्थान कहाँ है?

फिर वह क्या है जो प्रेम के नाम पर गा बजा कर घोषित किया जाता है। विचार कीजिए। उसे ही तो आजकल प्रेम कहा जाता है। प्रेम और वासना दो शब्द है। दो भाव है। उनमें जमीन आसमान का अन्तर है। वासना है चूल्हे की आग जो तत्काल तृप्ति देती है। पक कर राख रह जाती है उसकी। उसी की स्मृति प्रेम के नाम पर उड़ रही है। दीपक की तरह है प्रेम। वह जलता है प्रकाश के लिए। अन्धकार मिटाने के लिए।

-2, एमआईजी, देवरा देव
नारायण नगर, रतलाम (म.प्र.)-457001
मो. 9425103328

कविता

बिटिया

क्यों समझती खुद को तुम कमजोर बिटिया,
अपनी ताकत पर करो तुम गौर बिटिया।
सृष्टि में तुम सूर्य की पहली किरण हो,
रोशनी का तुम सुनहरा भोर बिटिया।
राह में ठोकर लगे, हिम्मत न हारो,
फिर करो कोशिश कोई पुरजोर बिटिया।
एक दिन निश्चित तुम्हें मंजिल मिलेगी,
कर्म करने में रहो सिरमौर बिटिया।

-अज़हर हाशमी

आदेश-परिपत्र : नवम्बर, 2013

1. अतिरिक्त बजट राशि की माँग करने के सम्बन्ध में।
2. छठी आर्थिक गणना कार्य हेतु लगाये जाने वाले शिक्षकों को उपार्जित अवकाश का लाभ।
3. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान भारत सरकार द्वारा वर्ष 2012-13 हेतु राज्य के राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रण। अन्तिम तिथि दिनांक 13.11.2013
4. बीकानेर एवं पाली में उप निदेशक (माध्यमिक) कार्यालय स्थापित।
5. जोधपुर में जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वितीय का कार्यालय स्थापित।

1. अतिरिक्त बजट राशि की माँग करने के सम्बन्ध में दिशा निर्देश

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर ● परिपत्र ● माननीय मुख्यमंत्री महोदय की वर्ष 2013-14 की बजट घोषणा के क्रम में राउप्रावि से रामावि, रामावि से राउमावि, में विद्यालयों की क्रमोन्नति एवं अतिरिक्त संकाय/विषय खोलने सहित अधिनस्थ विद्यालयों को नवसृजित पदों एवं बजट का आवंटन इस कार्यालय के आदेश दिनांक 16.6.2013, 20.06.2013, 08.07.2013, 12.09.2013 एवं 16.09.2013 द्वारा जारी किया जा चुका हैं। साथ ही नवक्रमोन्नत माध्यमिक विद्यालयों को ऑफिस आईडी का आवंटन भी दिनांक 15.07.2013 एवं 20.09.2013 को कर दिया गया हैं तथा समस्त आदेश विभागीय वेब साईट rajshiksha.gov.inपर बजट आवंटन फोल्डर पर उपलब्ध हैं। समस्त विद्यालयों को टोकन राशि जारी की जा चुकी हैं, विद्यालयों में कार्यरत स्टॉफ के आधार पर यदि 01-संवेतन उप मद में अतिरिक्त राशि की आवश्यकता हैं तो संलग्न प्रपत्र में मांग पत्र निदेशालय में भिजवाया जावें। ● संलग्नः-उक्तानुसार ● मुख्य लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

क्रमांकः शिविरा/माध्य/बजट/बी-4/25577/2013-14/ दिनांक 23.9.2013

अतिरिक्त राशि आवंटन हेतु निर्धारित प्रपत्र

कार्यालय/विद्यालय का पूरा नाम .....

वित्तीय वर्ष :- .....

OFFICE I.D.	D.D.O. NO.	बजट मद (मोहर अंकित करें)	NON PLAN/ PLAN/CSS (चिन्हित कर नीचे भी लिखें)	विस्तृत मद जिसमें राशि चहियें:-
.....	.....		.....	.....

1. मूल आवंटित राशि .....
2. अतिरिक्त आवंटित राशि (यदि कोई हो तो) .....
3. अब तक कुल आवंटित राशि (1+2 का योग) .....
4. अब तक कुल व्यय राशि .....
5. वर्तमान में शेष उपलब्ध राशि (3-4) .....
6. वित्तीय वर्ष की समाप्त तक होने वाला कुल संभावित व्यय .....
7. अतिरिक्त राशि की मांग (6-3) .....
8. अतिरिक्त मांग का औचित्य .....

.....

9. गत तीन वित्तीय वर्ष में इस मद में आवंटित एवं व्यय राशि का विवरणः-

वित्तीय वर्ष :-	(.....)	(.....)	(.....)
कुल आवंटन :-	.....	.....	.....
कुल व्यय :-	.....	.....	.....

10. वित्तीय वर्ष ..... के लिए आय व्यय अनुमान में प्रस्तावित राशि .....
11. वित्तीय वर्ष ..... के लिए संशोधित अनुमान में प्रस्तावित राशि .....

संलग्नः- पेंडिंग बिलों की सूची ● कार्यालयाध्यक्ष की मोहर दिनांक :

2. छठी आर्थिक गणना कार्य हेतु लगाये जाने वाले शिक्षकों को उपार्जित अवकाश का लाभ

● क्रमांकः प.21(3) शिक्षा-2-2013 जयपुर दिनांक 6.5.2013 ● विषयः छठी आर्थिक गणना कार्य हेतु लगाये जाने वाले शिक्षकों के संबंध में।

उपरोक्त विषयान्तर्गत निर्देशानुसार लेख है कि छठी आर्थिक गणना में पर्यवेक्षक के रूप में व्याख्याता एवं वरिष्ठ अध्यापकों की ग्रीष्मावकाश में लगाया जावेगा। अतः जिस व्याख्याता एवं वरिष्ठ अध्यापकों की ग्रीष्मावकाश के दौरान आर्थिक गणना कार्य किये जाने हेतु ड्यूटी लगायी जावेगी। उन शिक्षकों की ग्रीष्मावकाश में कार्य किये जाने की एवज में आर.एस.आर. नियम 92ख के अनुसार 15 दिवस के अनुपात में उपार्जित अवकाश 03 कार्य दिवस पर एक उपार्जित अवकाश देय होगा। अतः तदनुसार सम्बन्धित शिक्षण अधिकारी से आर्थिक गणना का कार्य किए जाने की उपस्थिति प्रमाणपत्र के आधार पर उपरोक्तानुसार देय उपार्जित अवकाश उनके लेख में जोड़ें जाने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देश जारी कर अवगत कराने की व्यवस्था करावे। ● ह. शासन सहायक सचिव, कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

क्रमांकः शिविरा/माध्य/मा/स/22422/04 दिनांक 13.9.13

3. राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान भारत सरकार द्वारा वर्ष 2012–13 हेतु राज्य के राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा में अध्ययनरत होने पर वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना पत्र आमंत्रण। अन्तिम तिथि दिनांक 13.11.2013

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक: शिविरा/माध्य/राशिकप्र/31590/2012–2013 दिनांक : 4–10–13 ● समस्त उपनिदेशक (माध्यमिक/प्रारंभिक शिक्षा)

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान की योजनान्तर्गत व्यवसायिक शिक्षा में अध्ययनरत शिक्षा विभाग के अधीनस्थ राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों को वित्तीय सहायता दिए जाने के बाबत संलग्न प्रारूप में प्रार्थना पत्र आमंत्रित किये जाते हैं। प्रार्थना पत्र दिनांक 13–11–2013 तक अधोहस्ताक्षरकर्ता के पदनाम से आवश्यक रूप से प्राप्त हो जाने चाहिए ताकि जांचोपरांत प्रार्थना पत्र राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान भारत सरकार नई दिल्ली को निर्धारित अंतिम तिथि से पूर्व भेजे जा सके। अतः तद्विषयक अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं करें।

विशेष ध्यातव्य:– प्रार्थी द्वारा प्रार्थना पत्र भरते समय एवं सम्बन्धित अधिकारी (राजपत्रित) द्वारा अग्रेषित करते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखकर अग्रेषित किये जाये। प्रार्थना पत्र स्पष्ट अक्षरों में भरा जावे एवं विद्यालय की मोहर स्पष्ट होनी चाहिए।

1. यह योजना मात्र राजस्थान राज्य के राजकीय/अराजकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के बच्चों के लिए ही लागू होगी।
2. विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के बच्चे जो व्यावसायिक शिक्षा' इंजीनियरिंग, मेडिसिन एवं मैनेजमेंट, पाठ्यक्रम डिग्री/डिप्लोमा में अध्ययनरत को ही वित्तीय सहायता देय होगी। निर्धारित पाठ्यक्रमों का विवरण निम्नानुसार है :–

(अ) 4 वर्षीय अवधि का (8 सेमेस्टर) इन्जीनियरिंग पाठ्यक्रम निम्नांकित शाखाओं में : सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल एवं इलेक्ट्रोनिक्स, इलेक्ट्रोनिक्स एवं टेलीकम्युनिकेशन, कम्प्यूटर विज्ञान, ऑटोमोबाईल एवं कैमिकल इंजीनियरिंग, आराचीट्रेक्चर, टेक्सटाईल, माईनिंग, रबर टेक्नोलॉजी, नेवल, आरचीट्रेक्चर, पेट्रोलियम इंजीनियरिंग, फार्मेसी, प्रिन्टिंग, कैमिकल टेक्नोलॉजी, मेटलर्जीकल इंजीनियरिंग, इन्सट्रक्चर, पेट्रोलियम इंजीनियरिंग, फार्मेसी, प्रिन्टिंग, कैमिकल टेक्नोलॉजी, मेटलर्जीकल इंजीनियरिंग, इन्सट्रमेन्टेशन एवं कन्ट्रोल एवं एयरोनोटिकल इंजीनियरिंग।

(आ) उपर्युक्त पाठ्यक्रमों में तीन वर्षीय डिप्लोमा कोर्स (तीन वर्ष से कम नहीं)

(इ) मेडिकल कोर्स– ऐलापैथी, होमियोपैथी एवं आयुर्वेदिक, पशु चिकित्सा विज्ञान (वेटरीनेरी साईंस)

(ई) डिप्लोमा पाठ्यक्रम बी–फार्मा की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

(उ) स्नातक पाठ्यक्रम के पश्चात् मैनेजमेन्ट पाठ्यक्रम की अवधि दो वर्ष से कम की नहीं होनी चाहिए।

3. प्रार्थना–पत्र की सभी प्रविष्टियां स्वयं अध्यापक/संस्था प्रधान द्वारा भरी जानी चाहिए।
4. भुगतान किया गया वास्तविक शुल्क प्रार्थना–पत्र के कॉलम संख्या 13 में स्पष्ट रूप से अंकित करें। प्रार्थना–पत्र के साथ शुल्क की मूल रसीदें संलग्न करें। फोटोस्टेट प्रतियां स्वीकार्य नहीं होगी। सम्पूर्ण भुगतान की रसीद यदि प्रस्तुत की जाती है तो उसका मदवार विवरण प्रस्तुत करने पर ही प्रार्थना–पत्र विचारणीय होगा। यदि भुगतान की रसीद क्षेत्रीय भाषा में हो तो मूल रसीद के साथ उसका अंग्रेजी/हिन्दी अनुवाद की प्रति राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित करवा कर संलग्न करें।
5. सत्र 2012–13 में छात्र जिस महाविद्यालय में अध्ययनरत है उस महाविद्यालय के प्रधानाचार्य का प्रमाण–पत्र संलग्न प्रारूप में संलग्न करें। यदि प्रमाण–पत्र क्षेत्रीय भाषा में हो तो मूल प्रमाण पत्र के साथ उसका हिन्दी/अंग्रेजी अनुवाद की प्रति राजपत्रित अधिकारी से प्रमाणित करवाकर संलग्न करें।
6. सहायता राशि मात्र ट्यूशन, पुस्तकालय एवं प्रयोगशला (लेबोरेटरी) शुल्क के भुगतान पर ही देय है। अतः अन्य मदों पर किए गए भुगतान एवं एक मुश्त में दर्शायी गई राशि पर सहायता देय नहीं होगी।
7. सहायता रशि एक शैक्षणिक सत्र तक ही सीमित है। अध्यापक के बच्चों को वित्तीय सहायता हेतु प्रार्थना–पत्र छात्र के शैक्षणिक सत्र 2012–13 में अध्ययनरत के लिए ही स्वीकार्य होंगे।
8. अनुत्तीर्ण हो जाने वाले छात्र सहायता हेतु पात्र नहीं होंगे। इन्टरर्नशिप अवधि के दौरान कोई सहायता देय नहीं होगी।
9. यह सहायता राशि केवल उत्तीर्ण छात्रों को ही देय होगी। ऐसे मामलों में जहां परिणाम घोषित नहीं हुआ है, सहायता देय नहीं है।
10. छात्र/छात्रा की उत्तीर्ण अंकतालिका की फोटोस्टेट प्रति साथ में संलग्न करें।
11. व्यावसायिक शिक्षा में सहायता हेतु परिवार के एक ही बच्चे के लिए प्रार्थना–पत्र स्वीकार्य होगा।
12. सहायता राशि पूर्व के वर्षों में जिन्हें स्वीकृत नहीं हुई है, प्राथमिकता के आधार पर प्रथमतःउन्हीं को सहायता देय होगी।
13. भारत सरकार द्वारा प्रार्थना पत्र के आधार पर पात्रता की जांचोपरान्त राशि की स्वीकृति जारी की जावेगी। भारत सरकार से सहायता राशि प्राप्त होने पर ही देय होगी। अतः अनावश्यक पत्र व्यवहार नहीं किया जावे।
14. वित्तीय सहायता की राशि भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा ही स्वीकृत की जाती है। भारत सरकार द्वारा यदि राशि स्वीकृति नहीं की जाती है तो संस्था सहायता राशि हेतु जिम्मेदार नहीं है, जैसे ही भारत सरकार से सहायता राशि प्राप्त होगी तत्काल भिजवा दी जायेगी।
15. अपूर्ण प्रार्थना पत्र शुल्क की मूल रसीदें नहीं होने एवं देरी से प्राप्त होने वाले प्रार्थना पत्र पर कोई विचार नहीं किया जावेगा। अतः ऐसी

स्थिति में एवं निरस्त हुए प्रार्थना पत्रों के बारे में कोई सूचना भी नहीं दी जावेगी।

16. शिक्षा विभागीय राजकीय कर्मचारी/अध्यापक हितकारी निधि का अंशदान प्रार्थना पत्र भरने से पूर्व अनिवार्य रूप से जमा करावें ताकि अधिक से अधिक कार्मिकों को लाभान्वित किया जा सके। कृपया उक्त विषयक सूचना अपने अधिनस्थ कार्यालयों/विद्यालयों (राजकीय/अराजकीय) में प्रसारित एवं प्रचारित करावें ताकि अधिकारीगण, अध्यापकगण इसका लाभ उठा सके। कृपया प्रार्थना पत्रों को संस्था प्रधान की अनुशंसा सहित **दिनांक 13.11.2013 तक** अधोहस्ताक्षरकर्ता के पदनाम से भिजवाने की व्यवस्था करें ताकि जांचोपरांत भारत सरकार द्वारा निर्धारित अंतिम तिथि तक प्रार्थना पत्र भिजवाई जा सके।

उप निदेशक (प्रशासन) ● राष्ट्रीय शिक्षक कल्याण प्रतिष्ठान, ● माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

Annexure-I

Application for financial assistance from National Foundation for 'Teachers' Welfare for Professional Education of Children of School Teachers- 2012-13

1. Full name and permanent address : of the applicant (in Block Letters)
2. Date of birth and age of the applicant :
3. Whether the teacher is in service :
4. If answer to (3) above 'Yes', please give the : following particulars in respect of the post held at present
   (d) Designation :
   (e) Name of the Institution where employed at present:
   (f) Whether the Institution is a Govt. : Institution/Aided Private Institution
5. Name of the student (In Block Letters) :
6. Date of birth and age of the student :
7. Relationship with the Student : Father/Mother
8. (a) Nature of professional course : Medical/Engineering/Management
   (b) Name & duration of course (with semesters) :
9. Name and address of the college where the student is studying/has studied during 2012-13
10. Date of admission (for 1st year) :
11. Year in which studying during 2012-13 : 11"/2"/3"/4"
12. (i) Whether any scholarship is received from : the Institution. If so, specify the amount
    (ii) Whether any assistance has already been : received from N.F.T.W. for this purpose. If yes, give particulars
13. Actual fees paid for the professional course : (Attach original cash receipts)
14. Amount of financial assistance claimed :
15. Whether certificate from the college : where the student is studying is attached.
16. Certificate:(to be furnished by the applicant) :

I certify that to the best of my knowledge and belief, the particulars given above are correct. I fully understand that in the event of this being proved otherwise, I shall be liable to such action as the National Foundation for Teachers' Welfare may deem fit to take in the matter.

Place:

Date: Signature the Teacher

17. Certificate II(to be furnished by the head of the Institution where the teacher is serving)

Certified that the particulars furnished by the applicant are correct.

Place:

Date: Signature of Head of the Institution (with official stamp)

.....

18. Recommendation of the State Working Committee, i.e. amount of financial assistance recommended for the year 2012-13.

Place:

Date:

Signature of Secretary Treasurer (with official stamp)

Name of the Institute :

Ref. No.....Date.....

Study Certificate

This is to certify that Sh./Km..... son/daughter of Sh./Smt..... Working as teacher in..... is a bonafide student of this Institution and studying/studied in.....year (1"/2nd/3rd/4th)/.....semester (1st/2nd/3rd/4th/5th/6th/7th/8th) during the year 2012-13.

The student is studying/studied in this college as per detail given below:

Name of Course	Duration of Course (with senesters)	Date of admission (for Ist Year)	Year of Course	Whether passed or Failed	Remarks

The student has received/not received scholarship from this Institution during the year 2012-13 of Rs.....

(Signature of the Principal) with official seal

4. बीकानेर एवं पाली में उप निदेशक (माध्यमिक) कार्यालय स्थापित

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ●कार्यालय-आदेश

राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-1) विभाग क्रमांकः प. 22(1) शिक्षा-1/2013-14 जयपुर दिनांक 02.05.2013 एवं राजस्थान सरकार के पत्र क्रमांक : प. 22 (1) शिक्षा-1/2013-14 जयपुर दिनांक 19.08.2013 आयोजना जनशक्ति विभाग की आई.डी. संख्या'198 दिनांक 04.07.2013 एवं वित्त (व्यय-1) विभाग की आई.डी. संख्या-151300930 दिनांक 19.07.2013 की पालना में श्री अख्तर अली, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक), बीकानेर एवं श्रीमती नूतन बाला कपिला, जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक), पाली अपने-अपने पद के कार्य के साथ-साथ क्रमशं : नवसृजित उपनिदेशक (माध्यमिक), बीकानेर एवं उपनिदेशक (माध्यमिक), पाली के पद का अतिरिक्त कार्य आगामी आदेशों तक सम्पादित करेंगे। निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

क्रमांक : शिविरा/माध्य/साप्र/बी-2/4371/वी-II/बीकानेर-पाली/13/16 दिनांक 01.10.2013

5. जोधपुर में जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वितीय का कार्यालय स्थापित

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ●कार्यालय-आदेश ●राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-2) विभाग क्रमांक प.17(2)शिक्षा-2/डीपीसी/2013 जयपुर दिनांक 15.02.2013 एवं राजस्थान सरकार के पत्र क्रमांक : प. 2(8) शिक्षा-2/2012 दिनांक 11.09.2013 एवं वित्त विभाग की स्वीकृति वित्त (व्यय-1) विभाग की आई.डी. संख्या-101300526 दिनांक 12.02.2013 की पालना में जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) द्वितीय, जोधुपर का कार्यालय स्थापित करते हुये वित्तिय एवं प्रशासनिक स्वीकृति जारी की जाती है एवं इस कार्यालय हेतु जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-द्वितीय) जोधपुर को कार्यालय अध्यक्ष घोषित किया जाता है।

इस कार्यालय हेतु स्टॉक (Supporting Staff) की व्यवस्था वर्तमान में स्वीकृत पदों एवं बजट प्रावधानों में से ही की जावें। जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-द्वितीय) जोधपुर के क्षैत्राधीन पंचायत समिति शेरगढ़/बाप/फलौदी/बावड़ी/बालेसर/आँसियां में संचालित विद्यालय रहेगें। ●निदेशक ●माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान ●बीकानेर

क्रमांकः शिविरा/माध्य/साप्र/बी-2/4381/11/जोधपुर/03/251 दिनांक 25.9.2013

माह : नवम्बर, 2013

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
8.11.2013	शुक्रवार	जोधपुर	11	हिन्दी	7	रजनी
9.11.2013	शनिवार	उदयपुर	7	विज्ञान	11	जंतुओं और पादप में परिवहन
11.11.2013	सोमवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
12.11.2013	मंगलवार	जयपुर	8	हिन्दी	7	क्या निराश हुआ जाए (निबंध)
13.11.2013	बुधवार	जोधपुर	6	संस्कृत	8	अस्मांक विद्यालय (पंचमी-पष्ठी विभक्ति)
14.11.2013	गुरुवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		बाल दिवस
16.11.2013	शनिवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		महाकवि कालीदास
18.11.2013	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		हमारे प्रणेता गुरुनानक
19.11.2013	मंगलवार	जोधपुर	8	हमारा राजस्थान (सामा. विज्ञान)	9	लोक संगीत एवं नाट्य
20.11.2013	बुधवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		अनेकता में एकता
21.11.2013	गुरुवार	बीकानेर	10	सामाजिक विज्ञान	6	उत्तरदायित्व में भागीदारी
22.11.2013	शुक्रवार	जयपुर	8	हिन्दी	5	नयी समस्याएँ
23.11.2013	शनिवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		प्लास्टिक का कचरा, जान का खतरा
25.11.2013	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		राजस्थान के स्वतंत्रता सैनानी
26.11.2013	मंगलवार	बीकानेर	7	संस्कृत	7	संकल्पः, सिद्धिदायकः (धातु प्रयोग)
27.11.2013	बुधवार	जयपुर	6	संस्कृत	6	अहं नमामि (पद्यपाठ)
28.11.2013	गुरुवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		राजस्थान के लोक देवता
29.11.2013	शुक्रवार	उदयपुर	9	विज्ञान	13	हम बीमार क्यों होते हैं
30.11.2013	शनिवार	बीकानेर	7	सामाजिक विज्ञान	12	जेण्डर भेदभाव की समझ

पंचांग : माह नवम्बर, 2013

नवम्बर, 2013					
रवि		3	10	17	24
सोम		4	11	18	25
मंगल		5	12	19	26
बुध		6	13	20	27
गुरु		7	14	21	28
शुक्र	1	8	15	22	29
शनि	2	9	16	23	30

नवम्बर, 2013 ● कार्य दिवस 19, रविवार 04, अवकाश 07, उत्सव 04 ● 3 नवम्बर–दीपावली (अवकाश) **4 नवम्बर**–गोवर्धन पूजा (अवकाश) **5 नवम्बर**–भैया दूज (अवकाश) **11 नवम्बर**–राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव), माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की प्रतियोगिता के लिए राज्य स्तर पर आयोजन प्रस्तावित। **14 नवम्बर**–बाल दिवस (उत्सव), कालीदास जयन्ती (उत्सव) **11–16 नवम्बर**–बालिका शिक्षा (नवाचारी) के अंतर्गत जिला स्तरीय ''आओ देखो सीखो'' प्रतियोगिता का आयोजन। **15 नवम्बर**–मोहर्रम (अवकाश) **17 नवम्बर**–गुरुनानक जयन्ती (अवकाश-उत्सव) **19–25 नवम्बर**–कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। **22–23 नवम्बर**–शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु तहसील स्तर पर चयन। **23 नवम्बर**–मीना मंच के अन्तर्गत ''लड़कियों की वापसी'' कहानी का वाचन एवं चर्चा। **25–30 नवम्बर**–बालिका शिक्षा (नवाचारी) के अंतर्गत अध्यापिका मंच कार्यशाला का आयोजन। **28–29 नवम्बर**–शिक्षण खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **30 नवम्बर**–विद्यालय सुविधा अनुदान के उपयोगिता प्रमाण-पत्रों का प्रेषण (प्रारम्भिक) **नोट :–1.** विद्यालय स्तर पर प्रतियोगिताएं/एस.यू.पी.डब्ल्यू. शिविर/वार्षिक उत्सव 30 नवम्बर, तक अनिवार्यतः सम्पन्न किये जावें। **2.** कम्प्यूटर प्रशिक्षण। **3.** द्वितीय/तृतीय रविवार NTSE (प्रथम स्तर) व NMMS राज्य स्तरीय परीक्षा का आयोजन। **4.** केरियर डे आयोजन सम्बन्धि पूर्व प्रशिक्षण (SIERT के माध्यम से) जिला स्तर पर आयोजन। **5.** अभिभावकों/शिक्षकों की नवम्बर के द्वितीय सप्ताह में संयुक्त बैठक आयोजित कर द्वितीय परख के प्रगति पत्र विद्यार्थियों/अभिभावकों को वितरण एवं शैक्षिक प्रगति हेतु विचार विमर्श। **6.** विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (राज्य स्तर) का तृतीय या चतुर्थ सप्ताह में आयोजन।

शिक्षकत्व शिष्य के प्रति समर्पण में है

❑ पी. डी. सिंह

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर किसी भी शिक्षण संस्था एवं शिक्षकों के लिए एक प्रेरणा मनीषी है। उनके अनुसार गुरु का दायित्व यह होना चाहिए कि अपने प्रेरक व्यक्तित्व से, अपने ज्ञान, चिन्तन, मनन में शिक्षण से अपने छात्रों में मानव एवं प्रकृति के प्रति आदर को प्रोत्साहन दें। शिक्षक का सम्बन्ध केवल देने ही देने का न हो बल्कि शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे के साथ पारस्परिक आदान-प्रदान अनुभव करें।

गुरुदेव के अनुसार शिक्षक यंत्र नहीं हैं, वे तो मनुष्य हैं, निष्क्रिय नहीं, सक्रिय प्रकार के क्योंकि वे उस साधना से संलग्न है जिसका लक्ष्य मनुष्यत्व। शिष्य के मन-मस्तिष्क को गतिशील करके ऊंचा उठाना ही उनकी अपनी साधना का अंग है। शिक्षक को पूरा जीवंत व्यक्ति होना चाहिए। सबसे अधिक प्रभावशाली तो वही शिक्षक है जो केवल अपनी उपस्थिति से ही बिना चेष्टा के प्रभावित कर देता है। ऐसा प्रभावी व्यक्तित्व समर्पित एव स्नेहिल होता है।

जब शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मन मिल जाते है, जब दोनों एक दूसरे को स्वीकार कर लेते हैं तो खुशी अपने आप जाग्रत होती है और सीखने-सिखाने का आनन्द ही कुछ और होता है। यही खुशी जन्म देती है, हवा देती है, प्रोत्साहन देती है, सृजनशीलता को। शिक्षा-दान वस्तुतः इसी खुशी का दान है जिनके मन में व्यावसायिक दृष्टि से कर्तव्य बोध तो है पर खुशी नहीं, उनका रास्ता दूसरा है।

टैगोर के अनुसार गुरु-शिष्य के बीच सापेक्ष-सहज सम्बन्ध उसी गुरु में हो सकता है जो बालक के साथ बालक हो सके, जिसके अन्तर का चिरंजीवी बाल्यपन सूखा न हो। जिसके बारे में बालक यह महसूस करे कि वह अभिन्न है। जिनका बाल्यपन सूखकर काठ हो गया है वे बच्चे की जिम्मेदारी नहीं ले सकते। यदि बालक गुरु को अपने से परे मानेंगे तो उसकी ओर निर्भय हाथ नहीं बढ़ा सकेंगे।

कहने का तात्पर्य और सारांश यही है कि कक्षा में पाठ पढ़ाने, सिद्धांतों का बखान करने से शिक्षा नहीं होती है वह तो होती है प्रेम से अपने को उंडेल देने से। बालक विश्वास, प्रेम, आनन्द और आजादी के वातावरण में ही सही शिक्षा प्राप्त कर सकता है। रवीन्द्रनाथ शिक्षकों से कहते हैं सिद्धांत का उपदेश ही देते रहने की चेष्टा न करो बल्कि करो यह कि प्रेम से अपने आपको ही दे डालो। अपने को जांच कर तो देखिये कि गुरुदेव की इस कसौटी पर आपका स्थान कहां है? क्या आप में कक्षा में जाने की ललक है और क्या विद्यार्थियों में भी आपके आगमन की ललक है?

-टैगोर ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स
शास्त्री नगर, जयपुर-302016
मो. 9829014513

❑

हमारे संस्थान

सुनहरा अतीत रहा है सादुल स्पोर्ट्स स्कूल का

❒ लक्ष्मीनारायण शर्मा

राजस्थान का एक मात्र स्पोर्ट्स स्कूल है- राजकीय सादुल स्पोर्ट्स स्कूल, बीकानेर। थार मरुस्थल के ऐतिहासिक नगर बीकानेर में जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर एवं गंगानगर को जाने वाले राजमार्गों के योजक चौराहे चौधरी भीमसेन सर्किल के बिल्कुल पास स्थित है यह स्कूल। बीकानेर का मुख्य बस स्टेण्ड तो विद्यालय के जैसे बगल में ही है, पर रेल्वे स्टेशन भी 2-3 कि.मी. से अधिक दूर नहीं है। पास ही स्थित है प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय। राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षण संस्थान- आईएएसई (टी.टी.कॉलेज) राजकीय करणीसिंह स्टेडियम, राजकीय महारानी स्कूल व कॉलेज, कलेक्ट्रेट, जिला न्यायालय विश्व विद्यालय सब समीप है इस विद्यालय के।

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल वस्तुतः इस संस्था के क्रमशः हुए कायाकल्प का तीसरा पड़ाव है जो रियासत काल में अब से लगभग सवा सदी पूर्व सन् 1893 में वाल्टर नोबल्स स्कूल के रूप में बीकानेर के 21वें महाराजा गंगासिंह जी के द्वारा स्थापित किया गया था। तब इस विद्यालय में केवल राजघराने से सम्बद्ध बालक ही विद्या अध्ययन कर सकते थे लेकिन 1944 में तत्कालीन महाराजा शार्दूल सिंह ने इसे जन साधारण के लिए खोलते हुए एक पब्लिक स्कूल के रूप में तब्दील कर दिया और इसे शार्दूल पब्लिक स्कूल के रूप में पहचान मिली। इस प्रकार यह संस्था का दूसरा पड़ाव था।

महाराजा गंगासिंह वाल्टर नोबल्स स्कूल में गहरी रुचि रखते थे। देखा जाए तो उन्होंने अपने समय के विख्यात पब्लिक स्कूलों यथा मेयो अजमेर, चौपासनी राजपूत स्कूल जोधपुर तथा नोबल्स स्कूल माउंट आबू आदि को देखकर ही विस्तृत भूभाग में दुलमेरा के लाल पत्थरों से सुन्दर नक्काशी से युक्त इस भव्य स्कूल भवन का मय छात्रावासों के निर्माण करवाया था। यहां के खेल मैदानों की छटा निराली थी। स्कूल की फुटबाल टीम का पूरे देश में दबदबा था। प्रारम्भिक दौर में यहां तीन खेल मैदान, दो बालीबाल कोर्ट, एक टेनिस कोर्ट तथा एक बैडमिंटन कोर्ट थे।

यद्यपि, पाठकों की रुचि इस ऐतिहासिक विद्यालय का इतिहास जानने में होगी तथापि यहां वर्तमान सादुल स्पोर्ट्स स्कूल के बारे में चर्चा करनी समीचीन होगी। अब से कोई तीन दशक पूर्व सन् 1982 में सादुल स्पोर्ट्स स्कूल राज्य के प्रथम क्रीडा स्कूल के रूप में अस्तित्व में आई। वर्तमान में विद्यालय में हॉस्टलर एवं डे-स्कालर दोनों ही तरह के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं जिनकी अधिकतम संख्या क्रमशः 244 एवं 106 है। छात्रावासीय छात्रों को शुल्क मुक्ति, निःशुल्क आवास एवं भोजन की सुविधा देय है। नाश्ते लंच एवं डिनर का साप्ताहिक वार के हिसाब से मीनू बना हुआ है। खानपान में उचित केलोरीज एवं पौष्टिकता का पूरा ख्याल रखा जाता है।

सादुल स्पोर्ट्स स्कूल का भवन राजशाही कला का द्योतक है विद्यालय में स्वीमिंग पूल, लिलिपॉण्ड, विशाल भोजन कक्ष खेलों के मैदान कॉमन रूम, अतिथि गृह आदि आकर्षण के केन्द्र हैं। विद्यालय के अपने पांच हाउस हैं क्रमशः बीका हाउस, करणी साउथ, करणी नार्थ, प्रताप हाउस व अमर हाउस, जिनमें छात्रों के आवास की उचित व्यवस्था है विद्यालय में पेयजल की समुचित उपलब्धता है यहां कला, वाणिज्य एवं विज्ञान तीनों संकायों में शिक्षण व्यवस्था है। विज्ञान की सुसज्जित प्रयोगशालाएं हैं।

वर्तमान में विद्यालय में कुल 12 प्रकार के खेलों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है जिनके नाम तथा स्वीकृत अधिकतम छात्र-खिलाड़ी संख्या इस प्रकार है-1. ऐथेलेटिक्स (20), 2. बास्केटबाल (20), 3. क्रिकेट (24), 4. फुटबाल (24), 5. जिमनास्टिक (15) 6. हेण्डबाल (20), 7. हाकी (31), 8. कबड्डी (20), 9. खोखो (20), 10. टेबल टेनिस (10), 11.बालीबाल (26) एवं कुश्ती (14) विद्यालय में 6 से 12 तक के औपचारिक अध्ययन-अध्यापन के साथ विशेषज्ञ खेल प्रशिक्षकों के द्वारा इन स्वीकृत खेलों में प्रशिक्षण दिया जाता है। विद्यालय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर से सम्बद्धता प्राप्त है। विशिष्ट स्थिति का विद्यालय होने के कारण इसमें शिक्षा विभाग के उप निदेशक पद के अधिकारी प्राचार्य के रूप में नेतृत्व प्रदान करते आए हैं। यहां उप-प्राचार्य का पद राजकीय उ.मा.विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा आवासीय हाउस मास्टर का पद राजकीय माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक के

समकक्ष श्रेणी का होता है।

प्रति वर्ष शैक्षणिक सत्र शुरू होने पर जुलाई माह में विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रवेश देने का कार्य होता है। प्रवेश के लिए इच्छुक बालक का राजस्थान का मूल निवासी होना जरूरी है। साथ ही उनकी अधिकतम आयु का भी प्रावधान है। जिसका आयु समूह (12-19 वर्ष) है। छात्र की खेलों में रुचि तथा खेल पृष्ठभूमि होना भी आवश्यक है। आयु, अनुभव एवं प्रवेश सम्बन्धी प्रावधान विद्यालय द्वारा जारी विवरणिका में देखे जाने चाहिए।

विद्यालय की गत चार वर्षों की छात्र संख्या इस प्रकार है-2009-10 : 222, 2010-11 : 232, 2011-12 : 227, 2012-13 : 247 (वर्तमान)

विद्यालय के सुसंचालन तथा विकास की योजनाएं बनाने तथा उनकी क्रियान्विति का प्रबोधन एवं नियमन करने के लिए उच्च स्तर पर निदेशक, माध्यमिक शिक्षा की अध्यक्षता में एक गवर्निंग काउन्सिल बनी हुई है जिसमें जिला कलक्टर, बीकानेर एवं शिक्षा व वित्त विभाग के उप सचिवों सहित उच्च अधिकारी एवं अभिभावकों के प्रतिनिधि आदि सदस्य तथा प्राचार्य सदस्य सचिव होते हैं।

इस विशिष्ट हैसियत का आधार कदाचित वाल्टर नोबल्स स्कूल के दौर की व्यवस्था है जब महाराजा बीकानेर स्वयं विद्यालय के अध्यक्ष होते थे। वे समय-समय पर विद्यालय में आते थे। यहां तक कि टाइम टेबल का अनुमोदन स्वयं महाराजा करते थे। सितम्बर माह में प्रिंस शार्दुल सिंह के जन्म दिवस पर स्कूल के विद्यार्थियों को लालगढ़ पैलेस में आमंत्रित किया जाता था तथा उन्हें पेस्ट्री और आइसक्रीम की दावत दी जाती थी। महाराजा गंगासिंह ने 107 वर्ष पूर्व 22 नवम्बर 1906 को भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड मिंटो की विद्यालय में विजिट कराई तथा अपने भाषण में कहा, योर एक्सीलैंसी, दीज ब्यॉज आर दी फ्यूचर सोल्जर्स ऑफ दी बीकानेर स्टेट... वाइसराय लार्ड इरविन ने भी सन् 1927 में महाराजा गंगासिंह के साथ विद्यालय की विजिट कर एक-एक कक्षा का निरीक्षण कर विद्यार्थियों के साथ बातचीत की थी। यहां के विद्यार्थियों को घुड़सवारी, तैराकी, अंग्रेजी में सम्भाषण सैन्य ड्रिल आदि का नियमित प्रशिक्षण दिया जाता था प्रति सप्ताह एक डॉक्टर स्कूल में आकर उनके स्वास्थ्य की जांच करता था।

वाल्टर नोबल स्कूल में विभिन्न विषयों एवं खेलकूद आदि गतिविधियों में बच्चों की कमजोरी दूर करने अथवा अतिरिक्त निपुणता हासिल करने के लिए विशेष कक्षाएं लगाई जाती थी। सायं को लगने वाली इन कक्षाओं को Prep Classes कहा जाता था। इसमें विद्यालय के ही अध्यापक बच्चों को पढ़ाते थे जिसके लिए उन्हें अतिरिक्त पारिश्रमिक दिया जाता था। यह व्यवस्था सादुल पब्लिक स्कूल के दौर तक चलती रही। वर्तमान में ट्यूशन को लेकर जो अप्रिय स्थितियां देखने सुनने को आती है, उसके लिए ये कक्षाएं आज भी चिन्तन को मजबूर करती है।

वर्तमान सादुल स्पोर्ट्स स्कूल का प्रशासनिक नियन्त्रण माध्यमिक निदेशालय के अन्तर्गत आता है। विद्यालय के भवन छात्रावासों, सड़क आदि का जीर्णोद्धार करने के लिए राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2013-14 में 3.00 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं, जिसमें से 280.81 लाख रुपये की वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वीकृति जारी की चुकी है।

विद्यालय का बहुत सुनहरा इतिहास रहा है और वर्तमान में भी विभिन्न गतिविधियों तथा खेलकूद स्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर शाला प्रशासन द्वारा शासन एवं विभाग का नाम रोशन किया जा रहा है। विद्यालय में अनुशासन एवं व्यवस्था को सर्वोपरी स्थान दिया जाता है। प्रातः 5.00 बजे चेतावनी घंटी के साथ ही शुरू होने वाला दैनिक सफर खेलकूद, स्नानादि आवास निरीक्षण ब्रेकफास्ट, प्रार्थना, अकादमिक अध्ययन, लंच, विश्राम, स्वाध्याय, क्रीड़ाभ्यास, सायकालीन प्रार्थना, डिनर, स्वाध्याय आदि गतिविधियों में गुजरता हुआ रात्रि 10.00 बजे जाकर सम्पन्न होता है।

शार्दुल पब्लिक स्कूल के जमाने में पढ़े अनेक महानुभाव राजनीति, कारोबार, नौकरी आदि क्षेत्रों में बहुत ऊंचे मुकाम पर पहुंचे हुए हैं विद्यालय के प्रति आकर्षण व प्रेम उनके मन में गहराई तक बसा हुआ है। वे जब भी बीकानेर आते हैं संस्था में आना नहीं भूलते और आखिर यही तो वह ताकत है जो संस्थाओं को जिन्दा तथा उनमें काम करने वालों को अमरत्व प्रदान करता है। समय-समय पर पुरातन छात्रों की मीट आयोजित की जाती है ताकि देश-विदेश में रह रहे छात्र यहाँ आकर अपनी स्मृतियों को ताजा कर सके। कहना न होगा कि इन मुलाकातों से विद्यालय की श्री समृद्धि में तो वृद्धि होनी ही होती है। शरीर से बेशक नहीं मगर उनके यश कीर्ति को लेकर इस संस्था में काम कर चुकी ब्रह्मलीन विभूतियों में सर्वश्री जुगल किशोर खींची, पं.चिमनलाल गोस्वामी, पं.चुन्नीलाल शर्मा, लक्ष्मीनारायण पांडे आदि नाम आज भी श्रद्धा के साथ याद किये जाते हैं।

इसी प्रकार वाल्टर नोबल्स स्कूल एवं शार्दुल पब्लिक स्कूल नाम भले ही अब इतिहास पेटे में समा गए हों, मगर अपनी तत्कालीन उत्कृष्टता के कारण सार्वजनिक उपयोगिता के शीर्ष उदाहरण बन गए हैं।

(लेखक शिविरा से सम्बद्ध रहे हैं।)

-प्रधानाध्यापक, रा.मा.वि.,देवीकुण्डसागर (बीकानेर)
मो. 9214414547

झरोखा-ए-अतीत

वर्तमान सादुल स्पोर्ट्स स्कूल की पूर्ववर्ती वाल्टर नोबल्स स्कूल के संस्थापक बीकानेर के 21वें महाराजा गंगासिंह थे। इन्होंने राजपूताना के ए.जी.जी. रहे सर के.एम. नोबल्स के नाम से इस विद्यालय की स्थापना की थी। गंगासिंह जी के अनुसार ए.जी.जी. वाल्टर ने एक बार माउण्ट आबू में उन्हें टॉयफायड होने पर सेवाश्रूषा करके उनकी प्राण रक्षा की थी।

वाल्टर नोबल्स स्कूल में 8 वर्ष तक प्रधानाचार्य रहे पं. चुन्नीलाल शर्मा महाराजा सादुलसिंह के निजी ट्यूटर भी रहे थे और उनके प्रति महाराजा के मन में अपार श्रद्धा व सम्मान था। महाराजा ने न केवल अपने राज्य शिक्षण के समय पं.चुन्नीलाल जी शर्मा को दरबार में कतिपय अतिविशिष्ट महानुभावों में बुलाकर उन्हें प्रणाम कर उनका आशीर्वाद ही लिया बल्कि उन्हें डायरेक्टर ऑफ एज्यूकेशन बनने हेतु निवेदन भी किया।

प्राचार्य रहे चिमनलाल गोस्वामी कालान्तर में कल्याण पत्रिका के सम्पादक रहे। सादुल स्पोर्ट्स स्कूल परिसर में ही बीकानेर का शिक्षक भवन डा. राधाकृष्णन शिक्षक सदन बना है।

जीवन विज्ञान

सफल जीवन के सात सरल नियम

❒ ब्रिग्रेडियर करणसिंह चौहान

आज के भौतिकवाद में हर व्यक्ति किसी न किसी कारणवश संशयों से घिरा हुआ है, और उसकी अहं की मनोवृत्ति ने उसकी अन्तरात्मा की आवाज को पूर्णतया दबा दिया है। इस स्थिति का वर्णन मारसिलियों फिसिनों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से किया है–'क्योंकि हम जीवन में मानवीय गुणों को झूठे और अवगुणों को वास्तविक रूप से प्रस्तुत करते हैं, इसलिए आज जीवन में झूठापन और दुःखों में वास्तविकता आ चुकी है।'

इस स्थिति को ठीक करने के लिए क्या किया जाए? उल्टे घड़े में तो पानी नहीं भरा जा सकता है। अतः अपने जीवन को सार्थक, सुखी, आनन्दमयी बनाने के लिए होने वाले अनुभवों से ज्ञान ग्रहण करना होगा। प्रकृति की देन, यह जीवन आपका स्वयं का है और जब आप जीवित है, आप मरे नहीं है। जीवन अस्थाई क्षणों से आनन्द प्राप्त करता है, उसी प्रकार सम्पूर्ण जीवन से भी आनन्द प्राप्त किया जा सकता है।

प्रकृति का कितना अद्भुत करिश्मा है, कि हर व्यक्ति एक ऐसी कहानी है, जिसकी कथा अपने आप में अद्वितीय है। हर व्यक्ति की एक विशिष्ट कृति है, फिर क्या किसी व्यक्ति को और भी विशिष्टता प्राप्त करने के लिए विभिन्न नाटकीय प्रदर्शन करना आवश्यक है।

हर मनुष्य में इतनी क्षमता है कि यदि वह वैज्ञानिक विश्लेषण से अन्तर्निरीक्षण करे, तो वह ब्राउनिंग के कथन को चरितार्थ करेगा, 'हर व्यक्ति अपनी पहुंच से अधिक पा सकता है, क्योंकि नहीं तो स्वर्ग किसलिए है।' उनका संकेत मानवता, आनन्द, भाईचारे की ओर था। मैक्सिम गोर्की ने एक बार किसानों के एक सम्मेलन में कहा कि विज्ञान ने मनुष्य को उड़ना एवं समुद्र की गहराई में मछली के समान रहना सिखाया कि इंसान को किस तरह इस भूमि पर शांति एवं भाईचारे से रहना चाहिए। 'यदि हम चाहें तो उत्कृष्ट जीवन जी सकते हैं। इसके लिए जीवन की इस यात्रा में हमें कुछ ऐसे नियमों का सहारा लेना पड़ेगा जो सिद्ध हो सकते हैं और अनुभव के आधार पर निम्न उल्लिखित सात नियम आवश्यक कारगर होंगे–

1. स्वयं को व्यवस्थित करना :–

यदि आप किसी फ्रेम में पूर्णतया जकड़े हुए है, तो आप अपनी तस्वीर को नहीं देख पाएंगे। अतः बिना किसी दायित्व एवं मानसिक प्रवृति के स्वयं का विश्लेषण कर, व्यवस्थित करना आवश्यक है। इसके लिए सर्वप्रथम समय में प्रबन्धन करना महत्वपूर्ण है। चूंकि एक व्यक्ति एक समयबद्ध कार्यक्रम के तहत इस संसार में आता है, अतः समय का किसी भी प्रकार से बचाव न करते हुए उसका पूर्ण विनियोजन किया जाए। हर पल आपके जीवन का एक अभिन्न अंग है तथा जो एक बार चला गया, तो लौटकर नहीं आएगा। हर अतिरिक्त मिनट की ओर गौर करें, कहीं वह बेकार न चला जाए। यदि आपके पास 'वेटिंग टाइम' है तो उसे 'वरकिंग टाइम' में बदलें। स्वयं को व्यवस्थित करने के लिए समय की पाबन्दी, आज का कार्य आज करना, कार्य में वरीयता निर्धारित करना, कार्यालय का कार्य कार्यालय में ही करना, 'वेनयू लीव योर ऑफिस–लीव योर ऑफिस' आदि सहायक है।

जापान में एक कहावत है, 'यदि आप अच्छे दिखते है, तो अच्छा करते है।' स्वयं के रखरखाव में यह जरूरी है कि आप अच्छे दिखाई दें। आपके शरीर, वेशभूषा, बोलचाल से स्वतः ही आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। हाल ही में एक अध्ययन में पाया गया कि यदि किसी व्यक्ति की मेज पर अथवा घर में फालतू यानी जरूर से अधिक सामान है तो उस व्यक्ति के दिमाग में भी अतिरिक्त या व्यर्थ सामग्री रखने की प्रवृत्ति होगी, जिसके कारण उसके निर्णय लेने की क्षमता में भी कमी आएगी। यदि कोई भी वस्तु गत तीन वर्षों से आपके किसी उपयोग में नहीं आई है, तो आप गंभीरता से विचार करें कि क्या वह आपके उपयोग की वस्तु है? स्वयं को व्यवस्थित करना जीवन की सफलता के लिए पहला एवं मुख्य बिन्दू है। इसके लिए समय में निम्नालिखित तीन बातें लाभदायक सिद्ध हो सकती है–

जीवन में जब कभी मुंह को बन्द रखने का अवसर प्राप्त हो, तो उसे कभी नहीं खोएँ। आप तब तक वेशभूषा पहन कर पूरी तरह तैयार नहीं हैं, जब तक आपके अपने चेहरे पर मुस्कान धारण नहीं की है।

ईश्वर ने हमें दो कान और एक मुंह दिया है। अतः दो बार सुनना और एक बार बोलना स्वयं को व्यवस्थित करने में अति आवश्यक है। सदियों के विश्लेषण से यह भी सिद्ध हुआ है कि यदि जीवन में कोई चीज गलत समय पर खुलती है, तो वह हमारा मुंह है।

2. क्षितिज से परे दृष्टिपात:–

यदि किसी मनुष्य की ऊंचाई 5 फुट 8 इंच है, तो वह इसे बढ़ाकर 5 फुट 11 इंच नहीं कर सकता है, लेकिन अपने ज्ञान से वह ऐसी सीढी तैयार कर सकता है, जिसकी सहायता से वह कितनी ही ऊंची मंजिलों को छू सकता है। एक अमरीकी दार्शनिक ने अपने शोध 'की टू माइन्ड्स ऑफ मैन' में कहा है कि 'जीवन में कठिनाइयां वास्तविकता में कठिनाइयां नहीं हैं, ये हमारी प्रगति में सहायक मील का पत्थर हैं। हम समझें कि अपनी कठिनाइयां समाप्त हो जाएं और हमारे रास्ते में गुलाब बिछ जाएं तो हम उन पर चलने योग्य नहीं रहेंगे। ऐसी स्थिति में हम अपना जीवन क्षितिज तक ही सीमित रख पाएंगे इस बंधन को तोड़ने के लिए व्यवसाय के अतिरिक्त अन्य रुचियों जैसे नृत्य, संगीत, कविता, विज्ञान, अर्थशास्त्र, कुकिंग, ट्रैकिंग, हिल क्लाइम्बिंग, बर्ड वॉचिंग, अध्ययन, चित्रकारी, फोटोग्राफी आदि को भी विकसित करें ताकि आपके व्यक्तित्व में निखार आ सके एवं जीवन का रहस्य समझते हुए आनन्द प्राप्त कर सकें। सोक्रेटीज जब फांसी की सजा का इंतजार कारागृह में कर रहे थे, उनके पास के कक्ष

में कैदी ने बहुत अच्छा गाना बजाया। तब सोक्रेटीज ने उससे निवेदन किया कि वह उन्हें गाना सिखा दें। उसने पूछा कि, अब जब वे फांसी पर चढ़ रहे हैं, तो फिर यह गीत क्यों सीखना चाहते हैं। सोक्रेटीज ने कहा कि, फांसी के पूर्व मैं एक ज्ञान और प्राप्त करना चाहता हूँ। किसी भी यात्रा के लिए कम सामान अत्यधिक सुखदायी होता है। इसी प्रकार जीवन यात्रा में आप जितने हल्के है। संसार का स्वरूप उतना ही आनन्दमयी होता है। कहा गया है 'वैन यू आर लाइटर वर्ड आर ब्राइटर'। निस्वार्थ सेवा कर धन्यवाद प्राप्ति की क्षमता बढ़ जाती है। समर्पण के भाव से सेवा कर धन्यवाद प्राप्ति की भी अपेक्षा न करें। जब हम इस स्थिति में प्रवेश करते है, क्षितिज की दीवारें हमें जकड़ नहीं सकती। इसी सेवा से त्याग की प्राप्ति होती है। जब बरकन हेड पोत डूब रहा था अलक्जेंडर रसल, जो सिर्फ 17 वर्ष के युवा अधिकारी थे, नौका द्वारा कुछ यात्रियों को बचाकर ले जा रहे थे नौका में और जगह नहीं थी। थोड़े समय पश्चात एक व्यक्ति ने नौका से यह कहते हुए समुद्र में छलांग लगाई कि भगवान तुम्हें सुखी रखे। यह एक उत्कृष्ट और आदर्श उदाहरण है। बिना किसी प्रलोभन के कुछ करना ही जीवन-पटल के रहस्य को खोलता है।

3. समस्याओं के समाधान करने की क्षमता :-

जब तक जीवन है, तब तक समस्याएं है। इसके लिए आवश्यक है कि हम इन्हें माने, स्वीकार करें, उनसे समायोजन करें, तत्पश्चात् स्थिति को सुधारने का प्रयत्न करें। समस्याओं से आंखें मूंद लेना कमजोरी का द्योतक है। हर समस्या में सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रतिक्रिया निहित होती है एवं यह अपने आप में सकारात्मक संभावनाओं को जन्म देती है। समस्याओं का समाधान करने से मनुष्य गुणात्मक रूप से शक्तिशाली बनता जाता है। यदि किसी परिस्थिति में समस्या का हल न निकल सके, उसका प्रबंध करें, जिसकी क्षमता हर व्यक्ति में पर्याप्त रूप से विद्यमान होती है। लौग फैलो ने लिखा है कि 'अगर वर्षा हो रही हों, तो सबसे अच्छा विकल्प व्यक्ति के लिए यह है कि उसे होने दें।

एक बार नोरमन बिसेन्ट पील को एक मित्र ने अपनी गंभीर समस्या सुनाई। सुनकर, पील ने कहा कि, 'आपकी व्यथा वास्तव में दुःखदायी है। मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूं, जिनकी कोई समस्याए ही नहीं है। पील उस महानुभाव को कब्रिस्तान ले गए और वहां कब्रों को दिखाते हुए कहा कि इन व्यक्तियों की कोई समस्या नहीं हैं। जिस प्रकार झरने के प्रवाह के मध्य आने वाली चट्टानों को हटा देने से झरने का सुगम संगीत प्राप्त नहीं हो सकता, उसी प्रकार मानव जीवन में से समस्त समस्याओं को हटा देने से जीवन का आनन्द लुप्त हो जाता है।

4. सफलता एवं असफलता, एक ही सिक्के के दो पहलू :-

जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करने के लिए असफलताओं का होना भी उतना ही आवश्यक है, जितना सफलताओं का।

डॉ. एनीबेसेन्ट ने लिखा है, कि असफलताएं हमें अधिक शक्ति से विजय प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है और हम उनके समाधान से शक्तिशाली बनते जाते है। इस संबंध में हर बार यह प्रश्न पूछना आवश्यक है कि क्या हम समस्याओं से आंख मूंद रहे हैं या उन पर विजय प्राप्त कर रहे हैं? इस संबंध में सकारात्मक सोच और कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। प्रो. टॉम विटटेकर का उल्लेख प्रासंगिक है जो पर्वतारोहण में गहन रुचि रखते थे। 49 वर्ष की आयु में कृत्रिम पैर की सहायता से माउन्ट एवरेस्ट पर चढ़े। कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, अतः परिश्रम करते रहना ही सफलता की कुंजी है।

यदि हम शैक्षणिक योग्यता के कारण असफलता की बात करें तो कुछ उदाहरण हमारे लिए प्रेरणास्पद होंगे:-

1. नेपोलियन मिलिट्रीएकेडमी में 42वें रैंक पर थे।
2. अल्बर्ट आइन्स्टाइन ने 4 वर्ष की आयु में बोलना और 7 वर्ष की आयु में पढ़ना सीखा था।
3. इसाकन्यूटन स्कूल में बहुत ही कमजोर विद्यार्थी थे।
4. विन्सटन चर्चिल छठी कक्षा में फैल हुए थे।
5. थोमस एडीशन को उनके शिक्षकों ने 'स्टूपिड' करार दिया।
6. अब्राहिम लिंकन जीवन में 18 बार फैल होकर अमरीका के राष्ट्रपति बने।

5. स्वस्थ शरीर :-

पंचतंत्र में लिखा है कि स्वास्थ्य से अच्छा कोई दोस्त नहीं है और बीमारी से खराब कोई दुश्मन नहीं है। मानव जीवन एक अमूल्य धरोहर है और दूसरा स्थान स्वास्थ्य को है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। शरीर स्वस्थ रखना व्यक्ति का निजी दायित्व है। बीमारी की स्थिति में व्यक्ति न केवल स्वयं का, अपितु अपने परिवार एवं समाज का समय भी नष्ट करता है। आप किसी स्वास्थ्य पत्रिका को पढ़ें या चिकित्सक से परामर्श लें। अंत में यही सलाह दी जाती है कि स्वस्थ शरीर के लिए आप नियमित भोजन एवं व्यायाम करें। यदि आप याद रख सकें, तो एक छोटा सा सूत्र आपको बहुत सी बीमारियों से छुटकारा दिला सकता है- वस्तु प्रयोग में लाओ अन्यथा नष्ट हो जाएगी (युज इट ऑर लूज इट)। लाला हरदयाल ने अपनी पूस्तक 'हिंट फॉर सैल्फ कल्चर' में लिखा है कि 'अच्छे स्वास्थ्य के बिना जीवन एक भार है।' उन्होंने यह भी सलाह दी थी कि यदि आप हरी सब्जियां खाएँ, कम खाएँ व रोज परिश्रम करें तो आप स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त कर सकते है, (ईट ग्रीन्स एण्ड रिमेन इन टीन्स)। 'व्यायाम मांसपेशियों के नव-निर्माण का मुख्य अभिकर्ता है। व्यायाम मांसपेशियों के नव-निर्माण का मुख्य अभिकर्त्ता है।

स्वस्थ रहने के लिए हंसना आवश्यक है। यह एक ऐसा शान्ति प्रदान करने वाला कार्य है, जिसका कोई साइडइफेक्ट नहीं है। यदि आप 20 सैकण्ड हंसे, तो उससे आपके हृदय को इतना व्यायाम प्राप्त होता है, जितना 3 मिनट नौका चलाने से प्राप्त होता है। जापान में एक कहावत है, 'जो समय हंसने में बिताया जाता है वह समय भगवान के साथ बिताए जाने के बराबर है। यदि आर्थिक दृष्टिकोण से भी विश्लेषण किया जाए, तो हंसने में सिर्फ 13 मांसपेशियां काम में आती है, जबकि गुस्सा होने या क्रोध करने में 44 मांसपेशियां काम में आती है नारमैन कजिन्स ने अपनी पुस्तक 'एनाटॉमी ऑफ इलनैस' में यह संदेश दिया है कि गंभीर बीमारियां भी हंसकर बिटामिन-सी के प्रयोग और सकारात्मक सोच से दूर की जा सकती है। मुस्कान एक दैविक

वरदान है, जिनके लिए हमें हर समय प्रयत्नशील रहना चाहिए। यहां तक कि यदि हम दिखावे के आवरण में हंस न सकें, तो कृत्रिम मुस्कान धारण करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। अधिकतम बच्चे स्वस्थ रहते हैं, क्योंकि वे दिन में ओसतन 400 बार हंसते हैं, जबकि युवा दिन में औसतन 10-15 बार ही हंसता है।

6. मानसिक शान्ति का चमत्कार :-

कार्यसूची (प्रोग्रामिंग) एवं अनुकूलन (कंडीशनिंग) से जीवन के वही उत्तर प्राप्त होंगे, जो कि पूर्व निवेशन (फीड) किए हुए है। इससे व्यक्ति के व्यक्तित्व का आकार सिर्फ गणितीय गणनाओं तक ही सीमित रह जाएगा। 18 वर्ष की आयु में हमको औसतन एक लाख 48 हजार बार 'नो' (नहीं) सुनना पड़ता है, इसलिए हमारे व्यवहार में नकारात्मक प्रवृति प्रोगाम हो जाती है और इसी के कारण वैज्ञानिकों का यह कहना है कि हमारी सोच 75 प्रतिशत नकारात्मक हो जाती है। अतः मानसिक शान्ति के लिए हमें सर्वप्रथम प्रोग्रामिंग या कंडीशनिंग से बाहर निकलना होगा। इसके लिए ज्ञान, स्वाध्याय, ध्यान के अतिरिक्त व्यावहारिकता की आवश्यकता है। फ्रेच कौच ने यू.एस. नेवल संस्थान की पत्रिका 'प्रसिंडिंग्स' में प्रशिक्षण करते हुए दो युद्धपोत का चित्रण इस प्रकार से किया है-'एक युद्धपोत समुद्र में प्रशिक्षण पर था, तभी उसके सामने रोशनी नजर भेजकर आदेश दिया कि दूर हट जाओ, अन्यथा युद्धपोतों में टक्कर हो सकती है, सामने से जवाब आया कि आप दूर हट जाओ। युद्धपोत के अधिकारी ने पुनः आदेश दिया। 'मैं कैप्टन बोल रहा हूं, दूर हट जाओ।' इस पर सामने से जवाब आया 'मै सी-मैन क्लास टू बोल रहा हूं, आप दूर हट जाओ।' अन्त में कैप्टन ने गुस्से से कहा 'मैं अधिकारी हूँ। मैं एक युद्धपोत की कमान कर रहा हूं। तुम दूर हट जाओ,' तब सी-मैन ने कहा 'श्रीमान मैं एक लाइटहाउस (समुद्र में एक मजबूत स्तम्भ) की कमान कर रहा हूँ।

वास्तविकता की समझ शांति प्राप्ति का प्रथम चरण है। शारदा माता ने शांति प्राप्ति के लिए बहुत ही सरल उपाय बताया है कि-'यदि तुम शांति प्राप्त करना चाहते हो तो दूसरों में गलतियां ढूंढ़ना बंद कर दो, अपितु स्वयं की गलतियों को देखो।'

नोबेल पुरस्कार विजेता टी.एस. इलियट ने अपनी कविता 'दी वेस्ट लैण्ड' की अंतिम पंक्तियों में संस्कृत के ही शब्दों का बहुत अच्छा प्रयोग किया हैं। 'दता' (गीव) दया धयम (सिमपेथाइज) दमयता (कंट्रोल), शांति शांति शांति। शांति का तो एक अर्थ है, इसलिए इलियट ने अनुवाद नहीं किया।

7. श्रद्धा और धेर्य :-

प्रकृति और ईश्वर में श्रद्धा सहज रूप से आनन्द प्रदान कर जीवन को सुगम बना देती है। स्वयं में विश्वास से मनुष्य उन ऊँचाई तक पहुंच जाता है, जिसकी कल्पना उसने स्वयं ने भी नहीं की होती है। ऐसे कई उदाहरण है, जो जीवन का एक मुख्य अंग है। दादा वासवानी ने एक प्रसंग में श्रद्धा के बारे में बहुत ही सुन्दर वर्णन किया है- एक बार एक समुद्री जहाज में एक परिवार सफर कर रहा था। इसमें एक छोटा बच्चा भी था। अचानक समुद्र में तूफान उठा जहाज डूबने की स्थिति में आ गया। इससे सभी लोग घबरा गये, परन्तु वह छोटा बच्चा अपनी मस्ती में खेलता रहा। जब उससे यह पूछा कि क्या तुम्हें डर नहीं लगता तो उसने जवाब दिया 'मेरी मां मेरे साथ है, मुझे क्या डर।' इस प्रकार अटूट श्रद्धा से बड़ी से बड़ी कठिनाईयों का आसानी से सामना किया जा सकता है। सत्य यही है कि 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्' अर्थात श्रद्धा और ज्ञान से ही जीवन का आनन्द प्राप्त होता है, जिसमें 'जॉय दी विवेर' कहते हैं 'एक उगते कोमल पौधे को प्रतिदिन बाहर निकालकर यह देखा जाए कि उसमें कितनी वृद्धि हुई, तो शीघ्र ही वह पौधा सुख जाएगा। इसके लिए आवश्यक है कि धैर्य रखा जाए। 'माली सीचें सौ घड़ा' ऋतु आए फल होए से स्पष्ट है कि कुछ भी प्राप्त करने के लिए धैर्य अत्यन्त आवश्यक है।' अंग्रेजी कवि शैली का कथन 'इफ विन्टर कम्स कैन स्प्रिंग बीफॉर बिहाइन्ड' धैर्य का अनुठा चित्रण है।

भौतिक प्रगति तो सभी में निहित है, चाहे वह पौधा, पशु या मनुष्य हो, लेकिन मानसिक शक्ति के लिए प्रयास और दृढ़ निश्चय अत्यन्त आवश्यक है। मैं तूफानों से नहीं डरता, क्योंकि मैं अपनी नाव खैना जानता हूं। जीवन में आनन्द रूपी उड़ान भरने के लिए जिस प्रकार तितली चल पट्टीत केट्टर चिल्लर को तोड़कर ही उड सकती है उसी प्रकार उपरोक्त व्यावहारिक नियमों के सहारे जीवन में सफलता, उत्कृष्टता की प्राप्ति अवश्यम्भावी है जीवन एक ताजा गिरती बर्फ के समान है इस पर जैसे ही चला जाय निशान अवश्य ही छूटते है। अपनी जीवटता के कारण विश्वविख्यात हेलन केलर, जो जन्म से अंधी थी, ऐसे एक व्यक्ति ने पूछा कि आप सदैव प्रसन्नचितत्त कैसे रहती हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि 'मैं प्रतिदिन यह मानकर चलती हूं कि आज मेरे जीवन का अंतिम दिन है, क्यों न मैं इस आखिरी दिन का पूरा आनन्द उठा लूं। ऐसी आदर्श स्थिति ज्ञान व विद्या से ही प्राप्त होती है-'सा विद्या या विमुक्तये।' नियम जीवन में अनुशासन लाते हैं। इनके नियमित प्रयोग से आदत बनती है। आदत पर चरित्र निर्भर करता है और चरित्र से भाग्य उदय होता है। इसलिए स्वयं के लिए नियम बनाकर उन पर जीवन संचालित करना ही सफलता की कुंजी है।

-ग्रा.प्रो. सिरीसिला
बाली-306701 (पाली)
फोन 02938-222013

गाँधी जयंती पर सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

गाँधी जयंती के अवसर पर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रसगण, रामगढ़ (अलवर) के शाला प्रांगण में सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गई। विद्यार्थियों की योग्यता, स्तरानुसार प्रदर्शित हो सके, इसके लिए कक्षा 6, 7 व 8 के विद्यार्थियों को ए-वर्ग तथा कक्षा 9, 10 व 11 के विद्यार्थियों को बी-वर्ग में रखा गया।

ए-वर्ग में मोहम्मद मुस्तकीम (प्रथम); वेदिका (द्वितीय); एवं विजेन्द्र (तृतीय) स्थान पर रहे। इसी प्रकार बी-वर्ग में राकेश (प्रथम), नरेश (द्वितीय) एवं गंगो बाई (तृतीय) स्थान पर रहे। इन सभी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रतियोगिता में चौथ से दसवें स्थान तक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी प्रोत्साहित करने हेतु सांत्वना पुरस्कार प्रदान किया गया।

चलो कुछ कर दिखायें रीडिंग कैम्पेन को सफल बनायें

❒ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं, शिक्षित बच्चे देश की सबसे बड़ी अमानत होते हैं प्राथमिक शिक्षा पर ही आगे की शिक्षा निर्भर करती है। सच तो यह है कि प्राथमिक शिक्षा उच्च शिक्षा की नींव है किन्तु यदि नींव ही कमजोर रहेगी तो बच्चे आगे कैसे बढ़ेंगे? यह यक्ष प्रश्न हम सभी के लिए एक बड़ी चुनौती बन कर खड़ा हुआ है।

सरकारी विद्यालयों की स्थिति का आकलन किया जाए तो एक तथ्य जरूर सामने आएगा कि अधिकांश बालकों का स्तर उसकी वर्तमान कक्षा से एक कक्षा पूर्व के स्तर का भी नहीं है। इस तथ्य की पुष्टि गत वर्ष आयोजित शिक्षा सम्बलन अभियान के दौरान भी हुई है।

सम्बलन अभियान के दौरान यह देखने को मिला कि कक्षा 5 तक के बच्चे अंग्रेजी में तो दूर हिन्दी में अपना स्वयं का नाम सही तरीके से नहीं लिख पाते हैं। आँकड़ों के अनुसार कक्षा 2 के 26 प्रतिशत बच्चे, कक्षा 3 के 21 प्रतिशत बच्चे कक्षा 4 के 15 प्रतिशत बच्चे कक्षा 5 के 12 प्रतिशत बच्चे अपनी कक्षा से एक कक्षा पूर्व के हिन्दी गद्यांश को न तो पढ़ सकते हैं और न ही लिख सकते हैं। इसी तरह की स्थिति गणित व अंग्रेजी विषय की भी है।

इसका कारण महज उपस्थिति के आधार पर अगली कक्षा में प्रौन्नत करना, आयु के आधार पर कक्षा में प्रवेश देना, शिक्षकों की कमी, गैर शैक्षणिक कार्य में से कुछ भी हो किन्तु यह यथार्थ है कि राजस्थान के राजकीय विद्यालयों के बालकों का मानसिक स्तर कक्षा के स्तर से काफी पिछड़ा हुआ है। यदि कक्षा पाँच में पढ़ने वाला विद्यार्थी वर्णमाला की पहचान नहीं कर पाए, पाठ को पढ़ नहीं सके, गणित की सामान्य क्रियाएँ यथा जोड़, बाकी, गुणा, भाग नहीं कर सके तो शिक्षा विभाग, शिक्षक, शिक्षणविद्या पर एक प्रश्न चिन्ह है।

इस चुनौती से निपटने के लिए हाल ही में राजस्थान के शिक्षा विभाग ने 'रीडिंग कैम्पेन अभियान' का आगाज किया है ताकि प्रदेश का प्रत्येक बच्चा अपनी कक्षा के अनुसार अपने शैक्षिक स्तर को प्राप्त करने में सफल हो सके। वस्तुतः यह अभियान बालकों में अपनी कक्षा के अनुरूप भाषा व गणित की सामान्य जानकारी विकसित करने का प्रयास है।

इस अभियान का प्रमुख उद्देश्य कक्षा 3 से 5 तक के बालकों को भाषा व गणित की मूल अवधारणाओं की बारीक जानकारी प्रदान करते हुए पढ़नें व समझने के साथ-साथ लिखने की क्षमताओं का विकास करना है। साथ ही ऐसे वातावरण का निर्माण करना है कि बालक अपनी कक्षाओं के स्तर के अनुसार अपनी क्षमताओं का कुशलतापूर्वक प्रदर्शन करने में कामयाब रहे।

उपरोक्त उद्देश्य को पूरा करने के लिए अभियान की मंशानुसार सर्वप्रथम इन कक्षाओं के बालकों का स्तर निर्धारण करना होगा। मानसिक स्तर के आधार पर बालकों को तीन समूहों में विभाजित करते हुए ग्रेडिंग करनी होगी। ग्रेडिंग निम्नानुसार की जाएगी।

ग्रेड ए- वह बालक जिनको संबंधित विषय का पूर्ण ज्ञान है अर्थात् उस विषय के बारे में पढ़ने, लिखने व समझने की पूर्ण दक्षता है।

ग्रेड बी- वह बालक जिनको संबंधित विषय का आधा अधूरा ज्ञान है।

ग्रेड सी- वह बालक जिनको संबंधित विषय का ज्ञान बिलकुल नहीं है या बेहद ही कम है।

उपरोक्तानुसार स्तर निर्धारण के पश्चात् ऐसे प्रभावी शिक्षण सूत्रों का प्रयोग किया जाए कि 'बी' ग्रेड का बालक 'ए' ग्रेड में अग्रसर हो तथा 'सी' ग्रेड का बालक 'बी' ग्रेड में अग्रसर होते हुए धीरे-धीरे ए ग्रेड प्राप्त कर सके। अगर पूर्ण मनोयोग, निष्ठा, ईमानदारी से प्रभावी शिक्षण सूत्रों के द्वारा प्रयास किया जाए तो बालक जो अपने स्तर को पूर्व में प्राप्त नहीं कर सके थे अब निर्धारित समय में अपनी कक्षा के स्तरानुसार अपने मानसिक स्तर को विकसित करने में कामयाब हो सकेंगे।

रीडिंग कैम्पेन की सफलता हेतु हमें शिक्षण के निम्नांकित सूत्रों का प्रयोग प्रभावी शिक्षण हेतु अवश्य करना चाहिए।

1. ऐसी वस्तुओं के द्वारा शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए जो बालकों के सम्पर्क में होती है तथा उनका बालकों की रुचि, भावना और विचारों के साथ गहरा सम्बन्ध हो। यथा सम्भव बालकों की शिक्षा परिभाषाओं व नियमों के आधार पर न होकर स्थूल वस्तुओं तथा तथ्यों से होनी चाहिए। हमारे पाठ का आरम्भ स्थूल वस्तुओं से होना चाहिए और अंत सूक्ष्म बातों से। निश्चय रूप से परिणाम सकारात्मक होंगे।
2. कक्षा कक्ष में शिक्षक रुचिकर सरल शांत व सरस वातावरण बनाकर सरल से कठिन की ओर आदि बढ़ता है तो शिक्षण प्रभावी होगा और अपेक्षाकृत अधिक अधिगम की सम्भावना रहेगी।
3. सामान्य से विशिष्ट की ओर सिद्वान्त का पालन करते हुए यदि शिक्षण करवाया जाता है तो शिक्षण ज्यादा प्रभावी होगा। शिक्षक को पहले आम बात बतानी चाहिए। जब साधारण बातों की जानकारी मोटे तौर पर जब छात्र को हो जाएगी तो उदाहरण के माध्यम से विशिष्ट पर विवेचन प्रारम्भ करना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि अंग्रेजी विषय में बच्चों को A B C D का ज्ञान हो जाता है तो फिर छोटे शब्दों का निर्माण करते हुए शब्दों के आधार पर सीधे सरल वाक्य बनाने का अभ्यास करवाना चाहिए। जैसे कोई अक्षर A G F N I H S T B C श्याम पट्ट पर लिख दे। फिर इनके आधार पर शब्द बनायें FAN, CAT, RAT, BAT, IS, THIS इत्यादि। उक्त शब्दों के आधार पर आसानी से निम्न वाक्य बन सकते है- This is a fan, This is a cat, That is a rat, It is a bat इत्यादि। इस तरह बच्चे स्वयं के अभ्यास से अनेक शब्दों व वाक्यों का निर्माण करते हुए अंग्रेजी भाषा पढ़ने व लिखने में सफल रहेंगे।
4. शिक्षक का परम कर्त्तव्य है कि वह अपने

छात्रों को प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर सिद्धान्त का पालन करते हुए शिक्षण करवाये क्योंकि जो वस्तुएँ बालक के सामने होती है उनका ज्ञान वह सरलता तथा शीघ्रता से प्राप्त कर लेता है। अतः अप्रत्यक्ष ज्ञान देने के लिए प्रत्यक्ष वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।

5. शिक्षक के लिए आवश्यक एवं अपेक्षित है कि वह विषय को बालकों की रुचियों, अभिरुचियों, प्रवृतियों, क्षमताओं, दक्षताओं एवं कार्यकुशलता तथा बुद्धिलब्धि को दृष्टिगत करते हुए शिक्षण कार्य करें ताकि अधिगम प्रभावी हो सके।
6. सर्वप्रथम शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को समग्र ज्ञान की जानकारी प्रदान करें फिर आंशिक ज्ञान की जानकारी प्रदान करें इससे बालकों का अधिगम स्तर बढ़ेगा। जैसे हिन्दी की किसी कविता को समग्रतः पढ़कर प्रभाव ग्रहण किया जा सकता है फिर उसके अंश को विवेचित-विश्लेषित किया जा सकता है। इसके ठीक विपरीत गणित विषय के लिए विश्लेषण से संश्लेषण की ओर सिद्धान्त का पालन करते हुए शिक्षण करवाना चाहिए क्योंकि गणित में स्टेप-बाई-स्टेप क्रमशः आगे बढ़ना होता है। जब तक स्थिति ठीक तरह विश्लेषित नहीं हो जाती तब तक संरलेषण, जोड़ने, मिलाने, संयुक्त करने की प्रक्रिया अमल में नहीं लाई जा सकती है। साथ ही गणित में ज्ञात से अज्ञात की ओर सिद्धान्त का प्रयोग करते हुए भी शिक्षण को ज्यादा रोचक व प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

-पो. गिलूण्ड, जिला-राजसमन्द

महिला शिक्षा के प्रति सोच

❒ मदन लाल मीणा

महिला शिक्षा आधुनिक समय की एक महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य जरूरत है। एक सभ्य और सुसंस्कृत समाज के लिए नारी शिक्षा महत्वपूर्ण आधार होती है। महिला शिक्षा के बारे में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था कि 'एक बालक को शिक्षित करने से एक व्यक्ति शिक्षित होता है जबकि एक बालिका को शिक्षित करने से पूरा परिवार शिक्षित होता है।' हमारा समाज पुरुष प्रधान है और पुरुष महिलाओं के सशक्तिकरण की बात करते हैं वे यह कैसे भूल जाते हैं कि जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को जन्म दे सकता है, उससे शक्तिशाली और कौन हो सकता है? हमारे समाज में औरतों को देवी समझा जाता है, परन्तु यही समाज इन महिलाओं के बारे में कितना गलत सोचता है, उन पर अत्याचार करता है, उनका शोषण करता है, उनको कमजोर समझता है।

केन्द्र एवं राज्य सरकार दोनों ही बालिका शिक्षा के प्रति समर्पित हैं। वे भलीभांति जानते है कि यदि महिला को शिक्षित नहीं किया गया तो एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता। इसी लक्ष्य को लेकर आज राज्य सरकार बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बालिकाओं का शिक्षण-शुल्क माफ कर रही है साथ में उनहें पाठ्य-पुस्तकें भी निःशुल्क प्रदान कर रही है। उन्हें विभिन्न प्रकार की छात्रवृतियाँ दी जा रही है। कक्षा-9 में प्रवेश लेने वाली बालिकाओं को 2500 रुपये का साईकिल खरीदने के लिए चेक दिया जा रहा है। 12वीं के बाद एस.बी.सी. एवं अल्प संख्यक छात्राओं को 55 एवं 50 प्रतिशत वाली को स्कूटी दी जा रही है जिससे बालिका शिक्षा को बढ़ावा मिल सके। आज हमारे समाज में सबसे बडी समस्या स्त्री-पुरुष की समानता को लेकर है। जहाँ पर पुरुष द्वारा स्त्री का अपमान किया जाता है उसे नीचा समझा जाता है। इन समस्याओं का मूल कारण हमारे परिवारों में है क्योंकि हमारे परिवारों में ही सबसे पहले महिलाओं का अपमान होता है।

घर में यदि बेटे का जन्म होता है तो खुशियाँ मनाई जाती है और यदि बेटी का जन्म होता है तब मातम मनाया जाता है, ये लोग कैसे भूल जाते है कि इस बेटी को जन्म देने वाली भी तो एक बेटी है जो साक्षात लक्ष्मी स्वरूपा है। मनु ने कहा था-'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं।

महिलाओं का शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ा होना राज्य और समाज के लिए घातक है। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए नये-नये प्रयास करें। महिला शिक्षित होने से अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। एक महिला शिक्षित होने पर अपने परिवार और समाज को सुशिक्षित कर सकती है। एक नारा है-'पढ़ी लिखी लड़की, रोशनी है घरकी।' 'शिक्षा है जहाँ खशियाँ है वहाँ।'

महिलाओं के अधिकाधिक शिक्षित होने से न केवल जनसंख्या के विस्तार को कम किया जा सकता है बल्कि गरीबी की समस्या, स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्या, बालविवाह एवं दहेज जैसी दानवी कुरीतियों को तथा अन्धविश्वासों से मुक्ति, कुप्रथाओं के निराकरण जैसी धातक बुराइयों को महिला शिक्षा के द्वारा दूर किया जा सकता है। महिला शिक्षा को बढ़ावा देना राज्य सरकार का एक सराहनीय प्रयास है। एक नारा है-'हम सब की है ये जिम्मेदारी, पढ़ी लिखी हो घर में नारी।' अतः इन बातों को समझते हुए हम सब लोगों को मिलकर एक संकल्प लेना होगा कि आज के बाद हम सभी बालिकाओं को शिक्षित करेंगे और बालक-बालिका में कोई भेदभाव नहीं करेंगे। नारी के बारे में कहा गया है कि हजारों अपराध करो, वह हर बार क्षमा कर देती है। एक शिक्षित नारी ही एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण कर सकती है।

-अध्यापक रा.उ.प्रा.वि., मेघवालों की ढाणी,
राजबेरा, तह. शिव (बाड़मेर)
मो. 9928173922

**वोट डालना बहुत जरूरी है,
चाहे कोई हो मजबूरी।**

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

सांस्कृतिक वैभव एवं समृद्ध लोक संस्कृति का पर्याय : पाली जिला

❒ भरत शर्मा 'भारत'

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–

पाली क्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल, रामायण एवं महाभारत काल के अवशेष मौजूद हैं। प्राचीन गणराज्यों में यह क्षेत्र अर्बुद प्रदेश का भाग था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारत भ्रमण के दौरान इस क्षेत्र को गुर्जर प्रदेश के रूप में जाना था। देसूरी क्षेत्र का नाडोल कभी चौहान वंशीय सम्राटों की राजधानी रहा। पाली क्षेत्र के बीजापुर के पास हस्तीकुण्डी राष्ट्रकूट राठौड़ों की राजधानी रहा है। देशी रियासतों पर अंग्रेजी हुकूमत का विरोध करने वाले आउवा के ठाकुर खुशाल सिंह का विद्रोह इतिहास में अमर गाथा के रूप में अंकित है।

भौगोलिक स्थिति–

पाली जिले का क्षेत्रफल 12,387 वर्ग किलोमीटर है। यह जिला 24.45° से 26.75° उत्तरी अक्षांश और 72.48° से 74.20° से पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। यह जिला राष्ट्रीय राजमार्ग 14 पर स्थित है। अरावली पर्वतमाला की लम्बी शृंखला अजमेर, राजसमन्द, उदयपुर एवं सिरोही जिलों की सीमा रेखायें पाली जिले को जोड़ती है। पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख नदी लूनी एवं सहायक नदियों जवाई, मीठड़ी, सुकड़ी, वाण्डी एवं गुहिया बाला पाली जिले से होकर बहती हे। पश्चिमी राजस्थान के सर्वाधिक छोटे-बड़े एक सौ बांध पाली जिले में बने हुए हैं तथा जिले का जवाई बांध व सरदार समन्ध प्रमुख है।

लोक संस्कृति–

पाली जिला कला एवं लोक संस्कृति की दृष्टि से समृद्ध है। पादरला गांव का 'तेरहताल'लोक नृत्य देश विदेश में विख्यात हैं। मुण्डारा की कच्छी घोड़ी नृत्य, बूसी का रण नृत्य, मादा की डांडी, भील युवतियों का घूमर, गरासियों का गणगौर नृत्य अपनी अलग पहचान रखता है।

पर्यटन स्थल–

जिले में जहां-तहां नजर घुमायें, मंदिर व मंदिरों के समूह दिख पड़ते हैं। जिले के प्रमुख पर्यटन स्थलों में रणकपुर देशी-विदेशी पर्यटकों का सदैव आकर्षण का केन्द्र रहा है। जिले के प्रमुख पर्यटक स्थल निम्न है–

रणकपुर मंदिर–पाली जिले के सादड़ी कस्बे से दस किलो मीटर दूर जोधपुर-उदयपुर सड़क मार्ग पर मघाई नदी के किनारे रणकपुर मंदिर आया हुआ है। मंदिर का निर्माण राणा कुम्भा के शासन काल में हुआ था। रणकपुर में भगवान आदिनाथ का भव्य रमणीक मंदिर बना हुआ है। यह मंदिर विशाल चबूतरे पर 48 हजार वर्ग फीट क्षेत्रफल को घेरे हैं। मंदिर में चार कोण कुलिकाएं तथा मूल देव कुलिका को मिलाकर पांच शिखर हैं जिनमें 148 भूगृह हैं। उत्कृष्ट कला व विविधता लिए 24 मण्डपों से सुसज्जित 1444 स्तम्भों पर स्थित चार सिंहद्वारों तथा 34 देव कुलिकाओं के द्वार हैं। मंदिर के रंग मण्डप की छत पर वीणा बांसुरी बजाते, घुंघरू बजाती नृत्य करती आठ पुतलियों व सोलह नर्तकियों की प्रतिमाएं उत्कृष्ट हैं। मंदिर का निर्माण वि.सं. 1456 से 1496 तक पूरा हुआ। श्रेष्ठी धरणाशाह ने मंदिर निर्माण करवाया था। रणकपुर परिसर में आदिनाथ मंदिर के अलावा पार्श्वनाथ व नेमीनाथ के मंदिर भी बने हुए हैं। पार्श्वनाथ मंदिर की शिल्पकला खजुराहो व कोणार्क के मंदिर से मिलती जुलती है।

परशुराम महादेव गुफा मंदिर–अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में समुद्र तल से 3995 फुट की ऊंचाई पर परशुराम महादेव का गुफा मंदिर है। सादड़ी कस्बे से 14 किलोमीटर पूर्व पहाड़ियों में यह स्थान आया हुआ है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार इस स्थल पर ऋषि परशुराम ने तपस्या की थी। गुफा में शिवलिंग प्राकृतिक हैं। यहां प्रतिवर्ष शिवरात्रि व श्रावण शुक्ला सप्तमी का मेला भरता है। पूरे सावन माह लाखों शिव भक्त दर्शनार्थ आते हैं। निम्बों का नाथ (निम्बेश्वर महादेव)-फालना रेल्वे स्टेशन के पास सांडेराव सड़क मार्ग पर पहाड़ी की तलहटी में निम्बों का नाथ का भव्य व रमणीक मंदिर आया हुआ ! कहा जाता है कि इस तीर्थ की स्थापना पांच हजार वर्ष से भी अधिक समय पूर्व द्वापर युग के अंत में पाण्डवों द्वारा की गई थी। पाण्डवों ने शिव व शक्ति की उपासना के साथ यज्ञ भी किया था तथा नवदुर्गा मंदिर व बावड़ी का भी निर्माण करवाया था । मंदिर में शिव लिंगाकार के साथ शिव पार्वती की प्राचीनतम प्रतिमायें स्थापित हैं।

सालेश्वर महादेव–पाली जिला मुख्यालय से करीब तीन किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में स्थित नीलागर की पहाड़ियों की गोद में प्राचीनतम शिव मंदिर 'सालेश्वर महादेव' आया हुआ है। किंवदन्तियाँ व लोक मान्यताओं के अनुसार तपोभूमि पर परशुराम के पिता जमदग्नि ऋषि ने तपस्या की थी। इस स्थान पर ऋषि जमदग्नि व राजा सहस्त्राबाहु के बीच 'कामधेनु' को लेकर युद्ध हुआ था। सालेश्वर महादेव मंदिर में शिवलिंग प्राकृतिक हैं। शिवलिंग का छिद्र नहीं भरता है लेकिन दूध का अभिषेक करते ही शिवलिंग भर जाता है। यहां स्थित 'भीम गौडा' वनवासी पांडवों की याद दिलाता है। यहां वैश्या सरोवर, जीवित समाधियाँ व पहाड़ी पर प्राचीनतम सांवलिया महादेव भी पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं।

सोमनाथ मंदिर– पाली शहर के मध्य में स्थित सोमनाथ मन्दिर अपनी शिल्पकला व ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के लिए विख्यात रहा है। बारहवीं शताब्दी में सौराष्ट्र के सोमनाथ पर मोहम्मद गजनी के आक्रमण से पूर्व प्राचीनतम शिवलिंग को सुरक्षित पहुंचाकर गुजरात के राजा कुमार पाल सौलंकी ने प्रतिष्ठा करवाई। यह मंदिर नगर वासियों के लिए प्रमुख आस्था का केन्द्र है।

मकरमण्डी– जैतारण तहसील के निमाज गांव से चार किलोमीटर दूर निर्जन स्थान पर मकरमण्डी नामक स्थान पर चामुण्डा माता का मंदिर पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। चामुण्डा माता के इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि आज खण्डहर के रूप में दिखाई देने वाला

मंदिर कभी अपनी भव्यता के लिए प्रसिद्ध था। यहां लाल पत्थर पर बारीक कारीगरी व दीवारों पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ तत्कालीन स्थापत्यकला की उत्कृष्टता की प्रतीक है। कहा जाता है कि यह मंदिर राजा भोज व कालिदास के समय बनाया हुआ है।

जूना खेड़ा (नाडोल)– देसूरी तहसील के नाडोल कस्बे के निकट पुरातात्विक महत्व का स्थल जूना खेड़ा है जो चौहान वंश के क्षत्रियों की प्राचीन राजधानी रहा है। यहां पुरातत्व विभाग द्वारा करवाई खुदाई में प्राचीन सिक्के, बावड़ियां, मूर्तियां व अनेक दुर्लभ वस्तुयें मिली हैं। इसका इतिहास आठवीं शताब्दी का रहा है। यहीं सम्राट पृथ्वीराज चौहान के पिता सोमेसर सोलंकियों से युद्ध करते हुए शहीद हुए थे।

मीरा की जन्म स्थली–भक्त शिरोमणि मीरा का जन्म पाली जिले के जैतारण तहसील के कुड़की गांव में हुआ था। मीरा का जन्म वि.सं. 1560 के लगभग राव दूदाजी से चतुर्थ पुत्र रतनसिंह के यहाँ कुड़की गांव में हुआ था। कुड़की गढ़ में जिस कोठड़ी में मीरा का जन्म हुआ वह आज भी मौजूद है।

भिक्षु समाधि स्थल (सिरियारी)– मारवाड़ मेवाड़ के संगम स्थल कांठा क्षेत्र में स्थित आचार्य भिक्षु की निर्वाण स्थली सिरियारी तेरापंथी का प्रमुख ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल है। वि. संवत 1960 को आचार्य भिक्षु का पार्थिव शरीर पंच महाभूत में विलीन हो गया। राष्ट्रीय संत आचार्य तुलसी ने सिरियारी में बह रही सरिता को तपस्विनी तथा तलहटी की पर्वतमाला को धर्मगिरी की संज्ञा से अलंकृत किया था।

आशापुरा माताजी का मंदिर– देसूरी तहसील के नाडोल गांव में आशापुरा माताजी का भव्य व रमणीक मंदिर बना हुआ है। जिसकी स्थापना राव लाखन चौहान द्वारा संवत 1009 में की गई।

अजमेर-जोधपुर मार्ग के मध्य बर कस्बे के निकट बिराटियाँ गांव में बाबा रामदेव का विशाल मंदिर आया हुआ है। मान्यता है कि बाबा रामदेव ने इसी स्थान पर डाकुओं द्वारा दल्ला सेठ की हत्या के बाद पुनःजीवित किया था। यहाँ भाद्रपद एकादशी को विशाल मेला भरता है।

इसके अलावा मुछाला महावीर, राता महावीर, सूर्यमंदिर वरकाणा का पार्श्वनाथ मंदिर, फालना का स्वर्ण मंदिर, सोनाणा श्वेतसाणी, पाली का अबायबघर, नवलखा जैन मंदिर, चोटिला पीर दूलेशाह, मानपुरा माकरी, चवाई बान्ध व सरदार समन्द भी दर्शनीय व पर्यटक स्थल है।

–अध्यापक, श्री खेताजी भनाजी
रा.मा.विद्यालय, दादाई (पाली)

कहीं आप ऐसे अभिभावक तो नहीं है

वह प्राइमरी स्कूल की टीचर थी। सुबह उसने बच्चों का टेस्ट लिया था और उनकी कॉपियां जांचने के लिए घर ले आई थी। बच्चों की कॉपियां देखते-देखते उसके आंसू बहने लगे। उसका पति वहीं लेटा टीवी देख रहा था। उसने रोने का कारण पूछा। टीचर बोली-सुबह मैंने बच्चों को 'मेरी सबसे बड़ी इच्छा' विषय पर कुछ पंक्तियां लिखने को कहा था। एक बच्चे ने इच्छा जाहिर की है कि भगवान उसे टेलीविजन बना दें। यह सुनकर पतिदेव हंसने लगे। टीचर बोली-आगे तो सुनो। बच्चे ने लिखा है-यदि मैं टीवी बन जाऊंगा, तो घर में मेरी एक खास जगह होगी और सारा परिवार मेरे इर्द-गिर्द रहेगा। जब मैं बोलूंगा तो सारे लोग मुझे ध्यान से सुनेंगे। मुझे रोका-टोका नहीं जाएगा और न ही उल्टे सवाल होंगे।। जब मैं टीवी बनूंगा तो पापा ऑफिस से आने के बाद थके होने के बावजूद मेरे साथ बैठेंगे। मम्मी को जब तनाव होगा तो वे मुझे डांटेंगी नहीं, बल्कि मेरे साथ रहना चाहेंगी। मेरे बड़े भाई-बहनों के बीच मेरे पास रहने के लिए झगड़ा होगा। यहां तक कि जब टीवी बंद रहेगा तब भी उसकी अच्छी तरह देखभाल होगी। और हां, टीवी के रूप में मैं सबको खुशी भी दे सकूंगा।' यह सब सुनने के बाद पति के मुंह से यही निकला-हे भगवान! बेचारा बच्चा... उसके मां.बाप तो उस पर जरा भी ध्यान नहीं देते।' टीचर पत्नी ने आंसू भरी आंखों से उसकी तरफ देखा और बोली- जानते हो, यह बच्चा कौन है। हमारा अपना बच्चा... हमारा छोटू। सोचिए, यह छोटू कहीं आपका बच्चा तो नहीं।

साभार : मधुरिमा, 16 अक्टूबर 2013

शाला प्रांगण से

कुनक्यो यूनिवर्सिटी, जापान के प्रो. काओरू हेयाशी व उनके छात्रों ने किया राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक-बधिर स्वावलम्बन विशिष्ट

राजकीय सेठ आनन्दी लाल पोद्दार मूक बधिर संस्थान, जयपुर में सात सितम्बर को कुनक्यो यूनिवर्सिटी, जापान के प्रो. काओरू हेयाशी अपने आठ विद्यार्थियों सहित पधारे। उन्होंने यहां की विशेष शिक्षा के बारे में जाना। संस्थान के चित्रकला विभाग के विभागाध्यक्ष योगेन्द्र सिंह नरूका द्वारा उन्हें संस्थान में स्थित अन्तर्राष्ट्रीय गुड़िया घर व संस्थान परिसर की विजिट करवाई तथा संस्थान द्वारा की जा रही गुणवत्ता युक्त विशेष शिक्षा के बारे में अवगत करवाया। इस अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन भी किया प्रो. काओरू हेयाशी ने कहा कि भले ही ये बच्चे ओरल कम्यूनिकेशन ना कर पाते हों, लेकिन अपने जैस्चर के जरिए एक दूसरे से कम्यूनिकेट कर अच्छी पेंटिंग्स बनाते हैं, जो काबिल-ए-तारीफ है। कार्यक्रम का आयोजन जापान की संस्था ओइस्का इंटरनेशनल के सहयोग से पहल एनजीओ ने किया।

कार्यक्रम का संचालन पहल ग्रामीण विकास संस्था की अध्यक्ष श्वेता चादौन और उपाध्यक्ष डॉ. दीपाली जैन ने किया मूक बधिर संस्थान की प्राचार्या शीला देवी, ओइस्का इंटरनेशनल से रेणु प्रसाद, प्रकाश सक्सेना, पहल संस्था के मनीष शर्मा, मूक बधिर संस्थान जयपुर के प्रबुद्ध कुमार शर्मा (व्याख्याता-राज. विज्ञान), ओम प्रकाश कुडी (व्याख्याता-लोक प्रशासन), कविता चौधरी (व्याख्याता-इतिहास) आदि उपस्थित थे।

स्टेट चीफ कमिश्नर को ड्राफ्ट भेंट

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड स्थानीय संघ के स्काउटों द्वारा एकत्रित ग्यारह

हजार (11000) की राशि 59वें मण्डल अधिवेशन, डागा पैलेस, बीकानेर में सत्रह सितम्बर में स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य को इस राशि का बिमाण्ड ड्राफ्ट सं. 834202 दिनांक ग्यारह सितम्बर को भेंट किया।

नैतिक शिक्षा कार्यक्रम

शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक व उत्तम संस्कारों के बीजारोपण के उद्देश्य से नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ दिनांक 02.01.13 गांधी जयंती पर राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय रेजीडेन्सी, उदयपुर में बि.शि. अ.मा. प्रथम श्रीमती कृष्णा चौहान ने समस्त अतिथियों का स्वागत किया।

सहायक निदेशक पार्वती कोटिया ने बताया कि निदेशक, माध्यमिक शिक्षा संस्थान के दिशा-निर्देश अनुसार सप्ताह में एक दिन सभी विद्यालयों में प्रार्थना सभा में 'नया शिक्षक' नैतिक शिक्षा विशेषांक 2013 के अनुसार कार्यक्रम आयोजित करें। इस अवसर पर जनप्रतिनिधि, शामाशाह एवं अभिभावकों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। अंत में अध्यक्षीय उद्बोधन में शिक्षा उपनिदेशक श्री भरत मेहता ने कहा कि इस कार्यक्रम की रूपरेखा रजिस्टर में संधारित करें। जिला निरीक्षण अधिकारियों द्वारा किए जाने वाले निरीक्षण में इसका निरीक्षण किया जाएगा। धन्यवाद प्रधानाचार्य श्रीमती मधु शर्मा ने दिया।

मतदाता जागरूकता रैली निकाली गई

जिलाधीश भीलवाड़ा के आदेशानुसार मतदाता जागरूकता रैली का आयोजन सत्रह सितम्बर को किया गया। श्री घनश्याम कोली प्राध्यापक के नेतृत्व में संस्थान प्रधान श्री निर्मल वर्मा ने हरी झंडी दिखा रैली को रवाना किया।

मतदान हमारा अधिकार, मतदान जरूर करेंगे, हम सरकार जरूर चुनेंगे। आदि नारे लगाते हुए रैली कलेक्ट्रेट कलां ग्राम के मुख्य मार्गों चौराहों से होकर पुनः विद्यालय परिसर में समाप्त हुई जहां श्री निर्मल वर्मा प्रधानाचार्य ने 18 वर्ष आयु प्राप्त कर चुके छात्रों से मतदाता सूची में नाम जुड़वाने के लिए कहा तथा मतदान के महत्व को स्पष्ट किया।

श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)। नोसरिया व मिगसरिया गांव में स्कूली बच्चों ने मतदाता जागरूकता रैली निकाली। रैली में नारे लगाकर मतदाताओं को मतदान करने के लिए जागरूक किया गया। राजकीय माध्यमिक विद्यालय नोसरिया के संस्था प्रधान श्री जयसिंह चाहर, सत्यप्रकाश बाना, मूलाराम शर्मा आदि ने मतदान के प्रति जागरूकता तथा मत के महत्व के बारे में उपयोगी जानकारी प्रदान की।

शिक्षकों के प्रतियोगिताएं आयोजित

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा आयोजित शिक्षकों के व्यावसायिक चिंतन एवं सृजनात्मकता को प्रोन्नत करने के उद्देश्य से वर्ष 2013-14 में आयोजित प्रतियोगिताओं में तीनों ही प्रतियोगिताओं में रा.उ.मा.वि. नीलवा विजेता रहा। रा.उ.मा.वि. दुर्गापुरा में आयोजित की गई पत्र वाचन प्रतियोगिता में स्थानीय विद्यालय की प्राध्यापक श्रीमती कुसुम कौशिक विजेता रही। इसी क्रम में लेख प्रतियोगिता में श्रीमती कविता दीक्षित विजेता घोषित की गई। अध्यापन प्रतियोगिता में जयपुर जिले के विभिन्न

विद्यालयों के गुरुजनों ने भाग लिया जिसमें बीलवा विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विजेन्द्र कुमार सुरोलिया ने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त कर शिक्षण विधा में अंग्रेजी शिक्षण कराकर अपने शिक्षण कौशल का परचम लहराया।

डेफ दिवस पर चित्रकला व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

जयपुर डेफ क्लब के द्वारा 56वें अन्तर्राष्ट्रीय डेफ दिवस (14.9.13) पर चित्रकला व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का

आयोजन दादूदयाल संस्कृत कॉलेज, जयपुर में किया गया। इन प्रतियोगिताओं में राजकीय सेठ आनन्दीलाल पोद्दार मूक बधिर उ.मा.विद्यालय, जयपुर (राज.) के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया तथा पुरस्कार प्राप्त किये।

लेपटॉप वितरित

जिला परियोजना समन्वयक सर्व शिक्षा अभियान, बीकानेर के तत्वावधान में 33

सितम्बर को श्री वी.सरवन कुमार निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान द्वारा सत्र 2012-13 में 8वीं उत्तीर्ण सात पूर्ण दृष्टिबाधित बालक बालिकाओं को टॉकिंग सॉफ्टवेयर इन्स्टॉल कर लैपटॉप मय पावर केबल विद एडोप्टर व केरी बैग वितरित किए गए।

निदेशक महोदय ने इस अवसर पर सभी बालक बालिकाओं को मुख्य धारा से जुड़े रहने की अपील कर शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर जिला परियोजना समन्वयक श्री जोरावर सिंह सहित संबंधित संदर्भ शिक्षक, केयरगिवर व अभिभावक उपस्थित थे।

प्रतियोगिताएं आयोजित

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा सात अक्टूबर को जिला स्तरीय शिक्षकों की पत्र वाचन प्रतियोगिता, अध्यापन प्रतियोगिता, व निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन रा.उ.मा.वि. शिवाजी नगर, जालोर में किया गया।

कार्यक्रम संयोजक प्रधानाचार्य हनीफ खाँ थे, इस जिला स्तरीय पत्र वाचन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सरदारसिंह चारण व्याख्याता डाईट, जालौर ने, द्वितीय स्थान- दिनेश कुमार शर्मा वरिष्ठ अध्यापक भारत विद्या मन्दिर आहोर ने, तथा तीसरे स्थान पर पृथ्वीसिंह चारण प्रधानाध्यापक, रा.मा.वि. गोरखा की ढाणी भीनमाल ने प्राप्त किया।

शिक्षकों की अध्यापन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान-बचनाराम वरिष्ठ अध्यापक राउमावि शिवाजी नगर जालोर ने, द्वितीय स्थान- धीनू खां वरिष्ठ अध्यापक रामावि दाता सांचोर ने तथा तीसरा स्थान-मदनलाल वरिष्ठ अध्यापक सांकरना ने प्राप्त किया।

निबन्ध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान- सुरेशकुमार शर्मा वरिष्ठ अध्यापक रा.मा.वि. सामूचा, द्वितीय स्थान- रमेशकुमार वरिष्ठ अध्यापक रा.मा.वि. मुडतरा सिली, व तीसरा स्थान- श्रीमती श्वेता, वरिष्ठ अध्यापिका रा.मा.वि. गोदन ने प्राप्त किया। इन्हें राज.माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर द्वारा प्रथम को 1000 रुपये, द्वितीय को 800 रुपये, व तीसरे स्थान प्राप्त करने वाले को 500 रुपये का नकद पुरस्कार बोर्ड द्वारा दिया जायेगा व प्रथम स्थान पर रहने वाले तीनों प्रतियोगिता के प्रतियोगी राज्य स्तर पर जालोर जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे।

प्रियंका जाखड़ ट्रस्ट द्वारा होनहार छात्राओं को किया सम्मानित

कुमारी प्रियंका जाखड़ मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट अठवास (सीकर) द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु सीकर जिले में कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा 2013 में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली बालिका कुमारी श्रुति अग्रवाल पुत्री श्री अमरचन्द गोयल, वर्द्धमान विद्या विहार सैकण्डरी स्कूल, सीकर को 3100/- रू. नकद धनराशि ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध करवायी जाकर प्रशस्ति पत्र छात्रवृति स्वरूप प्रदान किए गए। इसी क्रम में फतेहपुर तहसील में भी सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली बालिका कुमारी देवयानी टेलर पुत्री श्री मोहनलाल टेलर, धानुका आदर्श विद्या मंदिर, फतेहपुर को 2100/- रु. नकद धनराशि ट्रस्ट द्वारा उपलब्ध करवायी जाकर प्रशस्ति पत्र छात्रवृति स्वरूप प्रदान की गई। कुमारी पूनम चांगिड़ पुत्री श्री केसरदेव चांगिड़, रा.उ.मा.वि. अठवास (सीकर) में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाली बालिका को 1100/- रु. नकद, प्रमाण पत्र छात्रवृति स्वरूप स्वतंत्रता दिवस पर प्रदान कर सम्मानित किया।

ट्रस्ट के द्वारा यह कार्य बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु प्रोत्साहन स्वरूप विगत तीन वर्षों से किया जा रहा है। इसी प्रकार फतेहपुर तहसील स्तरीय समारोह में तथा रा.उ.मा.वि. अठवास में भी स्वाधीनता दिवस समारोह में यह छात्रवृति स्वरूप नकद धनराशि एवं प्रशस्ति पत्र दिये जा रहे हैं।

लोकतंत्र की क्या पहचान,
हम निष्पक्ष करें मतदान।

ओजोन दिवस पर कार्यक्रम

बांसवाड़ा। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में 'ओजोन परत संरक्षण दिवस' के अवसर पर वन विभाग के सहयोग से जिला स्तरीय समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में विद्यार्थियों ने चित्रकला एवं निबन्ध प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। संस्था प्रधान शम्मे फरोजा बतुल अंजुम ने 'ओजोन परत संरक्षण' पर विचार व्यक्त किये।

बड़लिया : राजकीय प्राथमिक विद्यालय, बड़लिया में स्काउट गाइड द्वारा विश्व ओजोन दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में संस्था प्रधान हरेन्द्र सिंह सिसोदिया व भंवरलाल गर्ग के निर्देशन में रैली निकाल कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया।

विश्व डायबिटीज दिवस

किशोरावस्था में बढ़ता डायबिटीज : एक चुनौती

❒ सुभाष चन्द कस्वां

भागम-भाग भरी ज़िन्दगी में आज बीमारियों के कारण व लक्षण भी बदल गए हैं। बहुत से अनुसंधान व सर्वेक्षण से यह बात सामने आई है कि अधिकांश बीमारियों के कारण जैविक न होकर सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में पनपते है। डायबिटीज भी ऐसा ही एक रोग है जो पूर्णरूप से हमारी जीवनशैली से जुड़ा हुआ है। विश्व में डायबिटीज का पता पन्द्रहवीं शताब्दी में ही लग गया था, पर भारत में इसकी जानकारी छह सौ ईसा पूर्व ही पहुंच गई थी। भारत के महान व प्रथम शल्य चिकित्सक सुश्रुत ने आज से करीब 2600 वर्ष पूर्व ही मानव शरीर में इस रोग का पता लगा लिया था जिन्होंने इसे मधुमेह का नाम दिया। भारत में प्राचीनकाल में जब ग्लूकोमीटर व पैथौलॉजी जैसी आधुनिक इस रोग की जांच सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी तब मूत्र विसर्जन के बाद उस पर उपस्थित चींटियों की संख्या देखकर इस रोग का अंदाजा लगाया जाता था जो कभी-कभी सही रोग के लक्षण के करीब नहीं पहुंच पाता था। अत: इस जांच को वैज्ञानिक उपकरणों ने पूर्ण वैद्य नहीं माना। हां, यह लक्षण बीमारी के आगमन की पूर्व दखल अवश्य हो सकती है।

पहले डायबिटीज एक विशेष उम्र पार करने के बाद ही व्यक्ति में झलकती थी लेकिन आज किशोर व किशोरी भी इसकी चपेट में आ रहे हैं जो माँ-बाप, शिक्षालय व समाज के लिए चिंता के रूप में सामने आ रहे हैं। बच्चों का एकाकी जीवन, असंतुलित खान-पान, बेहतर ग्रेड प्राप्त करने का दबाव व विद्यालय तथा उसके बाहर खेलों के प्रति घटती रुचि से यह रोग अपनी गिरफ्त में ले रहा है। विद्यालय व महाविद्यालय तक पहुंचने में विद्यार्थियों द्वारा प्रयुक्त निजी व पब्लिक वाहन भी इस रोग के लिए आंशिक कारण के रूप में उत्तरदायी हैं क्योंकि विद्यार्थी चार-पांच किमी. यदि दिन में पैदल चल लेता है तो पसीने के रूप में एकत्रित अनावश्यक ग्लूकोज शरीर से बाहर बह जाता है। हमारे देश में गुजरात राज्य के बच्चों में डायबिटीज के रोगी अधिक संख्या में फिलहाल पाए जा रहे हैं जिसका एक प्रमुख कारण वहां के परिवारों में खाना खाने के बाद थोड़ा-बहुत मीठा खाने की प्रवृति परम्परा के रूप में काफी अर्से से विद्यमान है।

मानव रक्त में ग्लूकोज की अधिकतम मात्रा निर्धारित होती है, जो कि ग्लूकोज का सामान्य स्तर कहलाता है। यह स्तर दो भागों में विभाजित किया गया है। खाली पेट ग्लूकोज की मात्रा 100 मिग्रा व भोजन के बाद 140 मिग्रा। इससे अधिक ग्लूकोज का स्तर बढ़ जाने से डायबिटीज रोग का आगमन व्यक्ति के शरीर में होने लगता है जिसे संतुलित करने का काम इंसुलिन करता है जो कि हमारे शरीर में अग्नाशय द्वारा निर्मित किया जाता है। डायबिटीज होने का प्रमुख कारण शरीर में इंसुलिन का न बनना है पर इंसुलिन का बनना काफी हद तक हमारी दिनचर्या व खाने-पीने के शौक व तौर-तरीके निर्धारित करते हैं। डायबिटीज से अग्नाश्य तो प्रभावित होता ही है इससे आंखों की ज्योति भी धीरे-धीरे क्षीण होने लगती है। यही खास वजह है कि हमारे 13 से 19 वर्ष के बच्चे निकट दृष्टि का ऐनक लगाने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इस रोग की वजह से शरीर बेजान सा लगने लगता है। धीरे-धीरे हर क्षेत्र में व्यक्ति को कार्य क्षमता घटती सी प्रतीत होने लगती है।

डायबिटीज के रोगी की भूख बढ़ जाती है। पेट में पड़े अपच खाने की बदबू रोगी की सांसों के माध्यम से आने लगती है। रोगी को प्यास भी खूब लगने लगती है तथा पानी पीने के बाद भी उसे गला सूखा हुआ सा ही लगता है। पेशाब के लिए भी बार-बार जाना पड़ता है। शरीर व मन से कोई कार्य करने के उत्साह में कमी आ जाती है। इस प्रकार के शारीरिक लक्षण डायबिटीज को दर्शाने वाले होते हैं।

हमारी संस्कृति का शाश्वत सत्य प्राचीन काल से ही 'हैल्थ इज वैल्थ' (स्वास्थ्य ही धन है) रहा है। इसे अनदेखा कर हम बीमारियों को निमंत्रण दे रहे हैं। डायबिटीज आज एक गंभीर रोग के रूप में सामने आ रहा है। विश्व में आज सबसे अधिक रोगी डायबिटीज के हैं और भारत इसमें सबसे अग्रणी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार 2013 के अंत तक पूरे विश्व में करीब 28.8 करोड़ वयस्क इस रोग से पीड़ित होंगे, जो कि वयस्कों की वर्तमान जनसंख्या का 6.7 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त सन् 2030 तक यह संख्या बढ़कर 43.5 करोड़ हो जाएगी। हमारे देश में अब तक 5 करोड़ से भी अधिक डायबिटीज के रोगी मिल चुके हैं। रोग की भयावहता व व्यापकता को देखते हुए **विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 14 नवम्बर को अन्तर्राष्ट्रीय डायबिटीज दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया।** हमारे लिए खुशी की बात यह है कि 14 नवम्बर 'बाल दिवस' के रूप में आता है क्यों नहीं इस दिवस पर बालकों को भी इस रोग के कारण व बचाव से हम रू-ब-रू करवाएं।

अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध कहावत है- Prevention is Better Than Cure अर्थात् सावधानी इलाज से बेहतर है, को हम अपनाने लग जाएं तो इस प्रकार की बीमारियों का सामना करने से बच सकते हैं। डायबिटीज से बचने के लिए पहले शारीरिक श्रम को महत्व देना है। यदि विद्यालय व कार्यालय तीन या दो किमी. की दूरी पर है तो पैदल चलकर पहुंचा जाए। इससे निजी वाहन का पैट्रोल-डीजल बचेगा तथा वायु प्रदूषण में भी कमी होगी तथा साथ ही साथ शारीरिक श्रम भी हो जाएगा। तेलयुक्त व शर्करा की मात्रा वाले खाद्य पदार्थ व पेय पदार्थों से बचा जाए (जिसमें शराब भी शामिल है क्योंकि इसमें शर्करा की मात्रा होती है) इससे डायबिटीज के अलावा अन्य रोगों के नियंत्रण की शक्ति भी शरीर को मिलेगी। खाद्य पदार्थों में मोटे व अंकुरित अनाज का अधिक से अधिक प्रयोग इस रोग के लिए लाभदायक है। इन सबसे परे दबाव भरी जिन्दगी से तौबा करें। यदि ऐसा हम कर पाते हैं तो डायबिटीज क्या बहुत सी अन्य बीमारियों के खतरों से बच स्वस्थ जीवन जी सकते हैं।

-वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
रा.मा.वि., हेतमसर, वाया-नूँआ (झुंझुनूं) 333001
मो. 9460841575

क्रीड़ाङ्गन

शिक्षा में खेलों का महत्व

❒ भैंरुलाल नामा

आवश्यकता एवं महत्व : आज के आगे बढ़ते हुए सभ्य संसार में कौन ऐसा प्राणी है, जो स्वयं आगे बढ़ना नहीं चाहता? हमारे मन में तो प्रत्येक पुरुष व स्त्री अपनी उन्नति के लिए केवल आज ही से नहीं अपितु सृष्टि के आरम्भ से ही बड़ी कोशिश करता रहा है। खींचातानी मानव प्रकृति का एक खेल है और खींचातानी के खेल में ही मनुष्य को संसार के बड़े-बड़े अनुभवों को शिक्षा कहे चाहे ज्ञान परन्तु यह निश्चित है कि बिना मेहनत, परिश्रम और बिना उछलकूद किए कोई भी मनुष्य इस संसार में कुछ सीख नहीं सकता। शिक्षा में खेलों का कितना महत्व रहा है, यह विचारणीय विषय है।

जहां विद्वान पुरुषों की बुद्धि में बड़े-बड़े जटिल और दार्शनिक विचार घुमा करते है वहां बालक के छोटे से मन में खेलकूद और विद्यालय का पाठ घुमा करता है। संसार का शायद ही कोई ऐसा स्कूल अथवा कॉलेज होगा जहां पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का प्रबंध न हो फिर तो यह बात निर्विवाद रूप से सिद्ध है कि शिक्षा में खेलों का होना आवश्यक है और खेल अपना पूरा महत्व रखते है।

खेलने से लाभ : खेलने से प्राप्त लाभों को निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

1. शारीरिक पुष्टि : खेल का जीवन के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है और जो मनुष्य खेल के प्रति प्रेम और शौक रखते हैं जरा उनकी तस्वीर देखिये चमकदार चेहरा, उभरी हुई छाती, शरीर के प्रत्येक अंग में स्फूर्ति और अजीब साहस का नजारा और झलक उनके चलने फिरने में दिखाई पड़ती है।

2. स्वावलम्बन की भावना : हर खिलाड़ी स्वावलम्बन की भावना से निपुण होता है। हर क्षेत्र में उसे सफलता मिलती है खुद पर निर्भर रहने की क्षमत बढ़ती है। इसी भावना के कारण खिलाड़ियों के मन में कुछ नया करने की भावना होती है।

3. सहयोग व मित्रता की भावना : खिलाड़ी बड़े हृष्ट-पुष्ट व ताकतवर होते हैं फिर भी वे अपने शरीर पर घमण्ड नहीं रखते हैं, वे सहयोग व मित्रता के सामान्य व्यवहार का पालन करते हैं। खेल के मैदान में खेलते समय एक टीम की हार तथा एक टीम की जीत निश्चित होती है, फिर भी उसमें सहयोग व मित्रता की भावना बनी रहती है। इसी भावना से खिलाड़ियों का निर्माण होता है।

4. अनुशासन की भावना : हर खिलाड़ी को खेल के नियमों के अनुसार खेलना पड़ता है खेल का प्रथम मंत्र अनुशासन ही है। जो खेल खेलता है वह अनुशासन का पालन अवश्य करता है। जीवन में किसी व्यक्ति को सफलता हासिल करनी है तो वह केवल अनुशासन से मिल सकती है। अनुशासित जीवन राष्ट्र निर्माण का प्रतीक माना जाता है।

5. कर्तव्यपरायणता : खिलाड़ी खेल के साथ-साथ अपने कर्तव्य के प्रति जागरुक रहते हैं तथा कर्तव्यपरायणता का अच्छा विकास करते है। हर विद्यार्थी खेल की भावना से अपने कर्तव्य का अच्छा विकास कर सकते हैं। इसी से वह अपने भविष्य की समस्याओं का समाधान कर सकता है तथा अपने व्यक्तित्व का निर्माण कर सकता है। जीवन में कर्तव्य का पालन करना मुश्किल है जो अधिकतर खिलाड़ियों में देखा जाता है।

यह सही है कि शिक्षा के साथ-साथ संसार के सभ्य प्राणी यदि खेलों के महत्व को भलीभांति समझ लें और नियमित रूप से जैसे भोजन तथा जीवन की अन्य आवश्यकताएं अनिवार्य है उतना आवश्यक खेल और व्यायाम को मान लें तो निश्चय ही जैसे हवा के बिना जीवन का होना असम्भव है ठीक उसी तरह खेल और व्यायाम के बिना जीवन में सफलता, उन्नति प्राप्त नहीं होती दिखाई पड़ती है।

यदि अध्यापक महोदय विद्यार्थियों को समय-समय पर इस बात की प्रेरणा दें या ऐसे कार्यक्रम निश्चित करें जिनमें विद्यार्थियों को खेल खेलने से अन्य क्षेत्रों में सफलता मिले तो अवश्य ही सामाजिक जीवन स्तर सुदृढ़ बनेगा खेल और शिक्षा दोनों मानव जीवन की प्रकृति और जिज्ञासा के रूप है अस्तु खेल और शिक्षा का साथ-साथ होना मनुष्य की विकसित अवस्था का प्रमाण है और हर प्रकार से लाभप्रद है इसी कारण शिक्षा में खेलों का महत्व बढ़ता जाता है एवं इसीलिए कहते है कि पहला सुख निरोगी काया।

-रा.उ.प्रा.वि.,रबारियों का टांका, बालोतरा-344022
मो. 9461156033

दृढ़ निश्चय से सब सम्भव

❒ गायत्री शर्मा

एक माता-पिता ने एक प्रकाण्ड पंडित को अपने बालक का हाथ दिखाया। पंडितजी ने हाथ देखकर बड़ी निराशा से बताया कि बालक के भाग्य में विद्या नहीं है। यह सुनकर बालक ने पूछा, 'महाराज कहां होती है विद्या की रेखा। कृपया मुझे बताएं।' पंडित जी ने बालक के हाथ में संकेत से रेखा का स्थान बता दिया। उसी क्षण बालक एक तेज धार वाला चाकू लाया और उसकी नोंक से एक गहरी रेखा हथेली पर खींच दी। खून की धारा बह चली। पंडितजी बालक के साहस से चकित हो उठे। उन्होंने बालक के साहस की सराहना करते हुए कहा, 'चाकू से तो हाथ पर रेखाएं नहीं बनती, लेकिन दृढ़ निश्चय से यह संभव है कि तुम भाग्य को अपने अनुकूल करके विद्या को प्राप्त कर सको।'

बालक ने उसी क्षण दृढ़ निश्चय से संकल्प लिया और भाग्य में विद्या न होने की घोषणा को मिथ्या सिद्ध कर वह एक दिन व्याकरणाचार्य बन गया। आप जानते हैं वह बालक कौन था? उसका नाम था-पाणिनी, जिन्हें विश्व में संस्कृत के महान व्याकरणाचार्य के नाम से जाना जाता है।

-5/279, एस.एफ.एस. अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर मो. 8829075513

हिन्दी वर्तनी की अशुद्धियाँ एवं कारण

❒ डूंगर राम सुथार

हमारे देश के संविधान में हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा स्वीकार किया गया है। वहीं उसकी लिपि के रूप में देव नागरी को मान्यता दी है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के भाषाविदों, पत्रकारों, हिन्दी सेवी संस्थानों तथा विभिन्न मंत्रालयों के प्रतिनिधियों के सहयोग से देवनागरी लिपि का मानक स्वरूप तैयार किया है। हमें यह व्यवहार में अपनाना चाहिए।

वर्तमान हिन्दी की वर्तनी में अशुद्धियाँ होने के अनेक कारण हैं जिनमें प्रमुख निम्मलिखित है–

1. लिपि के ज्ञान का अभाव 2. अशुद्ध उच्चारण 3. असावधानी एवं जल्दबाजी 4. क्षेत्रीय प्रभाव 5. वाचन की लापरवाही 6. सादृश्य 7. व्याकरण तथा शब्द रचना का अपूर्ण ज्ञान 8. वर्तनी समानता से अर्थ सम्बन्धी भ्रांति।

लिपि सम्बन्धी ज्ञान के अभाव में निम्नांकित अशुद्धियाँ मिलती हैं–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
किये	किए	कन्चन	कञ्चन/कंचन
चाहिये	चाहिए	झन्डा	झण्डा/झंडा
सम्शय	संशय	पृथक	पृथक
हंस	हँस	हँस	हंस
सन्यास	संन्यास	र्निमाण	निर्माण
रिषि	ऋषि	ब्राम्हण	ब्राह्मण

हमें खड़ी पाईवाले व्यंजनों का संयुक्त रूप खड़ी पाई को हटाकर ही बनाया जाना चाहिए, जैसे ख्याति, नगण्य, पथ्य, शय्या, श्लोक स्वीकृति त्र्यंबक आदि। संस्कृत के संयुक्ताक्षर पुरानी शैली से लिखे जा सकेंगे, जैसे– संयुक्त, चिह्न, विद्या, चञ्चल, वृद्ध, अङ्क, द्वितीय इत्यादि।

संयोजक चिह्न विधान अर्थ स्पष्टता के लिए किया गया है। जैसे दिन-रात, माता-पिता, देख-रेख आदि।

सा, जैसा आदि से पूर्व संयोजक चिह्न रखा जाए, जैसे तुम-सा, मोटा-सा, कपिल-जैसा आदि।

संयुक्त व्यंजन के रूप में जहाँ पंचमाक्षर (ङ, ञ, ण, न, म) के बाद सवर्गीय शेष चार वर्णों (जैसे क, ख, ग, घ आदि) मैं से कोई वर्ण हो तो एकरूपता और मुद्रण लेखन की सुविधा के लिए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए। जैसे–गंगा, ठंडा, संध्या, संपादक आदि।

यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ग का कोई वर्ण आए अथवा पंचमाक्षर दुबारा आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार (ं) के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, जैसे वाङ्मय, अन्य सम्मेलन, चिन्मय, उन्मुख आदि।

हिन्दी में महान विद्वान आदि में हलन्त चिह्न लुप्त हो चुका है।

संस्कृत मूलक तत्सम शब्दों की वर्तनी को ज्यों-का-त्यों ग्रहण किया जाए, अतः ब्रह्मा को ब्रह्मा चिह्न को चिह्न, उऋण को उरिण, ऋतु को रितु न लिखा जाए।

संस्कृत के जो शब्द तत्सम रूप में प्रयुक्त हो तो विसर्ग का प्रयोग किया जाएः जैसे दुःखानुभूति आदि।

असावधानी एवं जल्दबाजी से अपने स्वभाव के कारण शुद्ध वर्तनी लिख सकने में सक्षम होते हुए भी वर्ण के स्थानान्तरण या वर्णलोप द्वारा अशुद्धि आ जाती है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अकास्मिक	आकस्मिक	करेगें	करेंगे
नकर	नरक	स्वयं	स्वयं
वास्तल्य	वात्सल्य	वक्तित्व	व्यक्तित्व
अध्यन	अध्ययन	उलंघन	उल्लंघन

–क्षेत्रीय प्रभाव पीढ़ी-दर-पीढ़ी बढ़ता जा रहा है। एक क्षेत्र विशेष में होने वाले उच्चारण या लेखन पद्धति के प्रभाव से वर्तनी की अशुद्धियाँ परिलक्षित हो रही है।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
इस्कूल	स्कूल	सेव (फल)	सेब
धोका	धोखा	जजमान	यजमान

वाचन लापरवाही से शुद्ध लिखे हुए को पढ़कर भी लिखते समय वर्तनी सम्बन्धी भूल हो जाती है। कुछ उदाहरण नीचे दिये गये हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अँगुली	उँगली	आद्र	आर्द्र
दृष्ट	दृश्य	विशिष्ठ	विशिष्ट
वशिष्ठ ऋषि	वसिष्ठ	पुन्य	पुण्य
हेतू	हेतु	पत्नि	पत्नी
पती	पति	लिपी	लिपि

–सादृश्य से कुछ लिपि-चिह्नों के कारण एक दूसरे के स्थान पर समझ लिया जाता है–

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
विधालय	विद्यालय	नयी	नई
सीधा-साधा	सीधा-सादा	सृजन (सृष्टि)	सर्जन
वैश्या	वेश्या	श्रीमति	श्रीमती

–व्याकरण एवं शब्द रचना के सही ज्ञान के अभाव में उच्चारण अशुद्धियाँ बढ़ती जा रही हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
क्रोधी	क्रुद्ध	निरपराधी	निरपराध
सौन्दर्यता	सौन्दर्य	निर्देषी	निर्दोष
प्राणीमात्र	प्राणिमात्र	मंत्रीमण्डल	मंत्रिमण्डल
अनुवादित	अनूदित	कुत्त्याँ	कुतिया
निरोग	नीरोग	निख	नीख

हमें राष्ट्रीय एकता एवं भारतीय भाषाओं में आपसी समझ को मजबूत करने के दृष्टिकोण से देवनागरी को भारत की भावी राष्ट्रीय लिपि के रूप में सोचना चाहिए।

–प्राध्यापक, रा. नवीन उ.मा.वि., जोधपुर
मो. 9461049714

एक जैसे पर अलग

यूं तो हिंदी में उच्चारण और अर्थ को लेकर कोई गफ़लत नहीं होती, लेकिन नए-पुराने प्रचलन की वजह से कुछ शब्दों को लेकर भ्रम हो सकता है। 'कार्यवाही' और 'कार्रवाई' ऐसे ही शब्द हैं। कार्रवाई अपेक्षाकृत नया शब्द है, जो चलन में आया। अब 'कार्यवाही' का प्रयोग प्रक्रिया के अर्थ में किया जाता है, जैसे-संसद की कार्यवाही या बैठक की कार्यवाही। दूसरी तरफ, 'कार्यवाई' का इस्तेमाल अंग्रेजी के एक्शन लेने के अर्थ में किया जाता है, जैसे-पुलिस की कार्यवाई अथवा अतिक्रमण विरोधी दस्ते की कार्रवाई। इसी तरह 'अंतर्राष्ट्रीय' और 'अंतरराष्ट्रीय' को लेकर भी भ्रम की स्थिति है। हालांकि अब राष्ट्र से परे या एक से अधिक राष्ट्रों के बीच की बात को 'अंतरराष्ट्रीय' कहा जाता है। इसके 'अंतर' में परे, अलग होने का भाव है। इसके विपरीत, अंतर्राष्ट्रीय का 'अंतर' उपसर्ग एक के भीतर होने की ओर इंगित करता है। याद कीजिए, 'अंतर्देशीय पत्र', जिन पर अंग्रेजी में लिखा होता है-इनलैंड कार्ड। ये अंतर्देशीय पत्र देश के भीतर ही भेजे जा सकते हैं, दूसरे देश में नहीं। हालांकि हिंदी में देश के बाहर/दो या अधिक देशों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय' भी प्रचलन में है, पर अब अंतरराष्ट्रीय के प्रयोग को प्राथमिकता दी जाती है, ताकि भ्रम की गुंजाइश न रहे।

रपट

राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2013

शनिवार 5 अक्टूबर, 2013, वेटेरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2013. सम्मान समारोह की शृंखला में 21वां शानदार समारोह।

अब तक आयोजित किए गए अपने भव्य स्वरूप को पीछे छोड़ते हुए नया इतिहास रचते हुए नई दुल्हन की तरह सजे हुए ऑडिटोरियम में सभी कर्मचारी अधिकारी उल्लास और नई ऊर्जा व उमंग के साथ भरपूर मन से और होगी क्यों नहीं। सेवा को समर्पित श्रेष्ठ साथियों के सम्मान के लिए तो सभी को उत्सुक रहना ही चाहिए। कोई काम छोटा बड़ा नहीं, किसी एक का नाम क्या लिया जाए सभी अनूठे समारोह को सफल बनाने में लगे। सम्मान समारोह की भव्यता को नया आयाम मिला राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर के माननीय कुलपति हनुमानप्रसाद व्यास के मुख्य आतिथ्य स्वीकार करने से। सम्मान समारोह की अध्यक्षता की हमारे विभाग की संरक्षक निदेशक महोदया डॉ. वीना प्रधान ने।

माँ सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ ही मुख्य अतिथि और गरिमामय मंच पर उपस्थित महानुभावों ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (महारानी), बीकानेर की छात्राओं ने सरस्वती वन्दना वीणावादिनी वरदे का सरस गायन कर पूरे वातावरण को भावपूर्ण बना दिया। सम्मानित मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि, अध्यक्ष तथा अन्य अधिकारियों का पुष्प मालाओं व पुष्प गुच्छों से स्वागत किया गया। अभिनन्दन के क्षणों को सुमधुरगीत 'गूंज उठी शहनाई आप पधारे हमारे प्रांगण आप पधारे।' से और भी आत्मीय बनाया महारानी विद्यालय की छात्राओं ने। समारोह का औपचारिक स्वागत भाषण अनौपचारिक रूप से श्री हेमाराम ने दिया। सम्मान समारोह की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत किया श्री आनन्द कुमार ने। उन्होंने बताया प्रथम कर्मचारी सम्मान समारोह 30 मई, 1990 को आयोजित हुआ था। तत्कालीन निदेशक श्री ललित के. पंवार की प्रेरणा और नेतृत्व से शुरू हुए कर्मचारी सम्मान समारोहों में सन् 2012 तक 571 कार्मिक सम्मानित हुए हैं। इस वर्ष 34 कार्मिकों का चयन हुआ है। निश्चय ही सम्मानित होने वाले कर्मचारी बधाई के पात्र है। सभी कार्मिक समान रूप से कार्य करें और इसमें आधुनिक तकनीक का भी प्रयोग करें ताकि समय की बचत हो। यह बात मुख्य अतिथि डॉ. व्यास ने कही।

डॉ. व्यास ने अमेरिका व भारत में ऑफिशियल वर्ग में काम की प्रकृति के बीच तुलनात्मक वर्णन भी प्रस्तुत किया। उन्होंने मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों के साथ अपने अनुभव भी बाँटे। समारोह की अध्यक्षता करते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. वीना प्रधान ने कहा कि शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी अपने काम में निपुण है। उन्होंने विभागीय पदोन्नति कार्य में देर रात तक काम कर लक्ष्य पूरा करने पर सभी कार्मिकों की सराहना की।

माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने कहा कि काम का सम्मान होना चाहिए और दूसरे कार्मिकों को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। कार्यक्रम में प्रदेश भर से आए विभाग के 34 कर्मचारियों का सम्मान किया गया। इसमें एक महिला एवं एक निशक्त कार्मिक भी सम्मिलित है। कार्यक्रम में अतिरिक्त निदेशक पी.सी. मावर, संयुक्त निदेशक शिवजी राम चौधरी व उपनिदेशक विरदासिंह रावत ने भी विचार व्यक्त किए। सम्मानित होने वाले कार्मिकों को तिलक, माला, साफा, शॉल, स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पुस्तिका, श्रीफल, शिक्षक दिवस पर प्रकाशित पाँच पुस्तकों का सैट इत्यादि भेंटकर सम्मानित किया गया। गरिमामय मंच पर आसीन मुख्य अतिथि, अध्यक्ष महोदय व अन्य विशिष्ट जनों के हाथों कर्मचारियों का सम्मान किया गया। इस क्रम में सम्मानित हो रहे कर्मचारियों के सम्मान में प्रशस्ति का वाचन सुरेश व्यास ने किया, मदन मोदी ने सहयोग किया। मंच संचालन सुभाष महलावत ने किया। राष्ट्रगान के साथ ही यह राज्यस्तरीय समारोह सम्पन्न हुआ।

-साँगसिंह इन्दा
सहायक निदेशक (शिविरा)
मो. 9461879679

सम्मानितों की नामावली

1. श्री सुरेशकुमार शिल्पकार, वरिष्ठ लिपिक, कार्याल्य जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) प्रतापगढ़
2. श्री राजेन्द्र सिंह राजपूत, कार्यालय सहायक, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) प्रतापगढ़
3. श्री ओम प्रकाश विश्नोई, वरिष्ठ लिपिक माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान बीकानेर
4. श्री कमलेश एन. मानसिंघानी, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अजमेर-प्रथम
5. श्री सत्यनारायण व्यास, कनिष्ठ लिपिक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय राजस्थान, बीकानेर
6. श्री धर्मचन्द जैन, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा) अजमेर
7. श्री संजय भाटी, कनिष्ठ लिपिक, कार्यालय जिलाशिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक) नागौर
8. श्रीमती रचना अग्रवाल, कनिष्ठ लिपिक कार्यालय उपनिदेशक (प्रारंभिक) शिक्षा अजमेर
9. श्री ओमप्रकाश ठाकुर, जमादार कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, कोटा
10. श्री नवीनचन्द्र तंवर, वरिष्ठ लिपिक कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, अजमेर
11. श्री आलमगीर, वरिष्ठ लिपिक कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, अजमेर
12. श्री जितेन्द्रकुमार उपाध्याय, वरिष्ठ लिपिक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय तलवाड़ा (बांसवाड़ा)
13. श्री केसर सिंह राजपूत, जमादार राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

14. श्री भंवरलाल देवगांव, कार्यालय सहायक कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, अजमेर
15. श्री राजकुमार भाटी, कनिष्ठ लिपिक कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) अजमेर
16. श्री जितेन्द्र माथुर, वरिष्ठ लिपिक निदेशक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
17. श्री सुभाष चन्द्र सनाढ्य, वरिष्ठ लिपिक कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, उदयपुर
18. श्री खुशालचन्द खत्री, वरिष्ठ लिपिक निदेशक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
19. श्री मुकेश मून्दड़ा, कनिष्ठ लिपिक कार्यालय उप निदेशक, प्रारंभिक शिक्षा, अजमेर
20. श्री रमेश चन्द मोड़ा, वरिष्ठ लिपिक डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा सदन, कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) कोटा
21. श्री सुरेश सेन, कनिष्ठ लिपिक कार्यालय उप निदेशक (प्रारंभिक) शिक्षा, अजमेर
22. श्री गोपाल सिंह बल्ला, कनिष्ठ लिपिक राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
23. श्री मिश्रीलाल, सहायक कर्मचारी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाँधी नगर, जयपुर
24. श्री कृष्ण गोपाल सनाढ्य, वरिष्ठ लिपिक कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, (मा.) उदयपुर द्वितीय
25. श्री चन्द्रमोहन सिंह, कनिष्ठ लिपिक कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अजमेर, द्वितीय
26. श्री कृष्ण गोपाल शर्मा, कार्यालय सहायक राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलाबपुरा (भीलवाड़ा)
27. श्री महेश कुमार चौबे, प्रयोगशाला सेवक राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोटड़ी (भीलवाड़ा)
28. श्री जगदीश चन्द्र मून्दड़ा, कार्यालय सहायक राजकीय बालिका उ.मा. विद्यालय, गुलमण्डी, भीलवाड़ा
29. श्री कमल स्वरूप दिवाकर, कनिष्ठ लिपिक राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यलाय, धनकोली, नागौर
30. श्री अमरजीत सिंह, वरिष्ठ लिपिक कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मा.) भरतपुर द्वितीय
31. श्री बाबूलाल शर्मा, सहायक कर्मचारी कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (मा.) अजमेर द्वितीय
32. श्री भंवरलाल जोशी, सहायक कर्मचारी प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
33. श्री बृजरतन धोबी, सहायक कर्मचारी प्रारंभिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर
34. श्री योगेश कुमार वर्मा, कनिष्ठ लिपिक कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) अजमेर द्वितीय

मान-सम्मान

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान समारोह : 2013

❑ प्रहलाद शर्मा

राष्ट्रीय राजधानी, नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में शिक्षक दिवस, 5 सितम्बर, 2013 को देश के 336 शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से विभूषित किया गया जिनमें 15 शिक्षक राजस्थान के थे, जिनका विवरण इस प्रकार है-(1) श्री जमनालाल गुर्जर, शारीरिक शिक्षक, रा.उ.प्रा.वि. नया गांव, कोटा (2) श्रीमती सुमित्रा चाहर, अध्यापिका, रा.उ.प्रा.वि. भरेड़ा, चित्तौड़गढ़ (3) श्रीमती गायत्री शर्मा, प्रधानाध्यापिका, राज. प्राथमिक विद्यालय, बड़ी की ढाणी, मुहाना (सांगानेर) (4) श्री संतोष कुमार जैन, प्रधानाध्यापक, रा.उ.प्रा.वि. बालापुरा, अजमेर (5) श्री बलविन्द्र सिंह बराड़, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि. 10 जेड श्रीगंगानगर (6) श्री श्रीचन्द, अध्यापक, रा.प्रा.वि. पूर्वी ढाणिया, भुवाला, सीकर (7) श्रीमती रजिया खान, अध्यापिका, रा.उ.प्रा.वि.गोपाल मील, कोटा (8) श्री सूरज प्रकाश भाटी, अध्यापक नेत्रहीन विकास संस्थान उ.प्रा.वि. कमला नेहरू नगर, जोधपुर (9) श्री शैतान सिंह देवड़ा- वरिष्ठ अध्यापक, रा.उ.मा.वि.पालड़ी एम, सिरोही (10) श्री विष्णु कुमार शर्मा, वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक, रा.उ.मा.वि. धमोतर, प्रतापगढ़ (11) श्री कान्तिलाल जोशी, शारीरिक शिक्षक, रा.उ.मा.वि.पिण्डिया, नागौर (12) श्री नन्दलाल सिंह जोधा-व्याख्याता, रा.उ.मा.वि.बाबरा, जोधपुर (13) श्रीमती मधु गुप्ता-व्याख्याता, श्री महेश्वरी, उ.मा.वि.,जयपुर (14) श्री अशोक कुमार शर्मा, अध्यापक, रा.मानपुरिया वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, श्रीमाधोपुर, सीकर (15) श्री मुरारी लाल शर्मा-अध्यापक, रा.उ.मा.संस्कृत विद्यालय, चौमू, जयपुर।

मुख्य अतिथि भारत के महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के पधारने पर उनकी अगवानी केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री शशि थरूर ने अतिथियों का स्वागत करते हुये सम्मानित होने वाले शिक्षकों को बधाई दी एवं सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन को नमन किया तत्पश्चात राष्ट्रपति जी द्वारा क्रमांक 1 से 120 तक के पुरस्कृत शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र एवं सिल्वर मेडल देकर सम्मानित किया। मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद ने कहा कि शिक्षकों का राष्ट्र निर्माण में बहुत बड़ा योगदान है। उन्हें और समर्पण के साथ कार्य करना चाहिये। उन्होंने प्राथमिक शिक्षा के सर्व शिक्षा अभियान की प्रशंसा की।

पुनः राष्ट्रपति महोदय द्वारा क्रमांक 121 से 240 तक के चयनित शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र एवं सिल्वर मैडल देकर सम्मानित किया। राजस्थान के सम्मानित होने वाले शिक्षकों का सम्मान इसी चरण में हुआ, इनका क्रमांक 170 से 184 तक था। मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ. एम.एम.पल्लम राजू ने अपने उद्बोधन में डॉ. राधाकृष्णन को नमन करते हुये कहा कि इस राष्ट्रीय स्तरीय शिक्षक सम्मान की शुरूआत 1958-59 में हुई थी तथा उस समय 32 शिक्षकों को इस सम्मान से सम्मानित किया गया था। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही देश को विकास की ओर अग्रसर करती है।

राष्ट्रपति महोदय ने 241 से 336 तक के चयनित शिक्षकों को प्रशस्ति पत्र एवं सिल्वर मैडल देकर सम्मानित किया। अन्त में राष्ट्रपति महोदय ने अपने उद्बोधन में डॉ. राधाकृष्णन को नमन करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता पर जोर दिया। राष्ट्रगान के साथ समारोह संपन्न हुआ।

5/279, एस.एफ.एस. अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर मो. 9414796071

शिक्षक दिवस प्रकाशन 2013

प्रतिवर्ष की भांति माध्यमिक शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर द्वारा शिक्षक दिवस, 5 सितम्बर 2013 के अवसर पर प्रकाशित पांच प्रकाशन विद्वान, अनुभवसिद्ध संपादकों और कलम के कारीगर रचनाधर्मियों के महत्वपूर्ण प्रकाशन हैं।

nñVH$ g_rjm

खुलते वातायन
(हिन्दी कविता)

संपादक : पुष्पलता कश्यप
पृ.:160, मूल्यः ₹ 55.00

इसमें 123 कवियों की कविताओं का संकलन है। विदुषी पुष्पलता कश्यप ने हिन्दी, राजस्थानी दोनों भाषाओं में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इस काव्य विधा में जहां प्रसिद्ध शिक्षकों की कविताओं का नये भावबोध व उन्नत विचारों से उन्मुक्त काव्य सृजन है तो नवयुवकों को भी पर्याप्त स्थान दिया गया है। सम्पूर्ण राजस्थान में शिक्षक जगत ने अपनी नवीनतम सृजनधारा को भेजकर संकलन को समृद्ध किया है। खुलते वातायन में देशभक्ति की भावना का संचरण, कन्या भ्रूण हत्या की भर्त्सना, मां की ममता प्रकृति का सुन्दर चरित्र चित्रण, बारहमासा, जीवन दर्शन बसंत की छटा और जय जवान तथा जय जवान के भावों से ओतप्रोत रचनाओं का संकलन पुस्तक को कालजयी बना देता है। जनकराज पारीक की 'भीड़ में मैं', ओम प्रकाश सारस्वत की 'यह जिन्दगी उपहार है' सुशील एम. व्यास की नये सूरज की पहली किरण, रामजीलाल घोड़ेला की 'खत्म होती मानवीयता' राजेन्द्र जोशी की 'रेड लाइट बच्चे' रचना शेखावत की 'गांव बुलाता है', डॉ. लीला की 'भ्रूण दर्शन', दशरथ सिंह की 'व्यथा', शिवमृदुल की 'प्रगति के अध्याय', भीमसिंह मीणा की 'बचत', डॉ. उपाध्याय की 'कन्या के रूप अनेक' संकलन की प्रतिनिधि रचनाएँ कही जा सकती है।

शिक्षा का दिशाबोध
(शिक्षा साहित्य)

संपादक रूपनारायण काबरा
पृ.:168, मूल्यः ₹ 58.00

शिक्षा जगत में यह पुस्तक शिक्षक व पाठक को नया शोध प्रदान करती है। वास्तविक शिक्षा मनुष्य को बंधनों से मुक्त करती है यथा अज्ञान, प्रमाद, क्रोध, ईर्ष्या से मुक्त कर, सत्य की ओर बढ़ाती है। शिक्षा वही है जो जीवन में सीधी जुड़ी हो और अमिट उर्जा से भरकर आत्मविश्वास से परिपूरित कर दे। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी को विविध क्षेत्रों में किये गये मानव के महान प्रयत्नों का विशाल ज्ञान देना है। इन भावनाओं से संतृप्त 170 पेजी यह पुस्तक काबरा जी ने शिक्षा जगत को समर्पित की है। 36 विद्वानों के विद्वतापूर्ण आलेख शिक्षा के नये शोध और बदलते परिवेश के प्रति बच्चों को दिशा बोध कराती है। पुस्तक का शुभारम्भ मदनलाल पुरोहित की रचना 'आदर्श शिक्षक: डॉ. राधाकृष्णन' जैसे पुनीत विषय से होता है। जमनालाल बायती 'शिक्षा समग्र जीवन के लिए', मधु बाला शर्मा की 'संस्कार युक्त शिक्षा' ओमप्रकाश सारस्वत की 'गांधीजी सहज शिक्षा के पक्षधर थे।' कुछ लेखकों ने महात्मा गांधी, अरविन्द अम्बेडकर, स्वामी विवेकानन्द, भगवान महावीर के शिक्षा संबंधी उदात्त विचार व प्रेरणादायी संदेश उद्घाटित करके छात्रों को झकझोर दिया है। कुछ विषयों पर रोचकतापूर्ण मीमांसा की गई है। जैसे डॉ. श्याम मनोहर व्यास की 'गणित विषय को यों बनाएं रोचक', शिवचरण मंत्री की 'जीवन कौशल शिक्षा' बालक के सर्वांगीण विकास में बाधक तत्व आदि। कुछ में भविष्य में शिक्षा का मार्गदर्शन है जैसे-विश्वनाथ भाटी की 'शिक्षित बनाम संस्कारित', मूलचन्द सैनी-'संस्कार निर्माण में शिक्षक की भूमिका', बलदेवसिंह का प्रभावी सम्प्रेषण, सत्यनारायण पंवार से 'वातावरण से शिक्षा', विद्वान लेखक एम.एल.जांगिड़ ने पुराने गुल्ली डंडा, सतोलिया, कबड्डी जैसे खेल चन्दामामा जैसी पत्रिकाओं का गठन-पठन, दादा-दादी, नाना-नानी की बातें, गीली मिट्टी के घर बनते बिगड़ते घर व अटखेलियां करते बच्चों की तुलना आज के पढ़ाई के दबाव में दबे बच्चे जो कम्प्यूटर से चिपके रहते हैं, फेसबुक, ट्वीटर व देश-विदेश के हजारों अनजानों से दोस्ती के भंवरजाल में फंस जाते हैं। आज का बच्चा माता-पिता एवं घर के सदस्यों के साथ मिलकर भी अकेला कहा जा सकता है जो सर्वांगीण विकास से परे हैं। विद्वान संपादक ने डॉ. जांगिड़ के जरिये आज के बोझिल वातावरण का सांगोपांग वर्णन किया है। सभी लेखकों की रचनाएं एक से एक बढ़कर हैं। सम्पादक जी स्वयं का बहुआयामी व्यक्तित्व इस पुस्तक में साफ झलकता है। शिक्षा जगत में यह पुस्तक संदर्भ पुस्तक की भूमिका निभा सकेगी।

भोर का उजास
(बाल साहित्य)

संपादक-डॉ. उषा किरण सोनी
पृ. : 96, मूल्यः ₹ 30.00

डॉ. उषा किरण सोनी द्वारा संपादित यह संकलन देखते ही सुन्दर आवरण के कारण न केवल बालकों को अपितु बड़ों को भी आंखों को ठंडक देने वाली संग्रह बन गया है। मात्र 55 रचनाकारों ने 96 पेजी रचनाओं में गागर में सागर भरने का प्रयास किया है। इस संकलन में कुछ रचनाएँ उल्लेखनीय हैं-नन्हें-मुन्ने, पेड़ हमारे जीवनदाता पानी, बोलो चन्दा मामा, ज्ञानवर्द्धक व मनोरंजक हैं। इस संकलन में बच्चों में अपने अध्यापक के प्रति, पर्यावरण की शिक्षा, प्रकृति प्रेम, देश भक्ति की भावना, स्वाभिमान की जीवनी, भारतीय सेना के प्रति सम्मान, निडरता, गुरु के प्रति सम्मान, सामूहिक चलने का प्रयास, सूरज, बादल, पानी, हवा अंतरिक्ष चन्दामामा, नयी किरण जैसी प्राकृतिक छटा का मनोहारी वर्णन है। कवितावां में-

गांधी सा इन्सान बनूंगा।
कभी किसी से नहीं लड़ूंगा।
ध्यान लगाकर सदा पढ़ूंगा।
बस आगे ही आगे बढ़ूंगा।
सच्चाई की राह चुनूंगा।

वृद्धिचन्द गोठवाल का यह सन्देश 'साहसी बेटी' में कि हे ईश्वर सारे संसार को यह ज्ञान दीजिए कि कोई भी परिवार पुत्र और पुत्री के बीच अन्तर न समझे। यह कहकर जयश्री की आँख भर आई। 'बोझ हट गया' में बच्चों की गलती के लिए पश्चाताप की बात बताई गई है। 'जीत की खुशी' में स्कूल में विजेता छात्रों के मनोभाव को बड़े ही मनोवैज्ञानिक दृष्टि से दर्शाया

गया है। 'नया सवेरा' में शाला में पेड़ पौधे, वृक्षारोपण का नयनाभिराम दृश्य हमें अच्छी सीख देते हैं। बड़ों का सम्मान छोटों का कर्तव्य, सचिव की महानता, परोपकार की भावना सबसे पुरस्कार में बच्चों के अच्छे इन्सान की सीख दी गई है।

अपने लिए सभी जीते हैं,
औरों के लिए कुछ करना सीखो।

डॉ. सोनी एक प्रसिद्ध शिक्षिका रही है। बाल मनोभावों की कुशल चितेरी हैं। संकलन में भारत के भावी नागरिक की सीख है। 'भोर का उजास' सभी विद्यालयों की पुस्तकाय में पढ़ने लायक अजर अमर पुस्तक है।

सृजनपथ (विविधा)
संपादक-माधव नागदा
पृ.:160, मूल्य : ₹55.00

शिक्षकों ने इस पुस्तक में क्षरित होते मानवीय मूल्य तथा टूटते-बिखरते पारिवारिक रिश्तों को लेकर बेहद चिन्ता दर्शायी है। विद्वान संपादक का चयन इन बातों को लेकर इस पुस्तक में साफ दृष्टिगोचर होता है। तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था तथा सूचना क्रांति के आतंक का दुष्परिणाम बढ़ते अमानवीकरण एवं भारतीय भाषाओं और संस्कृति के प्रति घटती आस्था के रूप में हमारे सम्मुख हैं। प्रस्तुत संकलन में जनकराज पारीक की 'शंभु कलेक्टर का फैसला' एक सशक्त कहानी है जो हमारी असंवेदनशीलता को खोलकर रख देती है। शकुन्तला जी की 'एक सम्मानित दरजा' में अपनी बहू द्वारा एक सम्मानित बुजुर्ग सज्जन की आप बीती व्यथा है जो आज आम बात हो गई है। महलान जी की कहानी 'वापसी' में पढ़े लिखे बेटा-बहू की बदलती सोच की दशा है तो दबंग घर मालिक की मजबूरी। ऐसे ही कश्यप जी के 'रिश्ते' चैनराम शर्मा 'अभागिन' किरण बाला की 'नई जिंदगी' में महसूस करते हैं।

लघुकथावां में थोड़े शब्दों में बड़ी बात कहने की कला है। रोहिताश की 'जानवर' नदीम अहमद नदीम की 'आत्मविश्वास', सत्यनारायण सत्य की 'प्रेम का रंग', अब्दुल खान का 'सागर' परिश्रम के साथ लिखी बात है। मधुबाला का लेख 'बुजुर्गों को महत्वहीन न समझें' बड़ा उपयोगी लेख है। सम्पत लाल के लेख में हजारी परम्परा से चली आ रही राजस्थान का ख्यात और बात साहित्य ज्ञानवर्द्धक आलेख है जिसमें हमारा इतिहास झलकता है। हमारे पुरोधाओं की लेखनी की जानकारी मिलती है। 'सृजनपथ' पर रचनाकारों की सारगर्भित बातें हैं। सम्पादक माधव नागदा विद्वान लेखक हैं। अकादमी से पुरस्कृत साहित्यकार हैं। यह संकलन पुराने व नये लेखकों का सम्मिश्रण है। विभिन्न विधाओं में हमारी नई पौध को सीख देने वाली बातों का समावेश है। सचमुच विद्वान संपादक की सूझबूझ और लेखकों की उर्जावान सोच ने इस संकलन को देशव्यापी पढ़ने लायक बना दिया है। पुस्तकालयों के लिए संग्रहणीय कृति है।

सबद साख
(राजस्थानी विविधा)
संपादक :
मधु आचार्य 'आशावादी'
पृ.:160, मूल्यः ₹55.00

राजस्थान के शिक्षा जगत में राजस्थानी सिरजण का बहुत महत्व है। राजस्थानी लेखकों में अधिकतर शिक्षा विभाग के अध्यापक व प्राध्यापकों ने ही सेवा दी है। आने वाली पीढ़ी को ये लोग ही संस्कारित व अनुशासित होने का बीज बो सकते हैं जो आज जरूरी है। 'सबद साख' राजस्थानी की विविध विधाओं का संग्रह है। पृथक-पृथक रोचक विषय हैं। जैसे बेटी मोहम्मद अमीन छीपा की कविता में बोलती है:-

पर घर की चिड़कली हूं, कोनी मांगू पांती।
शिक्षा रो दायजो ले लेस्यूं, म्है तो जाति जाति।।

विजय गिरी गोस्वामी अपनी कविता 'खूब करूं म्हूं लाड' में कहते हैं-

छोरी दुर्गा रूप है, कोख में ही मत मार।
रूठ गई गर छोरियां, तो रुक जावे संसार।।

मोनिका गौड़ का आलेख 'राजस्थानी काव्य में नारी चेतना' आज की नारी को समय के साथ आगे बढ़ने का शंखनाद है। ऐसी अनेक गद्य और पद्य में नारी चेतना और नारी सम्मान की रचनाएँ इस संकलन की खास विशेषता है। पाटीदार की 'चाकरी' एकांकी भी भाव से ओतप्रोत है।

'आशावादी' ने शब्दों की महिमा का वर्णन करते एक कवि की पंक्ति प्रस्तुत की है कि- सारद माता सीस निवाऊं, ओ वर दीजै।

सबदां में जीवूं मर जाऊं।
सबदां से आगोत्तर दीजे।

शिक्षाविद ओमप्रकाश जी सारस्वत ने आदमी के अन्दर का मैला और अकड़ाई खत्म नहीं होती है तो अड़सठ तीर्थ बेकार है। पाण्डवां की एक तूमड़ी की कथा के माध्यम से बहुत सहज अर सरल भाव से 'अड़सठ तीरथ न्याह तूमड़ी रैगी खारी' प्रेरणादायी कथा बताई है। हेमलता दाधीच री कहाणी में मीरां की गरीबी का संवेदनशील चित्रण है। रामजीलाल घोड़ेला 'दिस इज डेड' में डाक्टर की गफलत का परिणाम दिखाकर डाक्टर वर्ग को सीख दी है। डॉ. मदन गोपाल लढ़ा अभी तक तो युवा है परन्तु 'लाड' में परिवार में बच्चों की बाल सुलभ बातों को घर गृहस्थी की चीजों को लेकर रोचक चित्रण किया है। उम्र छोटी-अनुभव मोटो।

इस पुस्तक से बच्चों का चारित्रिक, मानसिक और सामाजिक विकास होगा। बच्चों का चारित्रिक और नैतिक विकास होगा। राजेन्द्र जोशी की 'लालो' कहानी कर्मठ और सादगीपूर्ण जीवन सब जाति और धर्मो के लिए प्रतीक है। शिवशंकर व्यास शिक्षक के कर्तव्य बड़ी गहराई से बताते हैं। यदि पालना की जाय तो आज के शिक्षक देवता बन जाय। अर्जुनसिंह शेखावत की 'लुकाव', एम.एल.जांगिड़ का 'मतलबी लोग', शिवराज भारतीय का 'म्है' सावित्री व्यास की 'बसंत तूं' रमेश मयंक की 'रेत री मनवार', सुरेन्द्र अंचल की 'अेक अभिमन्यु' प्रजापति की 'सबदा का चितराम', डॉ. लीला मोदी की गजल, जनकराज पारीक की 'पंचलड़ी', जगदीश नागर का 'चारण भक्ति साहित्य में ओळमा अर उपमावां' जैसी प्रतिनिधि रचनावां में सभी विधावां का संकलन है। कहाणियां, लघुकथा आदि सभी विधाओं को एक साथ संकलन इस पुस्तक की विशेषता है। रचनाओं में नाटकीय कथोपकथन का पुट देकर संकलन को रोचक व प्रभावी बनाया है।

-पृथ्वीराज रतनू
एफ.सी.आई. गोदाम रोड,
इन्दिरा कॉलोनी, बीकानेर
मो. 9414969200

चतुर्दिक समाचार

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं। -वरिष्ठ सम्पादक

मोड़कर जेब में रख सकेंगे पांच लीटर का वाशिंग बैग

लंबी छुट्टियों का ख्वाब पालने वालों को सफर के दौरान अक्सर साफ कपड़ों की कमी से जूझना पड़ता है। ऐसे में वाशिंग मशीन की कमी बेहद अखरती है। ऐसे घुमक्कड़ों के लिए मेलबर्न के ऐश न्यूलैंड ने पोर्टेबल वाशिंग बैग स्क्रूबा तैयार किया है।

पांच लीटर की इस मशीन को मोड़कर जेब में भी रखा जा सकता है। लिहाजा इसे सफर में ले जाना भी बेहद आसान है और किसी भी जगह पर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। इस वाशिंग बैग के जनक की मानें तो इसमें महज पांच मिनट में बाल्टीभर कपड़े आसानी से धोए जा सकते हैं। यूं तो इसमें कपड़े साफ होने में कुल 30 सेकंड का समय लगता है लेकिन मशीन सरीखी धुलाई के लिए पांच से छह मिनट तक इसमें कपड़े डाल कर धो सकते हैं। ब्रिटेन के बाजार में इसकी मौजूदा कीमत 41 पौंड और इसका वजन 180 ग्राम है। घर से बाहर होने पर इसमें टी-शर्ट, मोजे और जींस तक सहजता से धोए जा सकते हैं। देखने में यह किसी साधारण कैनवास बैग जैसा है मगर धुमक्कड़ प्रवृत्ति के लोगों के लिए यह काफी काम की चीज हैं इस में कपड़े साफ करने के लिए तीन लीटर पानी और तरल साबुन की जरूरत होती है। बैग में कपड़े, पानी और तरल साबुन के साथ डालकर कसकर मोड़ दें। इसके बाद यह बैग अपने आप खुलेगा जिससे उसमें कपड़ों में अंदरूनी रगड़ पैदा होगी और गंदगी आसानी से निकल जाएगी। ऐश को यह वाशिंग बैग बनाने का ख्याल तब आया जब वह अपने मित्र के साथ अफ्रीका की यात्रा पर निकल रहे थे। स्लीपिंग बैग व स्लीपिंग मैट और ठंड से बचने के जरूरी सामान रखने के बाद उनहें एहसास हुआ कि उनके पास इतनी लंबी यात्रा केलिए पर्याप्त कपड़े रखने का जुगाड़ नहीं है।

इस यात्रा के दौरान उन्हें कुछ दिन अफ्रीका के बेहद दुर्गम स्थानों में गुजारने थे। लिहाजा कपड़ों की नियमित सफाई का भी रास्ता नजर नहीं आ रहा था। ऐसे में ऐश को घर में रखे वाशिंग बोर्ड से प्रेरणा मिली और उन्होंने एक लचीला बोर्ड पहले विकसित किया और बाद में उसे वाटरप्रूफ वाशिंग बैग की शक्ल दे दी।

दौड़ते हुए पढ़ सकेंगे पसंदीदा अखबार

कई लोगों को अकेले जॉगिंग करने में बोरियत महसूस होती है इसलिए वे घर से बाहर निकलने में कतराते हैं। ऐसे लोगों की समस्या का समाधान वैज्ञानिकों ने ढूंढ़ निकाला है।

न्यूयॉर्क की एक डेवलपर कंपनी ने ऐसा गैजेट बनाया है जो दौड़ते-दौड़ते लोगों को किताब या अखबार पढ़ने की सहूलियत देगा। 'रन एंड रन' नामक यह गैजेट एक बैंड के साथ जुड़ा हुआ है जिसे माथे पर या शर्ट की कॉलर पर लगाया जा सकता है। दौड़ने के दौरान यह व्यक्ति के कंधे और माथे की गतिविधियों पर नजर रखता है। इसके बाद इसे टैबलेट या स्मार्टफोन में मौजूद 'ई-रीडर एप्लीकेशन' के साथ जोड़ा जाता है। यह व्यक्ति की आंखों की गतिविधि के अनुरूप स्क्रीन पर मौजूद कंटेंट को उछालता रहता है जिससे लोगों को मोबाइल पर पढ़ने में दिक्कत नहीं होती। मोबाइल पर किताब या ई-पेपर पढ़ने के दौरान आगे के पन्ने पलटने के लिए यूजर को डिवाइस पर टच करना होता है। एक बार में आगे का पन्ना पलट जाता है। दो बार टच करने से पीछे के पन्ने पर पहुंचा जा सकता है। इसमें रिचार्ज करने वाली बैटरी लगी हुई है जो बिजली की कम खपत में चार्ज हो जाती है। एक बार चार्ज होने पर यह 20 घंटों तक काम कर सकती है।

फिलहाल कंपनी इस गैजेट को बनाने के लिए फंड जुटा रही है। अगर योजना के मुताबिक सब ठीक रहा तो अगले साल जनवरी से यह गैजेट बाजार में आ जाएगा। इसे खरीदने के लिए लोगों को करीब 2,500 रुपये खर्च करने पड़ेंगे।

सहेज कर रखी कोशिकाएं बुढ़ापे में झुर्रियों से बचाएंगी

हर किसी को ख्वाहिश होती है कि उसकी त्वचा का जवांपन बना रहे। लेकिन वक्त के साथ इनसान के चेहरे पर झुर्रियां और महीन रेखाएं उभरने ही लगते हैं। इस समस्या का समाधान करने के लिए वैज्ञानिकों ने नायाब तरीका विकसित किया है। इसमें त्वचा की कोशिकाओं को फ्रीज कर रख लिया जाएगा जिसे स्टेम कोशिकाओं में तब्दील किया जा सकेगा। ढलती उम्र में सर्जरी की मदद से इन कोशिकाओं को दोबारा शरीर में प्रत्यारोपित किया जाएगा जिससे त्वचा का खोया जवांपन लौट आएगा।

सिंगापुर की एक कंपनी ने यह अनोखी तकनीक बनाई है। इस तरह की तकनीक ईजाद करने वाली यह दुनिया की पहली कंपनी है। कंपनी का दावा है कि त्वचा से निकाली गई कोशिकाओं को तब तक फ्रीज कर रखा जा सकता है, जब तक इनसान जीवित है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस तकनीक की मदद से जवांपन लौटाने के साथ-साथ उन लोगों की मदद भी की जा सकेगी जिनकी त्वचा दुर्घटनावश जल या कट जाती है। हालांकि उन्होंने अपनी वेबसाइट पर यह भी स्पष्ट किया है कि कोशिकाओं की मदद से जवांपन लौटाना तभी मुमकिन है जब कोशिकाएं खुद जवां हो। इसके लिए लोगों को युवावस्था ढलने से पहले ही अपनी कोशिकाओं को फ्रीज करवाना पड़ेगा।

त्वचा से निकाली गई कोशिकाओं को माइनस 180 डिग्री सेल्सियस के तापमान पर रखा जाता है। दुनिया के तीन देशों, सिंगापुर, दुबई और स्विट्जरलैंड में इन कोशिकाओं को सुरक्षित रखने के लिए लेबोरेटरी बनाई गई है। इन तीन लैब में कोशिकाएं रखी जाती हैं ताकि अगर किसी एक जगह पर रखी गई कोशिका खराब हो जाए तो दूसरी जगह की कोशिका से काम किया जा सके।

कंपनी प्रमुख डॉ. आंद्रे कोलिका बताते हैं, 'शरीर में मौजूद अन्य कोशिकाएं जहाँ वक्त के साथ बूढ़ी होने लगती हैं, वहीं फ्रीज की गई कोशिकाएं लंबे समय तक एक ही अवस्था में बनी रहती हैं। इसके लिए करीब 40 लाख रुपये खर्च करने पड़ते हैं। ❑

हमारे भामाशाह

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रुपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। प्रति वर्ष 28 जून, भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरणीय भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है।

–वरिष्ठ संपादक

बून्दी

रा.उ.मा.वि., लाखेरी को श्रीमान शाखा प्रबन्धक महोदय एस.बी.बी.जे. लाखेरी जिला बून्दी से Aquaguard Classic Water Purification 20 वाट का अनुदान स्वरूप प्राप्त लागत मूल्य 8,490 रुपये। रा.बा.उ.मा.वि., इन्द्रगढ़ को श्रीमान बाबूलाल मीणा शाखा प्रबन्धक एस.बी.बी.जे. इन्द्रगढ़ द्वारा चार छत पंखे विद्यालय को सप्रेम भेंट। सर्व श्री महावीर हरकारा, वतीश गुप्ता, स्वचन, हुकमचन्द मीणा से प्रत्येक निर्धन छात्राओं को 2-2 सलवार व 2-2 कुर्ता, श्रीमती अकीला द्वारा निर्धन छात्राओं को 5 कुर्ता व 5 चुन्नी, श्री अध्यक्ष महोदय राजस्थान पेशनर्स समाज सहकारी समिति द्वारा 3 सलवार, 3 कुर्ता, 3 चुन्नी।

हनुमानगढ़

रा.मा.वि., मानकबोड़ी को श्रीमती संतोष सहारण से एक वाटर कूलर लागत 26,000 रुपये, चौधरी रावताराम चैरिटेबल ट्रस्ट 18 S.P.D. (श्री खमाली सहारण लॉफ्टर चैम्पियन) से कम्प्यूटर मय LCD व UPS लागत 21,500 रुपये, श्री मेघराज सहारण (व.अ.) से बूफर लागत 1,750 रुपये, श्री कृष्णलाल सहारण व श्री जसवन्त सहारण द्वारा पानी की टंकी का निर्माण लागत 21,000 रुपये, कक्षा 10 के विद्यार्थियों द्वारा एक प्रधानाध्यापक मेज लागत 7000 रुपये, श्री मुखराम सहारण से एक प्रधानाध्यापक कुर्सी लागत 3,500 रुपये, श्री दलीप सिहाग से एक हजार पक्की ईंट लागत 4000 रुपये, श्री शंकर लाल से 500 पक्की ईंट व 1,100 रुपये नकद (कुल 3,100 रुपये) ग्राम पंचायत मानकबेड़ी के ग्रामवासी से विद्यालय विकास के लिए 21,000 रुपये नकद, ग्राम पंचायत मानकबेड़ी गुप्तदान 6,000 रुपये नकद, श्री सुशील सहारण विद्यालय विकास के लिए 2,100 रुपये, श्री सत्यपाल मूनिया से 2,100 रुपये, सर्व श्रीमती कृष्णा शर्मा (अ.) दिनेश कुमार मूण्ड (व.अ.), राकेश कुमार (ज.अ.), फूलचन्द (शा.शि.), ओमप्रकाश सहारण से प्रत्येक से 1,100-1,100 रुपये नकद विद्यालय विकास के लिए, सर्व श्री मुकेश बुडानिया, विनोद कुमार डाल से प्रत्येक से 1,000-1,000 रुपये नकद विद्यालय विकास के लिए। श्री कालूराम वर्मा से 4,000 रुपये नकद विद्यालय विकास के लिए, श्री ओमप्रकाश सहारण से 1,500 रुपये नकद विद्यालय विकास के लिए।

प्रतिध्वनि (...पृ. 50 का शेष)

ड्यूटी के पक्के और सेवाभावी स्वभाव के धनी। मटके धोकर साफ कपड़े के गल्ले से छानकर पानी भरते। बालू मिट्टी से रगड़कर चमकाई हुई बाल्टी में पानी भर कर ताम्बे के मांजे हुए लोटे से पानी पिलाते। राहगीरों को प्यास न हो तो भी बाबा के पास आते और अमृत सा मीठा पानी पीने को मजबूर हो जाते। अबोल प्याऊ जैसे पानी पीने का निमंत्रण देती।

आज के वैश्वीकरण के दौर में मिनरल वाटर के नाम पर मिलने वाला बोतल बंद स्वच्छ व स्वस्थ पानी खरीदकर पी सकने की क्षमता सब लोगों की नहीं है। ऐसे में राजमार्गों, बस स्टेण्ड व रेलवे स्टेशनों पर बनी प्याऊ की याद आती है। बहरहाल बात मेरे गाँव के प्याऊ पर पानी पिलाने वाले बाबा की है। उनका घर मेरे घर के पास था और प्याऊ डेढ़-दो किलोमीटर दूर। उन बाबा की वृद्धा पत्नी रोटी बनाकर उनका भाता (जिसे हम टिफिन कहते हैं) तैयार करती और दौड़ी-दौड़ी जाकर उन्हें पहुंचाकर आती। कभी उनके घर में कोई अड़ी का काम होने पर भाता पहुंचाने के लिए हम बच्चों की तरफ देखती। मुझे याद है बल्कि सच तो यह है कि कानों में गूँज रहे हैं माँ के शब्द। माँ कहती, 'जा, दादाजी को भाता पहुंचा आ। आंगलिए फुन हो जाएगा।' इसका अर्थ अब समझ में आता है। प्याऊ पर रोटी का आतुरता से इंतजार कर रहे दादा हमें आता देख कर कितने खुश होते होंगे और कितने आशीर्वचन उनकी आत्मा हमें देती होगी, का अन्दाजा आप लगा सकते हैं। यह है आंगलिए फुन का प्रताप। प्याऊ परिसर में कई पेड़ दादाजी ने लगाए थे। उनमें एक बेटी भी थी। वे उस बेटी से झड़े बेर इकट्ठे करके रखते और बच्चों को देते। मुझे आज भी उनके द्वारा दिए गए बेरियों का स्वाद याद है। अब किसके पास समय है ऐसा आत्मीय स्नेह देने के लिए।

बस स्टेण्ड व रेलवे स्टेशन पर होने वाली 'जल सेवा' का रोमांच आप स्मरण करें। सन् 1980 में नौकरी लगने पर मेरी पोस्टिंग राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, आमरा जिला श्रीगंगानगर (अब हनुमानगढ़) में हुई थी। वहां स्काउट मास्टर थे आदरणीय नन्दलाल जी। कद के ठिगने मगर व्यवहार में गहरे तथा सेवा कार्यों में पहाड़ की तरह विशाल व अडिग। स्थानीय सेवादारों एवं भामाशाहों के सहयोग से रेलवे स्टेशन पर गर्मियों में जल सेवा करते। बालचरों की फौज थी मास्टर नन्दलाल जी के पास। उनके एक हेले पर हाजिर हो जाते। साफ-सुथरे बोलों में निर्मल जल, उसमें बर्फ के साथ सुगन्धित मिश्रण। गाड़ी आती तो बीसों सेवादार बाल्टियाँ हाथ में लेकर डिब्बे-डिब्बे दस्तक देते और यात्रियों की जल सेवा करते। लोटों के साथ बच्चों के लिए गिलासें होतीं। ऐसे मनुहार करते जैसे घर में बेटी की बारात आई हो। यात्रियों के पास रही पानी की केतली आदि प्रसन्नता पूर्वक भरते। स्टेशन पर जल सेवा करने आने वालों में कस्बे के करोड़पति सेठ भी होते थे। दौड़-दौड़ कर जल सेवा करते। इस युग में जेब में पैसा नहीं हो तो प्यासा ही रहना पड़ता है। मास्टर नन्दलाल जी अब नहीं है। मगर अपनी स्काउट आन्दोलन को दी गई सेवाओं के दम अमर रहेंगे। मैं उनकी पावन स्मृति को विनम्र प्रणाम करता हूं। उनके साथ रहने का मुझे गर्व है।

नैतिक शिक्षा कार्यक्रम की भावना को समझ कर समाज में आदर्शों की स्थापना के मंगल उद्देश्य से इसकी क्रियान्विति विद्यालय प्रशासन एवं शिक्षकों को करनी है। शिक्षक के रूप में यह हमारा कर्तव्य ही नहीं, दायित्व भी है।

–ओमप्रकाश सारस्वत, व.सं.
opsaraswat56@gmail.com

प्रतिध्वनि

परहित सरिस धर्म नहीं भाई

पिछले महीने गाँधी जयन्ती (2 अक्टूबर 2013) से विभाग ने एक पहल करते हुए विद्यार्थियों के लिए नैतिक शिक्षा कार्यक्रम की शुरूआत की है। यह अपने आप में बहुत शुभ है। आज के इस घोर आपाधापी के युग में संयम, शिष्टाचार, नैतिकता, आदर्श जैसे कहने-सुनने को ही रह गए हैं। व्यक्तियों की अवसरवादिता सिर चढ़कर बोल रही है। सम्बन्धों की पवित्रता न जाने किधर पलायन कर गई है। नैतिकता व आदर्श की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले अवसर मिलने पर कैसे फिसल जाते हैं, के उदाहरण आए दिन हम समाचार पत्रों में देखते हैं। शीर्ष न्यायालय तक न्याय के लिए गुहार लगाने की व्यवस्था तथा सुनवाई-दर-सुनवाई में लगने वाले प्रक्रियागत समय के कारण निर्णय आने तक बहुत विलम्ब हो गया होता है। संयम के अभाव में दुष्कर्म जैसे युग कर्म बन रहा है। मीडिया द्वारा प्रदत्त जानकारी से आम-आवाम के मन में घटित घटनाओं एवं प्रकृटित नामों को ले कर जो घृणा पैदा होती है, उसका प्रभाव व्यक्ति व समाज के जीवन पर कैसा पड़ता होगा, पर विचार करने की आवश्यकता है। ऐसी ही भावभूमि में विभागीय नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का तानाबाना रचा गया है।

भारतीय संस्कृति में जिन तीन बातों पर जोर दिया गया है, वे हैं- 'सत्यं वद धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद' इसमें धर्म पर चलने की बात का आशय उस रास्ते पर चलना है जो नैतिकता एवं आदर्श को लिए है। इसमें 'करणीय' व 'अकरणीय' दोनों प्रकार के कार्यों को परिभाषित किया गया है अर्थात धर्म पर चलने वाला उसे माना जाएगा जो अमुक काम करें और अमुक काम नहीं करें। श्रुति में धर्म को स्पष्ट करते हुए कहा गया है-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

यह श्लोक अपने आप में सारा जीवन दर्शन लिए हुए है। धृति (धैर्य रखना), क्षमा (किसी के द्वारा कोई गलती हो जाने पर माफ कर सकना), दम (मन का निग्रह), अस्तेय (चोरी नहीं करना), शौच (भीतर बाहर की शुद्धि), इन्द्रिय (निग्रह इच्छा का दमन), धी (बुद्धि), विद्या, सत्य (यथार्थ और प्रिय भाषण) और अक्रोध। जो व्यक्ति इन दस उपायों को करता है, उन पर चलता है, उसे शोक-बाधा कभी घेर नहीं सकते। उसे सब अपने लगते हैं तथा वह सबको प्रिय लगता है। उसके मन में दया, करुणा, परोपकार के उत्तम भाव सहज ही में घर कर जाते हैं। अपने कर्म में तल्लीन व मस्त रह कर जीवनयापन करने वाले उस पुरुष की स्थिति 'योगः कर्मसु कौशलम्' (श्रीमद्भगवद्गीता 2/50) वाली बन जाती है। अतः शिक्षा के द्वारा हमें बच्चों के मन में दया के भाव जगाने चाहिए। बड़ों के प्रति आदर-सम्मान और जीव मात्र के प्रति करुणा के उत्तम भाव जगने पर व्यक्ति को सहज ज्ञान से साक्षात्कार हो जाता है तथा उसके मन-वचन कर्म से कोई अप्रिय व अकरणीय कार्य नहीं होता।

प्रसिद्ध विचारक रूसो ने कहा है-The only lesson which is suited for a child- the most important lesson for everytime of life is this-NEVER HURT ANYBODY. इस मत को मानने वाले इस प्रयास में रहते हैं कि उनसे प्राणी मात्र, किसी का भी बुरा नहीं हो जाए तथा अपने जीवन का ढर्रा इसी मुजब रचते हैं। इस दैविक विचारधारा के व्यक्तियों का कहना होता है, 'सावधान यह जिन्दगी बेकार न हो जाए, सपने में भी किसी जीवन का अपकार न हो जाए।' भारतीय चिन्तनधारा में सबके मंगल-सबके हित की बात उद्घोषपूर्वक कही गई है। सब सुखी हो, सब नीरोग हो और किसी को किसी प्रकार का दुःख-क्लेश न हो, यह भारत का आदर्श रहा है। ऋषियों ने कहा है-

सर्वे भवन्तु सुखिन सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःख भाग भवेत।।

इसी बात को गोस्वामी तुलसीदासजी ने इस प्रकार कहा है-

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।।
परहित बस जिन के मन माहीं।
ताके जग कछु दुर्लभ नाही।।

महर्षि वेदव्यास जब सारे ग्रंथ-वेद, पुराण लिख चुके तब किसी ने उनका सार केवल एक श्लोक में बताने के लिए उनसे कहा। व्यासजी ने मर्म की अद्भुत बात एक ही श्लोक में रखते हुए अपना निर्णय दिया-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीड़नम्।

(अर्थात अठारह पुराणें की रचना करने के बाद उनका यह मत है कि दूसरों का उपकार करना पुण्य है तथा किसी को आहत करना पाप है।)

सेवा एवं परोपकार के लिए कोई विशेष अवसर ढूंढने या कि देने के लिए कोई सामग्री जुटा सकने की क्षमता अर्जित होने तक इन्तजार करना जरूरी नहीं है। सेवा तो हमारे संस्कारों में समाहित है। सेवा तो कदम-कदम पर उपलब्ध है। हम सेवा करने का उत्तम भाव तो बनाएं। देने को टुकड़ा भला-लेने को हरि नाम' में छिपा संदेश स्पष्ट है। यदि हम सड़क पर पड़े पत्थर के टुकड़े को उठाकर किनारे डाल देते हैं, तो एक दुर्घटना के कारण का निराकरण कर देते हैं। सड़क पर पड़ा पत्थर का टुकड़ा किसी की मृत्यु का कारण बन सकता है। अतः उस टुकड़े को उठाकर ठिकानेसर रखने का काम बड़ी सेवा है। इसमें तो कुछ देने या जुटाने का काम है भी नहीं, मगर सेवा से कम नहीं है। ऐसी सेवाएं तो कदम कदम पर मिल सकती है, बात केवल दर्शन एवं संकल्प की है।

हमारे यहाँ 'आंगलिए पुन्न' की अवधारणा रही है। मेरी स्वर्गीया माँ इसकी अक्सर चर्चा करती और हमें ऐसे अवसर से लाभ उठाने की शिक्षा देती थी। 'आंगलिए पुन्न' में व्यक्ति अपनी जेब से कुछ नहीं देता। बस अपने शरीर से कोई काम कर देता है। बचपन में हमने ऐसे कई दृष्टान्त देखे बल्कि कुछेक तो हमारे साथ घटित भी हुए। हमारे घर से कोई डेढ़ दो किलोमीटर दूर स्थित राजमार्ग पर एक प्याऊ थी। वहां हमारे घर-पड़ौसी एक वृद्ध पानी पिलाने का काम करते थे। उनका नाम था पोकरराम जी।

(शेष पृ. 49 पर...)

शिविरा पत्रिका मासिक/नवम्बर 2013 अंक/प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा द्वारा डिपार्टमेन्ट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेन्ट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर-334011 से प्रकाशित एवं हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान

नैतिक शिक्षा कार्यक्रम

ऊपर पहला चित्र : 'नया शिक्षक' त्रैमासिक पत्रिका के 'नैतिक शिक्षा विशेषांक' का लोकार्पण गाँधी जयंती 2 अक्टूबर, 2013 को राज. महारानी बालिका उच्च माध्य. विद्यालय कनीपार्क, जयपुर में आयोजित समारोह में शिक्षा सचिव, श्री प्रवीण गुप्ता एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. मीना प्रधान ने किया।

ऊपर दायीं ओर दूसरा चित्र : राज.जैन गुरुकुल उ.मा. विद्यालय, ब्यावर (अजमेर) में दिनांक 10 अक्टूबर 2013 को नैतिक शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर नैतिक शिक्षा विषयों से संबंधित होर्डिंग का लोकार्पण माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. मीना प्रधान ने किया।

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह 2013

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

रणकपुर मंदिर, सादड़ी (पाली)

पाली जिले के सादड़ी कस्बे से दस किलोमीटर दूर जोधपुर-उदयपुर सड़क मार्ग पर मघाई नदी के किनारे रणकपुर मंदिर है। मंदिर का निर्माण राणा कुम्भा के शासन काल में हुआ था। रणकपुर में भगवान आदिनाथ का भव्य त्रैलोक्य मंदिर बना हुआ है। यह मंदिर त्रिभाग चतुरस्र पर 48 हजार वर्ग फीट क्षेत्रफल को घेरे है। मंदिर में चार कोण कुलिकाएं तथा मूल देव कुलिका को मिलाकर पांच शिखर हैं जिसमें 148 भू-कक्ष हैं। उत्कृष्ट कला व विविधता लिए 24 मण्डपों की सुव्यवस्थित 1444 स्तम्भों पर स्थित चार स्थिरद्वारों तथा 34 देव कुलिकाओं के स्थान हैं। मंदिर के रंग मण्डप की छत पर वीणा बांसुरी बजाते, घुंघरू बजाती नृत्य करती आठ पुतलियों व कीचक आकृतियों की प्रतिमाएं उत्कृष्ट हैं। मंदिर का निर्माण वि.सं. 1456 से 1496 तक पूरा हुआ। दीवान धरणाशाह ने मंदिर निर्माण करवाया था रणकपुर परिसर में आदिनाथ मंदिर के अलावा पार्श्वनाथ व नेमीनाथ के मंदिर भी बने हुए हैं। पार्श्वनाथ मंदिर की शिल्पकला खजुराहो व कोणार्क के मंदिर से मिलती जुलती है।

सौजन्य : भरत शर्मा 'भारत', अध्यापक, श्री खेतानी भन्नाची, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, दादाई (पाली)